दुनिया के सर्वहारा तथा तमाम
मेहनतकश जनता और उत्पीड़ित
राष्ट्रीयताओं की जनता एक हो!

लाल चिनगारी

वर्ष–13 अंक–32 जनवरी–मार्च 2017

मुखपत्र

बिहार–झारखण्ड
स्पेशल एरिया कमेटी

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी
(माओवादी)

लाल चिनगारी सम्पादकमंडल के नाम एक पीएलजीए महिला कामरेड का पत्र।

प्रिय सम्पादकमंडल, लाल चिनगारी

मैंने कुछ पंक्तियों में महिलाओं की स्थिति पर प्रकाश डाली हूं, उम्मीद है आप उसे प्रकाशित करेंगे :

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर दिन-प्रतिदिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एक तरफ 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का राग अलाप रहे हैं और दूसरी तरफ हजारों-लाखों बेटियां बलात्कार की शिकार हो रही हैं, बलात्कार के अधिकांश मामलों में देश की रखवाली करने का दंभ भरने वाले पुलिस, मिलिट्री और पारा मिलिट्री के जवानों की संलिप्तता सामने आ रही है। ऐसे में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का ढोल पीटना बेमानी है। छत्तीसगढ़ के दंडकारण्य सहित देश के अन्य हिस्सों में अनगिनत बेटियों की पुलिस, अर्द्धसैनिक बल और सेना के द्वारा बलात्कार करके हत्या कर दी गयी है और आज भी की जा रही है, क्या वे इस देश की बेटियां नहीं हैं? क्या उन बेटियों को बचाने की जरूरत नहीं है?

इतना ही नहीं दहेज-हत्या, भ्रूण-हत्या और डायन-भूत के नाम पर बेटियों व महिलाओं की हत्या की खबर भी आए दिन अखबारों व पत्र-पत्रिकाओं में खूब देखने को मिलती है। साथ ही साथ बेरोजगारी के कारण देश की अनेक बेटियां आज अपने जीवन-यापन के लिए वेश्यावृत्ति का धंधा करने पर विवश हैं। अलावे रोजगार दिलाने के नाम पर अनगिनत बेटियों को बेच दिया जाता है, ऐसे में जिंदगी भर दासी-जीवन बिताने को बाध्य हो जाते हैं। स्कूल, कॉलेज व विश्वविद्यालयों में भी छात्राओं के साथ बलात्कार व छेड़खानी की घटनाओं में दिन-प्रतिदिन बढ़ोत्तरी हो रही है। क्या नरेन्द्र मोदी सरकार इन सब तथ्यों से अंजान हैं?

आज हमारे देश में अर्द्ध-सामंती व अर्द्ध-औपनिवेशिक शासन-व्यवस्था है। संस्कृति भी उसका ही गुणगान करने वाली है। इसलिए, इस समाज में महिलाओं की मुक्ति के संघर्षों का समर्थन यह व्यवस्था नहीं कर सकती है। यदि करती भी है तो वह मात्र दिखावे के लिए और उसका मूल लक्ष्य होता है इस व्यवस्था को टिकाए रखना, यानी पितृसत्ता को बनाए रखना। साथ ही साथ हर क्षेत्र में निजीकरण का दायरा बढ़ते जा रहा है। अर्थात् कल-कारखाना व खदानों के साथ-साथ शिक्षा, चिकित्सा संस्थान आदि को भी दलाल पूंजीपतियों व कारपोरेट घरानों के हाथों में सौंप दिया जा रहा है। इसके पीछे साजिश यह है कि गरीब और निम्न-मध्यम वर्गीय लोगों, जिनकी कुल आबादी इस देश में 70 प्रतिशत है, को उच्च शिक्षा से दूर कर दिया जाय और फिर से इन्हें गुलाम बना लिया जाय। आज उच्च शिक्षा प्राप्त करना, गरीब तो क्या, मध्यम वर्गीय परिवारों के लिए भी मुश्किल होती जा रही है। आज आलम ये है कि यदि कोई व्यक्ति ग्रेजुएशन करना चाहता हो तो उसे लाखों रुपये खर्च करना पड़ेगा। ऐसे में जो खाने के लिए आज दाने-दाने के लिए मोहताज हो, उसके लिए इस निजीकरण के दौर में उच्च शिक्षा प्राप्त करना नामुमकिन है। साथ ही वर्तमान समाज पितृसत्तात्मक समाज-व्यवस्था है। ऐसे में लाखों रुपये खर्च कर बेटियों को कोई गरीब व निम्न-मध्यम वर्गीय परिवार पढ़ा पाएगा?

इस साम्राज्यवादी युग में मोटर, कार, मोबाइल, कम्प्युटर, कपड़ा, शैम्पू, साबुन, तेल इत्यादि को बेचने खातिर ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए आज औरतों के शरीर व अर्द्ध-नग्न तस्वीरों का इस्तेमाल करने का तरीका अपनाया जा रहा है। साथ ही इस युग में ही महिलाओं को ही ज्यादा शोषण व अत्याचार झेलना पड़ रहा है। फिल्म, टी.वी. सिरीयल व विज्ञापनों में भी महिलाओं को लगभग नग्न अवस्था में प्रदर्शित की जा रही है और महिलाओं को मात्र भोग की वस्तु के रुप में पेश की जा रही है।

आज हमारा मुख्य दुश्मन साम्राज्यवाद व सामंतवाद के रूढ़ीवादी नीतियों के आधार पर चलने वाली तथाकथित लोकतांत्रिक व्यवस्था है। इसलिए, अगर नारियां सचमुच में अपने ऊपर होने वाले शोषण-जुल्म और अत्याचार से अपने आप को मुक्त कर अपना अधिकार हासिल करना चाहती हैं, तो उन्हें अवश्य ही मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद के नेतृत्व में जारी हथियारबंद वर्ग-संघर्ष में कूद पड़ना होगा और वर्ग समाज का उन्मूलन कर एक वर्गविहिन समाज का निर्माण करना होगा, तभी नारियों के ऊपर होने वाले शोषण-जुल्म और अत्याचार का खात्मा किया जा सकता है। क्योंकि वर्ग समाज का उदय होते ही नारियां पुरुष सत्ता के अधीन आ गयीं। इसलिए जब तक इस धरती पर वर्ग समाज कायम है, तब तक नारियां अपने ऊपर होने वाले शोषण-जुल्म और अत्याचार से अपने आपको मुक्त नहीं कर सकती हैं।

क्रांतिकारी अभिवादन के साथ

कामरेड संध्या

लाल चिनगारी

वर्ष- 13 अंक: 32
जनवरी - मार्च 2017

विषय सूचीः

1. सम्पादकीय 1
2. ऐ लाल फरेरे तेरी कसम 8
3. महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के 50 वर्ष 19
4. अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष लेख 32
5. शहीद-ए-आजम भगत सिंह के शहादत दिवस पर विशेष लेख 37
6. सुरक्षाबलों द्वारा बस्तर में सामूहिक बलात्कार 39
7. नोटबंदी का राजनीतिक अर्थशास्त्र.... 43
8. दो कहानियां 49
9. कविताएं 55
10. प्रेस विज्ञप्तियां व पर्चे 60
11. पीएलजीए की महत्वपूर्ण कार्रवाइयों की रिपोर्ट 69

सहयोग राशि - 20 रूपये

सम्पादकीय

पार्टी की 12वीं वर्षगांठ पर इआरबी सचिव का वक्तव्य

(21 सितंबर, 2016 को हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के इआरबी सचिव ने एक छापामार क्षेत्र में पार्टी की 12वीं वर्षगांठ पर आयोजित समारोह में अपना वक्तव्य दिया था। उनके वक्तव्य के महत्व को देखते हुए उसे रिकॉर्ड कर एक लेख के रूप में यहां संपादकीय के बदले इसे ही प्रकाशित किया जा रहा है। -संपादकमंडल, लाल चिनगारी)

कामरेड्स,

पार्टी के 12वीं वर्षगांठ पर आज हमारे जितने भी कामरेड्स उपस्थित हैं, सभी को मेरा तहे दिल से क्रांतिकारी अभिनंदन और तहे दिल से गर्मजोशी भरा लाल सलाम!

हमारे पार्टी के महान नेता, संस्थापक, सिद्धांतकार, राहप्रदर्शक कामरेड चारू मजुमदार और कामरेड कन्हाई चटर्जी पर हमें गर्व है, उन्हें श्रद्धा के साथ हम याद करते हैं व उनके द्वारा सूत्रबद्ध किया हुआ जो भारतीय क्रांति की लाइन है, कार्यनीति है, कार्यशैली है, उसको भारत की धरती पर उसकी विशेषता के साथ तालमेल बैठाकर के उसको अंत तक कार्यान्वित करने का संकल्प लेता हूं। उन दोनों के साथ-साथ जितने भी हमारे साथी शहीद हुए हैं, उन सभी को मेरा लाल सलाम!

आज 21 सितम्बर, 2016 है और आज के ही दिन 2004 में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की स्थापना हुई थी, इसलिए आज के दिन हमलोग पूरे देश में इसे पूरे जोश-खरोश के साथ मनाते हैं। आप जितने साथी यहां उपस्थित हैं, इसमें बहुत ज्यादा नए साथी हैं। जिन्हें पार्टी के पुराने इतिहास, उसके कुछ विशेष पहलू व विशेष ऐतिहासिक पहलू के बारे में जानकारी नहीं है। उन्हें अभी की समस्या को समझने के लिए इसकी जानकारी रखना बहुत जरूरी है। 21 सितम्बर, 2004 को हमलोगों ने दो पार्टी को ऐतिहासिक विलय प्रक्रिया के जरिये भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) का गठन किये और उसके दो साल बाद 9वीं कांग्रेस-एकता कांग्रेस संपन्न किये। उसी समय कई दस्तावेज हमलोग पारित किये हैं, जिस पर अभी आपलोगों का क्लास चल रहा है, जिसमें पार्टी कार्यक्रम, पार्टी संविधान, रणनीति व कार्यनीति, मालेमा, राजनीतिक प्रस्ताव आदि है। उसी समय दोनों पार्टी के इतिहास से जुड़े हुए पुराने इतिहास का एक संकलन भी कांग्रेस द्वारा पारित हुआ। जिन दो पार्टियों के विलय के जरिये भाकपा (माओवादी) का उदय हुआ, वह है सीपीआई (एमएल) पी डब्ल्यू, जिसे एमएल धारा के नाम से बोलते हैं और भारत के माओवादी कम्युनिस्ट केन्द्र, जिसे एमसीसी धारा के नाम से बोलते हैं। इन दो धाराओं के मिलन से एक ऐतिहासिक धारा का

जन्म हुआ, जिसके सांगठनिक स्वरूप के रूप में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) हुआ।

भाकपा (माओवादी) के स्थापना के बाद पिछले 12 साल के इतिहास में क्या वह ऐतिहासिक पहलू है? उसके आधार पर आज हमलोग कहां पहुंचे? फिर कल हमलोगों को कहां जाना है? कैसे जाना है? मैं इन्हीं बुनियादी बातों को संक्षिप्त व सरल में रखने की कोशिश करूंगा। आप अगर हमारे पुराने दस्तावेज, नए पार्टी गठन के समय का प्रेस विज्ञप्ति, लेख वगैरह पढ़ेंगे, तो देखेंगे कि दो धाराओं के मिलन से एक महाधारा और एक ऐतिहासिक विलय प्रक्रिया के जरिये भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) का गठन हुआ। ऐतिहासिक शब्द का उल्लेख हमलोग क्यों किये? उसके लम्बे व्याख्या-विश्लेषण में मैं नहीं जाउंगा। इतना समझ लो कि भारत की कम्युनिस्ट पार्टी का गठन देश के बाहर 1921 में हुआ और देश के अंदर 1925 में। अपनी स्थापना के 25 साल बाद से लेकर 1967 के ऐतिहासिक नक्सलबाड़ी विद्रोह तक सिर्फ व सिर्फ चुनाव में ही उलझा रहा। मुक्ति का जो असली रास्ता, सशस्त्र संघर्ष का रास्ता व सत्ता कब्जा करने का रास्ता, उससे बिल्कुल अलग-थलग होकर चुनावी दलदल में फंसते हुए लगातार चुनाव में हिस्सा लेते हुए आज वो चरम क्रांति विरोधी सामाजिक फासीवादी की भूमिका निभा रहा है, जिसको हमलोग सीपीएम, सीपीआई आदि नाम से जानते हैं। इसको संशोधनवादी लाइन वाले भी बोलते हैं। हमलोग 1967 के ऐतिहासिक नक्सलबाड़ी विद्रोह द्वारा बुनियादी रूप से इस संशोधनवादी लाइन से पिंड छुड़ाए। नक्सलबाड़ी विद्रोह द्वारा ही वोट लाइन वाले और सशस्त्र संघर्ष लाइन वाले अलग हुए, जो आप सभी को याद रखना चाहिए। सशस्त्र संघर्ष में जाने वाले, दीर्घकालीन जनयुद्ध के रास्ते पर जाने वाले ही सही मायने में नवजनवादी क्रांति के जरिये 90 प्रतिशत जनता का राज बनाने के मार्ग पर आगे बढ़े। उसी धारा के सीपीआई (एमएल) पी डब्ल्यू भी थे और उसी धारा के एमसीसीआई भी। पहले इन दो धाराओं के बहुत दिनों तक अलग-अलग रहने से शक्ति बहुत कम थी। दुश्मन का आक्रमण बहुत तेज था। जब से हथियारबंद क्रांति की शुरुआत हुई, मतलब जब हम मौजूदा सत्ता के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर के नयी सत्ता, जनता की सत्ता, जनता का राज बनाने के लिए सचमुच में जमीन पर गए, जनता को संगठित किए, जनता को हथियारबंद किए और विभिन्न तरह की लड़ाई को सत्ता दखल की लड़ाई से जोड़े हैं, उसी समय से इसके खतरे क्या है? यह जानकर, भारत के शोषक-शासक वर्ग और विदेशों में बैठे हुए इनके साम्राज्यवादी प्रभु लोग उसी समय से इसको नाश करने के लिए ताकि फिर से दुनिया में क्रांतिकारी आंदोलन आगे बढ़ते हुए पूंजीवाद को जड़ से न मिटा दे, इसके लिए साम्राज्यवादियों ने अपने दलाल भारत सरकार के जरिये दमन अभियान शुरु करवा दिया। पहले इन दोनों धाराओं के बीच भी बहुत तनाव आए, बहुत कुछ हुआ। दुश्मन के साजिश के तहत इन दोनों के बीच में मारकाट भी चले, यही दुश्मन गुट के लोग चाह रहे थे। पर ठीक इसके विपरीत 21 सितम्बर, 2004 को, जो नहीं चाहता था कि विनाश हो और क्रांति का फायदा हो, वो आगे आए और दो पार्टी के विलय प्रक्रिया के जरिये एक ऐतिहासिक पार्टी के रूप में भाकपा (माओवादी) का जन्म हुआ और उसी पार्टी की धारावाहिकता में आज हमलोग 12वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। वहीं नक्सलबाड़ी धारा का एक हिस्सा सशस्त्र संघर्ष से अलग-थलग होकर चुनाव में चले गये, जैसे सीपीआई (एमएल) लिबरेशन आदि।

इसका ऐतिहासिक मतलब ये होता है कि दो पार्टी के विलय के बाद हम एक बड़ी शक्ति के रूप में आ गए हैं, तो हर तरह से शक्ति में वृद्धि हुई। पार्टी 16-17 राज्यों में आगे बढ़ गई। पीएलजीए का गठन हुआ, पीएलजीए की ताकत बढ़ने लगी। विभिन्न तरह का हमारा संयुक्त मोर्चा, क्रांतिकारी जन कमेटी, विभिन्न तरह का जन संगठन, रणनीतिक संयुक्त मोर्चा, कार्यनीतिक संयुक्त मोर्चा और भारत की तमाम जनता के अंदर में इसका बहुत बड़ा सकारात्मक प्रभाव पड़ा। जनता ने भी महसूस किया कि ऐसी पार्टी हमारे सामने नेतृत्व में आई है, जिस पर भरोसा करके हम अपनी मुक्ति के लिए उसके साथ मिल सकते हैं। इसलिए भारत के विशाल इलाके में भाकपा (माओवादी) का प्रभाव बढ़ने लगा, चाहे पूर्वोत्तर भारत हो, चाहे उत्तर भारत हो, मध्य भारत हो, दक्षिण भारत हो यानी चारों ओर। 16-17 राज्यों में हमारी राज्य कमेटी की भी स्थापना हुई। केवल स्थापना ही नहीं, सभी जगह स्ट्रैटजिक (रणनीतिक) लाइन तय हुई - दीर्घकालीन जनयुद्ध के जरिये पीएलजीए और आधार क्षेत्र बनाना। एक-एक विशाल देहाती क्षेत्र में जहां हमारा आधार क्षेत्र बन सकता है, पीएलजीए बन सकता है, उस क्षेत्र में बहुत से साथी पेशेवर होकर के जनता के बीच में काम करने लगे। संघर्ष आगे बढ़ने लगा। विशाल-विशाल शानदार संघर्ष हुए, जो पहले के जमाने में कभी नहीं हुए थे। इस मायने में भाकपा (माओवादी) का गठन, पिछले अनेकों साल से जो कम्युनिस्ट आंदोलन की धारा भारत में चल रही है, उसमें गुणात्मक छलांग को दिखलाते हैं। इस मायने में यह ऐतिहासिक है, इसलिए इस पहलू को आप याद रखिए। लेकिन यह भी मत भूलिए कि पिछले 12 साल में हम बहुत ही उतार-चढ़ाव के दौर से गुजरे हैं। उतार-चढ़ाव मतलब संघर्ष में कभी पीछे हटे हैं, संघर्ष कभी चोटी पर पहुंचा है, फिर पीछे हटे हैं, लेकिन फिर आगे बढ़ रहे हैं। इसी प्रक्रिया से गुजरते हुए ही आज हम

12वीं वर्षगांठ मना रहे हैं।

2013 में हमारे केन्द्रीय कमेटी की चौथी बैठक में देश में हमारे पूरे संघर्ष का मूल्यांकन किया गया कि हम बहुत कठिन दौर के अंदर से गुजर रहे हैं। कुछ क्षेत्रों में हम सैट बैक का शिकार हुए, यह एक पहलू है। दूसरा पहलू यह है कि फिर भी हम यहां तक आगे बढ़े हैं, हम खत्म नहीं हुए हैं, हमारे जड़ को खत्म करने के लिए दुश्मन कितना भी 'घेरा डालो, विनाश करो' का अभियान चलाया है, लेकिन उखाड़ फेंक नहीं पाया है। ये बहुत ही सकारात्मक है। इसलिए ऐसी क्रांति की प्रक्रिया में जहां जान लेने-देने का खेल होता है, जहां आपका बलिदान हर क्षण एक वास्तविक सवाल के रूप में खड़ा होता है। ऐसे एक प्रक्रिया के दौर में हम 12 साल गुजारे हैं, जिसमें नक्सलबाड़ी से लेकर अब तक 15000 और नयी पार्टी के गठन से लेकर अब तक 3000 कामरेड्स, केन्द्रीय कमेटी से लेकर सेल सदस्य तक के कामरेड्स, पीएलजीए के कामरेड्स, सभी जन संगठन के कामरेड्स, गांव के कामरेड्स, जन मिलिशिया के कामरेड्स आदि शहीद हुए हैं। इसलिए शहीदों की संख्या और संघर्षों की उपलब्धियों को आपको मिलाना होगा, मतलब शहादत भी हुई और उपलब्धि भी हुई। बिना शहादतों के उपलब्धियां नहीं आती व बिना कुर्बानी के क्रांति सफल नहीं होती। अगर हम कुर्बानी देना नहीं चाहते हैं, तो उपलब्धियां भी नहीं पा सकते। हमारी शक्ति यानी आपकी शक्ति जरूर कम हुई है, हम पीछे हटे हैं, सैट बैक में हैं, पर यह अंत नहीं है। पूर्ण विराम नहीं हो गए हैं। उतार के बाद चढ़ाव आता है। जहां तक इआरबी का सवाल है, बीजे सैक का सवाल है, हम यहां पर एक अच्छी खासी नुकसान के दौर में चलते हुए पीछे हटे हैं। अब हमें पीछे हटने की प्रक्रिया को विपरीत दिशा में घुमाने की प्रक्रिया लेने के लिए मतलब पीछे हटते-हटते आगे बढ़ने के लिए प्रयास करना है। 2013 में केन्द्रीय कमेटी की चौथी बैठक में हमलोग जो मूल्यांकन किए हैं और जो कमी ढूंढ़कर निकाले हैं। अब हमारा काम है, उससे उभारकर संघर्ष को पुनः न केवल पहले के स्थान पर पहुंचाना बल्कि उससे भी आगे ले जाना। छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में बदल डालो। छापामार क्षेत्र को आधार क्षेत्र में बदल डालो। उसके साथ ही कांग्रेस का जो लक्ष्य है केवल नारा ही नहीं, बीजे-डीके को एक करो और उसके बीच में जो ओड़ीसा के विशाल जंगल-पहाड़ आते हैं, में संगठन बनाकर पीएलजीए को पीएलए में और आधार क्षेत्र बनाने की प्रक्रिया में तेजी लाओ। पार्टी का बोल्शेवीकरण करो। पार्टी के अंदर में जो गलत रूझान है, गलत कार्यशैली है, उसे उखाड़ फेंको। अभी हमारे सामने यही कर्त्तव्य है, इसे याद रखो। ऐतिहासिक कम्युनिस्ट आंदोलन की विरासत, जो मार्क्स-एंगेल्स से लेकर लेनिन से होते हुए, स्तालिन से होते हुए, माओ से होते हुए हमलोगों के कंधे पर है। नक्सलबाड़ी की विरासत के सच्चे प्रतिनिधि के रूप में आज हम काम कर रहे हैं, क्रांति के लिए काम कर रहे हैं, 90 प्रतिशत जनता के लिए काम कर रहे हैं, मजदूरों, किसानों, मेहनतकश महिलाओं आदि के लिए काम कर रहे हैं, इस बात को भी आप कभी मत भूलो। आप भाकपा (माओवादी) के सदस्य हैं, जिसके उपर क्रांति का अगला दौर निर्भर कर रहा है। आपको इस बात को भली-भांति समझने की जरूरत है।

भाकपा (माओवादी) के गठन के बाद ही भारत के पैमाने पर सही मायने में मुक्ति संघर्ष हो रहा है। जो काम भारत के इतिहास में कम्युनिस्ट पार्टी ने कभी नहीं किया, वही काम भाकपा (माओवादी) कर रही है और यह काम करते हुए बहुत सी कुर्बानी देकर भी हम आपसे यहां बैठकर कह रहे हैं कि अगले दौर में हमको और आगे बढ़ना पड़ेगा। हां, हमारा कुछ नुकसान हुआ है, कुछ ज्यादा ही नुकसान हुआ, फिर भी उन नुकसानों की भरपाई हम कर सकते हैं। इस धरती से ही मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्तालिन, माओ पैदा हुए हैं, इस धरती से ही हमारे केन्द्रीय कमेटी के कामरेड्स पैदा हुए, इस धरती से ही जितने शहीदों का आपलोग नाम लिए हैं, चाहे बीजे के हों, डीके के हों, ओड़ीसा के हों, बंगाल के हों, वो कोई आसमान से टपक कर नहीं आए, आपलोगों के जैसे ही गांवों-शहरों के मेहनतकश घरों के संतान थे। वही लोग आगे बढ़ते हुए भाकपा (माओवादी) के नेतृत्व में आए। आज आपलोग कम उम्र के हो, कल आपलोग के नेतृत्व में ही भारत का कम्युनिस्ट आंदोलन अंतिम विजय हासिल करेगा। इसलिए आपके कंधों पर ऐतिहासिक विरासत का जिम्मा है। इसे कभी मत भूलो। दूसरी बात याद रखो कि कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्वकारी भी जनता के साथ रहते हैं व युद्ध विज्ञान को समझने के लिए व्यावहारिक जगह में जाते हैं और उस संघर्ष में अपने जान की कुर्बानी भी देते हैं, इसलिए जान की कुर्बानी देने में हिचकिचाहट मत करो। अगर भाकपा (माओवादी) का इतिहास देखोगे, तो क्रांतिकारी संघर्ष में महिलाओं का ऐतिहासिक आत्मबलिदान देखने की मिलेगा। हमारी पार्टी में जितने शानदार भूमिका के साथ महिलाएं विभिन्न स्तर में आई, पार्टी से लेकर पीएलजीए व जन संगठनों में भी, वह भी बहुत ही याद रखने वाली बात है और आप सबों को मैं उनकी विशिष्टताओं को याद रखने के लिए कहूंगा तथा वैसे ही उसका व्यावहारिक रूप में अनुसरण करने के लिए कहूंगा। आप विरासत को याद रखिए, इतिहास के जो विभिन्न पहलू हैं, पुरुष कामरेड्स महिला कामरेड्स की भूमिका को याद रखिए।

तीसरी बात है, 2007 में संपन्न पार्टी की 9वीं कांग्रेस-एकता

कांग्रेस के लगभग 10 साल गुजर गए, उसका नारा या उसमें जो अपने कार्य करने का लक्ष्य रखे थे, पीएलजीए को पीएलए बनाना, चलायमान युद्ध में जाना, आधार क्षेत्रों को बनाना, क्या ये हम कर पाये हैं? नहीं! तो क्या हम जहां खड़े थे, वहीं खड़े हैं? नहीं! क्या हमने युद्ध के सवाल पर पहले की अपेक्षा ज्यादा अनुभव हासिल नहीं किये हैं? हां, किये हैं। क्या हमने अनुभव हासिल करने के लिये बहुत कुर्बानियां नहीं दी है? हां, दिये हैं। कुर्बानी के जरिये हम बहुत कुछ हासिल किये हैं। हर तरह के अनुभव हम हासिल किये हैं। जनांदोलन के बारे में, मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद को गहराई से समझने के बारे में, हमारे अंदर के गैर-सर्वहारा रूझान हमें किस रूप में पीछे धकेलता है, उसके बारे में, उन्नत युद्ध कला के बारे में भी हम ज्यादा अनुभव हासिल किये हैं। पीएलजीए को पीएलए में बदलने की प्रक्रिया व क्रांतिकारी किसान कमेटी से क्रांतिकारी जन कमेटी बनाने की प्रक्रिया के बारे में पहले जितना हम जानते थे, आज हम उससे ज्यादा जानते हैं।

पिछले 12 साल के व्यावहारिक अनुभव को हमारे केन्द्रीय कमेटी ने सूत्रबद्ध करते हुए आप सबों के सामने समय-समय पर लाने की कोशिश की है और आप सभी को जानकारी दी है। इसलिए 12 साल में यहां तक आने का एक ऐतिहासिक पहलू यह भी है कि हम बोल सकते हैं कि लाखों बाधा, अत्याचार, घेरा डालने, पीछे पड़ने, एसपीओ बनाने व एसपीओ रैंक को मजबूत बनाने के बावजूद भी हम लड़ रहे हैं। क्या यह सफलता के अंदर नहीं आता है? इसको भी आप एक सफलता के रूप में देखिए। अगर आप इस धरती से जुड़े हुए हैं, गांव से जुड़े हुए हैं और जनता से जुड़े हुए हैं, तो किसी ताकत की क्षमता नहीं है कि हमें यहां से उखाड़ कर फेंक देगा और हमें महानदी में डुबा देगा तथा भाकपा (माओवादी) खत्म हो जाएगी। यह नहीं होने वाला है, किसी भी इतिहास में नहीं हुआ है बल्कि विपरीत चीज आपको देखने को मिलेगी।

आज जब पार्टी की 12वीं वर्षगांठ तक हमलोग पहुंचे हैं, तो हमारे अनुभव के संदर्भ में कुछ सकारात्मक सबक है तो कुछ नकारात्मक। पर आज हमें नकारात्मक सबक पर व्यापक चर्चा नहीं करनी है, क्योंकि वो हम करते रहे हैं। हमारे जो सकारात्मक सबक हैं। हमारे भंडार में काफी उपलब्धियां मौजूद है, आप उसपर भरोसा रखिए। जिस-जिस प्रक्रिया के जरिये 12 वर्ष पार कर हम यहां तक आए हैं, क्रांतिकारी दौर के लिए इससे बड़ा सकारात्मक सबक और कुछ नहीं हो सकता है। इतना समझिए कि आप-हम दुश्मन के 'घेरा डालो, विनाश करो' की मुहिम का मुकाबला कर रहे हैं, ऑपरेशन ग्रीन हंट का मुकाबला कर रहे हैं, इसमें हम कुछ नुकसान जरूर झेले हैं लेकिन हमें व्यापक अनुभव हासिल हुआ है। एलआईसी पॉलिसी के सभी पहलुओं को चौमुखी जवाब देने के बारे में, दुश्मन के साजिश के बारे में, इस दलाल सरकार की भूमिका के बारे में और जनता क्या चाहती है, उसके बारे में, आज हमारे पास अनुभव है, सकारात्मक अनुभव है। इससे पहले हम इतनी गहराई से नहीं समझ पाए थे। यही हमारी पूंजी है, आपकी पूंजी है। अगर हम यह सोचेंगे तो अगले दौर में अच्छे नतीजे ला सकते हैं, अच्छी सफलता हासिल कर सकते हैं। ऐसी दृढ़ता हमारे अंदर आएगी। आज दृढ़ता रखने की जरूरत है। भाकपा (माओवादी) की जो लाइन है, नीति है, कार्यक्रम है, उसपर आप दृढ़ता रखो। आप विश्वास रखो कि अगर आप ठीक ढंग से इसको व्यावहारिक रूप में कार्यान्वित करते रहेंगे, तो कुछ नुकसान तो होगा लेकिन नुकसान के जरिये हमारा फायदा अंत तक नुकसान को हमेशा के लिए बंद करने की जगह तक पहुंच सकते हैं, मतलब हम क्रांति को सफल कर सकते हैं, जनवादी राज्य बना सकते हैं, शोषणहीन-वर्गहीन राज्य बना सकते हैं, मजदूरों-किसानों का राज्य बना सकते हैं। जब हम क्रांति को सफल करेंगे व जनता का राज्य बनाएंगे, तो यह राजसत्ता, ये पुलिस जनता पर गोलियां चलाने के लिए, जेल में डालने के लिए व पीटने के लिए नहीं होगी। तभी जाकर हमेशा के लिए जुल्म-अत्याचार, हत्या, नरसंहार आदि जो पूरे देश व विश्व के पैमाने पर साम्राज्यवादियों व उसके गुर्गों के जरिये किया जा रहा है, उससे हम मुक्ति पा सकते हैं। इसलिए और ज्यादा आत्मत्याग के लिये तैयार हो जाओ। मानसिक रूप से भी तैयार हो जाओ। अगर ऐसे तैयार होते हो तो आपके लिए जीत हासिल करना आसान हो जाएगा। इसलिए आत्मविश्वास से हृदय भर लो, इस लाइन पर विश्वास रखो। मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्तालिन, माओ, जो बोलकर गए हैं, उस पर विश्वास रखो। पार्टी द्वारा निर्धारित जो कार्यशैली है, कार्यक्रम है, उसको कार्यरूप दो। 12वीं वर्षगांठ के अवसर पर यह हम सबों के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण कर्त्तव्य के रूप में है।

अगला दौर हमारे लिए चुनौतियों से भरा हुआ है। चुनौतियां हर समय रहती है। जब से सशस्त्र क्रांति के रास्ते पर हमलोग आगे बढ़े हैं, नक्सलबाड़ी विद्रोह के समय से ही व उसके बाद नयी पार्टी के गठन के बाद और भी व्यापक व गुणात्मक रूप से चुनौतियां हमारे सामने आयी है। इसलिए इस चुनौती भरे दौर को पार करना है और उसे पार करने के लिए हिम्मत चाहिए। सही पार्टी, सही फौज व सही संयुक्त मोर्चा चाहिए और क्रांति के ये तीनों जादुई हथियार भी आपके पास है। इसलिए दुनिया की ऐसी कोई ताकत नहीं है, जो भारतीय क्रांति को अंतिम विजय तक पहुंचने से रोक सकती है।

जैसे आपलोग रोज घर में झाड़ू लगाते हैं, साफ करते हैं, ठीक वैसे ही आपके मन के अंदर जो गलत रूझान है, पार्टी के अंदर जो गैर-सर्वहारा रूझान है, उसे भी आपलोग रोज झाड़ू लगाओ। आपलोग ही पार्टी के सब कुछ हैं व आपलोग ही क्रांति के अगले चुनौती भरे दौर को पार करने के निर्णायक तत्व हैं। इसलिए पार्टी के इआरबी कामरेड व उम्रदराज कामरेड के बतौर मैं आपलोगों से कहना चाहता हूं कि भारतीय क्रांति का प्रत्यक्ष रूप से नेतृत्व करने वाले आप ही पुरुष कामरेड्स हैं, महिला कामरेड्स हैं, बच्चे व बच्ची कामरेड्स हैं। आप कोशिश करोगे तो दुनिया को बदल सकते हो। इसलिए आपके पास जो पुराना सकारात्मक सबक है, उसपर आधारित होकर के अगले चुनौती भरे दौर को पार करने के लिए दृढ़ता रखो। इसके लिए जो कर्त्तव्य है - पार्टी को मजबूत करना, पीएलजीए को मजबूत करना, जन संगठन को मजबूत करना, संयुक्त मोर्चा को मजबूत करना व अपने बीच की आंतरिक एकता को मजबूत करना - इसका बहुत प्रयास आपलोग करो। याद रखो, पार्टी को भीतर से नष्ट करने के लिए एक बहुत खतरनाक पॉलिसी के रूप में एलआईसी पॉलिसी है। देश में जहां-जहां हमलोग हैं, दुश्मन कोशिश करता है कि हमलोगों के बीच किसके साथ क्या विरोध है, उस विरोध को बढ़ाकर व कुछ लोगों को कोवर्ट बनाकर पार्टी के आंतरिक एकता को चूर-चूर करने की। आप एक सजग प्रहरी जैसे हो जाओ। घर में जैसे देखते हो कि रात में दुश्मन न घुस पाए, वैसे ही पार्टी में भी हो जाओ कि कोई भी ऐसा तत्व न घुस पाए, जिससे पार्टी की आंतरिक एकता में किसी प्रकार का विघ्न-बाधा पैदा हो व एकता में किसी प्रकार का टूटन हो। ये आप सबके लिए बहुत जरूरी है क्योंकि पार्टी जब कमजोर होती है तो दुश्मन इस तरह के हजारों साजिश करते रहते हैं - बाहर से आक्रमण और भीतर से आत्मसमर्पण करवाना, कोवर्ट भेजना, आंतरिक एकता में दरार पैदा करवाना, पार्टी में विभिन्न तरह का विभाजन व गुटबंदी कराना आदि। आप इसके बारे में अगले दौर के लिए सतर्क हो जाओ। कुछ भी हो, खुलकर कमेटी में चर्चा करो, खुलकर के बात करो। पार्टी से कोई भी बात छिपाने की जरूरत नहीं है। कोई भी गलती तो इंसान से ही होती है, कामरेड्स से भी होती है, मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्तालिन, माओ, ऐसा कोई नहीं है, जिनसे गलती नहीं हुई है। पर गलती को स्वीकारो और गलती को सुधारो। पार्टी छोड़कर हमारा कुछ नहीं है, इस जगह पर खुद को पहुंचाओ। यह सोचो कि क्रांति के लिए जन्में हैं, क्रांति के लिए पार्टी सदस्य हैं, क्रांति के लिए जीवनसाथी चुनना है यानी कि सब कुछ क्रांति के लिए करना है। बहुत सारे साथियों ने हमारे सामने ऐसा उदाहरण दिए हैं, इसलिए इस बात को भी आप अपने जीवन में उतारो।

भारत सरकार की सरेंडर पॉलिसी भी हमारे लिए चिंता की बात है। सरेंडर पॉलिसी 'चीनी दिया हुआ मलेरिया का टेबलेट' के समान है, जो असल में तीता है लेकिन उपर से मीठा लगा देते हैं। सरेंडर पॉलिसी के तहत बहुत ऐसे ढुलमुल साथी, भ्रष्ट साथी, गलत करने वाले साथी, जिसके पार्टी में रहने के लिए लगभग जगह नहीं है, वही सीधे जाकर दुश्मन के पास सरेंडर कर रहे हैं। ऐसे लोग ऐशो-आराम से जीवन बिताना चाहते हैं। आज यहां तो कल वहां जाकर के क्रांति के खिलाफ में पार्टी के नाश के लिए, पार्टी के ताकतों को ध्वस्त करने के लिए, जनता के खिलाफ व पार्टी के खिलाफ में क्रांतिविरोधी प्रतिक्रांतिकारी की भूमिका में जा रहे हैं। सरेंडर पॉलिसी के तहत आपको जितना भी पैसा मिले लेकिन आपकी हालत अमीरों के घर में पल रहे कुत्ता जैसा होता है, जिसे सब सुविधाएं मिलती है लेकिन वह मालिक का गुलाम ही होता है। आप इसके बारे में व्यापक प्रचार करो। आप मन के भीतर तय करो कि किसी भी हालत में सरेंडर पॉलिसी को आगे नहीं बढ़ने देंगे। आम जनता के बीच भी इसका प्रचार करो। भूखे रहना सही है लेकिन गुलामी भरी जिंदगी अच्छी नहीं है। इसलिए कौन सी जिन्दगी हम चाहते हैं, यह एक सैद्धांतिक पहलू है। आराम का जीवन, दुश्मन का दास बनकर उसके हाथ का खिलौना बनकर जीना या मुक्त जीवन जीना। जिस मुक्ति के लिए हम सोचे हैं, भारत की आजादी व भारत की जनता की मुक्ति के लिए हम सोचे हैं। हम उसी घर के व उसी धरती के पुत्र-पुत्री बनेंगे और जनता की मुक्ति, लाखों-करोड़ों मां-बहनों की मुक्ति के लिए हम आगे बढ़कर जान भी देंगे। इसलिए सरेंडर पॉलिसी से घृणा करो। सरेंडर करने वालों से घृणा करो। उसके घर को पूरे गांव से बहिष्कार कराओ। एक जनांदोलन के तौर पर सरेंडर पॉलिसी के खिलाफ जनता को जागरूक करो। यहां से ही शुरु करो। जहां जाओ वहीं करो और जो सरेंडर किया हुआ है, उसको पूरी जनता में भंडाफोड़ करते हुए आम जनता के जरिये दबाव देकर के उसको सजा दो या गांव से भगाओ। सरेंडर करनेवालों के साथ कोई दोस्ती नहीं, उसका स्थान दुश्मन के पास ही है, उसी के गोद में जाकर बैठे, उसकी दलाली करे, चमचागिरी करे, पैर मालिश करे और जो महिला लोग सरेंडर किए हुए हैं, उसको भोगने के लिए सरेंडर पॉलिसी तो है ही। इसलिए इसको एक विशेष एजेंडा लेकर के आपलोग एरिया कमेटी तक में बात करो, पीएलजीए में बात करो। जनता के बीच में जब भी जाओ, इसको एजेंडा में रखते हुए इस पर बात करो।

दूसरी चिंता की बात दुश्मन का एसपीओ नेटवर्क है। इस नेटवर्क के संचालन करने वालों को चिन्हित करो और सजा दो। बाकी लोगों को जन अदालत में पेश कर जनता के राय के अनुसार कार्रवाई करो। क्योंकि अगर अगले प्रक्रिया में

सरेंडर करने वालों व क्रांतिविरोधी तत्व को हम ठीक से नहीं पहचानेंगे और उसको अलग-थलग करने का प्रयास नहीं करेंगे, तो जान-बूझ करके और ज्यादा नुकसान बुलाएंगे। इसलिए जब मैं कह रहा हूं कि अगले दौर में चुनौती भरी परिस्थिति हमारे सामने खड़ी है, जिसमें ज्यादा सरेंडर करने वाले लोग, जेल से निकाल कर कोवर्ट के रूप में पार्टी में घुसा देने की परिस्थिति, एसपीओ नेटवर्क को बढ़ाने के लिए विभिन्न गांवों में साजिश आदि शामिल है। अगर आप इसके बारे में सचेत नहीं रहेंगे, तो इसके फंदे में फंस जाने की संभावना रहेगी। इसलिए आप इसके बारे में भी पहले की अपेक्षा ज्यादा तैयार हो जाओ। समझो, ये पॉलिसी कितना खतरनाक है, जब आपको बाहर से नष्ट नहीं कर सका, तब इस तरह के पॉलिसी से पार्टी को भीतर से विनाश करना चाह रहा है। आपको समझना होगा कि जनता को आपस में लड़ाने के लिए स्थानीय लोगों को पुलिस-फौज में भर्ती कराया जा रहा है, कहीं बस्तरिया बटालियन, कहीं संथाल तो कहीं पहाड़िया बटालियन बनाके। आप इस पर जनता से व्यापक चर्चा करो, ताकि कहीं से भी जनता ऐसे बटालियन का हिस्सा न बने। यह दबाव देकर नहीं होगा और न ही डराकर होगा। एक व्यापक जनांदोलन के रूप में इसे एजेंडा बनाकर गांव में जनता के बीच व्यापक चर्चा करनी चाहिए। हमसे लड़ाने के लिए हमारे ही भाई को दुश्मन उतार रहा है। आप सभी भी उसी घर की संतान हो, इसलिए अगर आप अच्छा से जनता को समझाओगे तो वह जरूर समझेंगे और अपने बच्चों को ऐसे किसी भी बटालियन में नहीं भेजेंगे, क्योंकि जनता समझती है कि कौन जनता के पक्ष में है और कौन उनका दुश्मन है।

पार्टी की 12वीं वर्षगांठ पर हमारा संकल्प होना चाहिए कि हम अपनी पुरानी उपलब्धियों व सकारात्मक सबक को संचित कर, उस पर आधारित होकर अगली चुनौती का सफल मुकाबला कर उसे मुंहतोड़ जवाब देंगे। जनता के साथ ज्यादा घुलमिल जाएंगे और ऐसा करते हुए अगले दौर में न केवल हम पीछे हटने की स्थिति से उभर पाएंगे बल्कि सफलता के संदर्भ में और कुछ नयी सफलता हासिल करने में सक्षम होंगे। इसी ढंग से एक नयी उंचाई तक अभी के संघर्ष को ले जाओ। हम सब शपथ लें कि विभिन्न तरह के क्रांतिविरोधी पॉलिसी को हम नाकाम करेंगे, अपने बीच में लोहे की तरह आंतरिक एकता को मजबूत करेंगे, पार्टी में खुले मन से बातचीत करेंगे, पार्टी में एक सही नियम के द्वारा महिला हो या पुरुष कामरेड्स आगे बढ़ाएंगे, गांवों में हजारों-हजार मिलिशिया तैयार करेंगे व सामूहिक रूप से पार्टी के लिए काम करेंगे। साथ ही छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में, पीएलजीए को पीएलए में व छापामार क्षेत्र को आधार क्षेत्र में बदलने के लिए हम जी-जान से जुटेंगे। पार्टी की 12वीं वर्षगांठ पर हमारी पार्टी का यही आह्वान है, इआरबी की तरफ से मेरा भी यही आह्वान है।

अंत में कुछ बात सरकार की झूठी घोषणाओं पर करना चाहता हूं। एक तरफ, पत्र-पत्रिका, रेडियो, टीवी आदि से केन्द्र सरकार चिल्लाती है कि भारत में माओवादी को बहुत जगह से हटा दिये हैं, ओड़ीसा से हटाए हैं, झारखंड में बहुत कम किये हैं, बिहार में कम किये हैं, ऐसा कि छत्तीसगढ़ व डीके में भी बहुत जगह से हटा दिये हैं और पूर्व में 120 जिलों में कार्यरत माओवादियों को 20-25 जिला तक सिमटा दिये हैं। ऐसी रिपोर्ट भी केन्द्र सरकार देती है। फिर दूसरी तरफ बोलती है कि और 14 बटालियन बनाना होगा, 3 बटालियन झारखंड के लिए, 3 बटालियन उड़ीसा के लिए, 4 बटालियन डीके के लिए, एक-एक बटालियन बिहार व बंगाल के लिए और अन्यत्र के लिए। अब बताइये, अगर हमारी ताकत कम हुई है, तो बटालियन के बटालियन बनाने की क्या जरूरत है? इसलिए आप समझ जाओ कि ये सरकार किस तरह धोखा देने वाली बात बोल रही है। एलआईसी पॉलिसी के तहत ही वो हमारे ताकत में कमी का दुष्प्रचार कर रही है। ऐसे दुष्प्रचार से आप नहीं घबड़ाओ। आप याद रखो, दुश्मन का प्रचार सही नहीं है, गलत प्रचार है। आपकी लड़ाई को तमाम दुनिया देख रही है। दुनिया के तमाम मजदूर, तमाम प्रगतिशील तत्व, तमाम मार्क्सवादी-लेनिनवादी-माओवादी विचार वाले लोग आपकी लड़ाई के पक्ष व समर्थन में है। आपलोग रिपोर्ट में देखेंगे कि यूरोप के देशों से लेकर के एशिया, अफ्रीका व लातिन अमेरिका के कई देशों के लोगों ने मिलकर भारत में भाकपा (माओवादी) के नेतृत्व में जारी दीर्घकालीन जनयुद्ध के समर्थन में और यहां की जनता पर जो 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' के नाम से बर्बर युद्ध थोपा गया है, इसके खिलाफ में उनलोगों ने बहुत से कार्यक्रम यूरोप में, इटली में, कनाडा में, फ्रांस में, अमेरिका में, लातिन अमेरिका के कुछ देशों में व एशिया के कुछ देशों में चलाए हैं, चला रहे हैं और चलाएंगे। इसलिए हमलोग अकेले नहीं हैं, हमारी लड़ाई और दुनिया के मजदूरों की लड़ाई एक है। वर्त्तमान में विश्व साम्राज्यवाद बहुत भारी संकट में है। अभी अमेरिका, रूस व चीन (चीन को भी हमलोग साम्राज्यवादी ताकत के रूप में चिन्हित किए हैं) जैसे साम्राज्यवादी ताकत विभिन्न देशों से अपना-अपना गठजोड़ करते हुए अपने प्रभुत्व के विस्तार के लिए विभिन्न देशों में बाजार दखल के लिए तीखी प्रतिस्पर्धा चला रहे हैं। विश्व के पैमाने पर कब लड़ाई-झगड़े की परिस्थिति बन जाएगी, कब स्थानीय युद्ध विश्व युद्ध का रूप ले ले, कहना मुश्किल है। आप कह सकते हैं कि दुनिया अभी ज्वालामुखी के ऊपर बैठी हुई है। एक उथल-पुथल की

परिस्थिति है, जो क्रांति के लिए अनुकूल है। हमारे केन्द्रीय कमेटी के विश्लेषण में इस दृष्टिकोण से जो विश्व की परिस्थिति है और हमारे देश में जो घरेलू परिस्थिति है, ये सब हमारी क्रांति के अनुकूल है। इतनी ज्यादा अनुकूल कभी नहीं थी, इसलिए दुश्मन जितना भी मुंह से बोले, भीतर से वह खोखला होता जा रहा है, उनके पैर के नीचे की जमीन खिसक रही है। इस बात को भी आपको बढ़िया से समझना होगा कि दुश्मन की क्षमता नहीं है कि इस परिस्थिति से उभरकर आगे बढ़े और अपनी अर्थव्यवस्था को ताकतवर करे। इस बात को आपको कभी नहीं भूलना है। हमारे देश की गद्दी पर बैठी मोदी सरकार के जनविरोधी नीतियों, अल्पसंख्यकों पर बढ़ते ब्राह्मणवादी हिन्दुत्व फासीवादी हमलों व जनता पर जारी जुल्म-अत्याचार के खिलाफ में पूरे देश में आम जनता अपने-अपने स्तर पर बड़ी-बड़ी लड़ाइयां लड़ रही है। ये सारी चीजें आपकी लड़ाई के पक्ष में है, माओवादियों के पक्ष में है। अगर आप सक्रिय होकर इनलोगों से एकताबद्ध होने का प्रयास करोगे तो झारखंड में सीएनटी-एसपीटी एक्ट में संशोधन को लेकर के, पूरे देश में बड़े पैमाने पर हो रहे विस्थापन को लेकर के, झारखंड-ओड़ीसा में एमओयू को लेकर के आदि सवालों पर एक विशाल मोर्चा बना सकते हो।

अंतिम में पूरे देश में जेल में बंद लगभग 50 हजार कामरेड्स, जिसमें बिहार-झारखंड में कम से कम 10 हजार राजनीतिक बंदी होंगे, जिसमें 90 प्रतिशत आदिवासी-दलित जनता है, हमारे केन्द्रीय कमेटी से लेकर एरिया कमेटी तक के कामरेड्स हैं, पीएलजीए के कामरेड्स हैं व गांव के कामरेड्स हैं, ये सब जेल के अंदर भी दुश्मन से लड़ रहे हैं। आज पार्टी स्थापना की 12वीं वर्षगांठ पर हम उनके संघर्ष के साथ एकजुटता, संवेदना और समर्थन प्रदर्शित करते हैं व इनके अविलंब मुक्ति के लिए, जहां तक संभव हो, आवाज उठाने का संकल्प लेते हैं। बाकी जो हमारे पार्टी का कार्यक्रम है, उसको आगे बढ़ाने का संकल्प लेते हुए व आप सभी को मेरा गर्मजोशी भरा लाल सलाम पेश करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं।

पृष्ठ संख्या 68 का शेष

लेकर जंगलों में विध्वंसक हथियारों के इस्तेमाल के जरिए इसे बर्बाद करने और आम जनता को आतंकित करने का खेल ये सरकारी बल लगातार खेल रहे हैं। जैसे-जैसे इनके हथियार का आतंक विफल हो रहा है ये और अधिक बौखलाकर उन तमाम चीजों को खत्म कर देने पर आमादा हैं, जो इनके खिलाफ है। असल में इन सरकारी बलों के अधिकारियों ने उन्हें ध्वंस करना और हथियार का आतंक दिखाना तो सीखा दिया लेकिन उन्होंने इन्हें यह नहीं बताया कि वास्तव में लड़ाई का निर्णय हथियार नहीं बल्कि जनता करती है। कॉरपोरेट लूटेरों और मुनाफाखोरों के इन रखवालों ने इतिहास से अबतक यह नहीं सीखा कि अब आम जनता ने इनके हथियारों से डरना बंद कर दिया है।

हमारी पार्टी तमाम मानवाधिकार संगठनों, जनवादी संगठनों, बुद्धिजीवियों और न्याय पसंद आम जनता से अपील करती है कि वे आकर इन इलाकों का मुआयना करें कि किस तरह आम जनता की आवाज को कुचलने के लिए सरकार सीमा पर युद्ध में इस्तेमाल होने वाले भारी विध्वंसक हथियारों का इस्तेमाल कर रही है। किस तरह इन इलाकों में आम जनता के अंदर आतंक कायम करने की कोशिश की जा रही है। हम तमाम न्यायपसंद संगठनों से अपील करते हैं कि वे सरकार और इनके बलों के इस अन्यायपूर्ण युद्ध अभियान की खिलाफत करें और इन इलाकों की जनता की जनवादी अधिकारों के पक्ष में खड़े हों।

सूचना

लाल चिनगारी सम्पादक मंडल को खत भेजने के लिए तमाम पाठकों को क्रांतिकारी हार्दिक लाल अभिनंदन! आपका खत हमारे लिए बहुमूल्य है। आपका खत हमारे जोश और जज्बे को बढ़ाता है। आपके बहुमूल्य सुझाव का हम स्वागत करते हैं। हम आपके सुझाव पर अमल करने की भरपूर कोशिश कर रहे हैं।

हमें पूरा उम्मीद और विश्वास है कि आप हमेशा हमें खत लिखकर अपना बहुमूल्य सुझाव देते रहेंगे।

-सम्पादकमंडल, लाल चिनगारी

ऐ लाल फरेरे तेरी कसम....

अमर शहीद कामरेड रघुनाथ महतो (उर्फ मुर्मू दा, उर्फ फकरु दा) को शत्-शत् लाल सलाम!

कामरेड रघुनाथ महतो विगत 26/10/2016 को हम सबों को छोड़कर हमेशा-हमेशा (या सदा-सदा) के लिए चल बसे। मृत्यु के समय उनकी उम्र 96 वर्ष की थी। उनकी मृत्यु के साथ-ही 60-70 के दशक से कम्युनिस्ट आंदोलन और क्रांतिकारी व नक्सलवादी आंदोलन के टेढ़े-मेढ़े, कठिन व जटिल रास्ता पार कर सीपीआई (माओवादी) के स्पेशल एरिया कमेटी का दर्जा प्राप्त सदस्य तक का एक गौरवमय इतिहास से जुड़ा हुआ एक अध्याय की लगभग समाप्ति हुई- ऐसा कहा जा सकता है (यानी ऐसा कहना कोई अत्युक्ति नहीं होगी)।

कामरेड रघुनाथ महतो का जन्म सन् 1921 में एक निम्न मध्यम किसान परिवार में हुआ। उनका जन्म स्थान झारखंड प्रांत के धनबाद जिला के अंतर्गत तोपचांची थाना इलाके का नेरकोपी गांव में था। कामरेड रघुनाथ महतो 1942 में मैट्रिक पास कर धनबाद के आरएसपी कॉलेज, झरिया में इंटरमीडिएट के लिए भर्ती हुए। पर, रहने व खाने-पीने में काफी दिक्कतें आने के कारण कॉलेज की पढ़ाई छोड़ देनी पड़ी। एक किसान होने के नाते कामरेड रघुनाथ महतो खेती-बाड़ी के काम सहित पशुपालन, सब्जी उगाने व मुर्गा-मुर्गी का पोल्ट्री फार्म के काम में भी काफी लगन से जुड़े हुए थे। स्कूल की पढ़ाई के समय से ही एक ओर ब्रिटिश उपनिवेशवादियों का भारत को गुलाम बनाए रखने का दमनात्मक चरित्र और दूसरी ओर सामंती जमींदार व महाजनों द्वारा चलाया जा रहा शोषण-जुल्म, दादागिरी व आदिवासी-पिछड़ी जाति के मां-बहनों की इज्जत के साथ मनमौजी खिलवाड़ करने तथा पुलिस-प्रशासन के साथ मिलीभगत बनाए रखने इत्यादि को देखकर तथा खुद पिछड़ी जाति के होने तथा पराधीन होकर गुलाम जैसा जीवन बिताने के कारण ब्रिटिश साम्राज्यवाद व सामंती जमींदार-महाजनों के खिलाफ उनके मन में तीव्र घृणा व क्रोध पैदा हुआ। यह घृणा और बढ़ती गई, जब वे पहले जिला-डीसी ऑफिस में और बाद में धनबाद कोर्ट में किरानी के काम में शामिल हुए। क्योंकि वहां भी पहले सचिवालय में नौकरी करते हुए ऑफिसरों की दादागिरी देखकर और बाद में न्याय-व्यवस्था के जरिए न्याय (इंसाफ) पाने के नाम पर विचारक व वकीलों की मिलीभगत से गरीबों के सारे कुछ लूट लेने की बे-रोक-टोक कार्रवाइयों को देखकर मौजूदा जुल्मी व्यवस्था के खिलाफ कुछ कर गुजरने की सोच पैदा हुई। एक तो कॉलेज में पढ़ाई करते समय ही ऐतिहासिक सिद्धू-कान्हू के नेतृत्व में घटित 1855-56 का ऐतिहासिक संथाल हूल (विद्रोह) और 1857 में घटित ऐतिहासिक सिपाही विद्रोह और 1890 के दशक में बिरसा मुंडा के नेतृत्व में हुआ ऐतिहासिक उलगुलान (या विद्रोह) तथा उक्त लड़ाइयों को प्रचंड दमनचक्र चलाकर और खून की बाढ़ बहाकर किस रूप से अस्थायी तौर पर खत्म कर दिया गया था- की भलीभांति जानकारी थी। फिर, ब्रिटिश शासनाधीन काल में ही ब्रिटिश उपनिवेशवादी सेना ऑफिसर-नौकरशाही व शिक्षक-प्राध्यापकों (Teachers and Professors) के द्वारा ही भारतवासियों को गुलाम की तरह यानी दास समाज के समय दास मालिक द्वारा दासों को जिस रूप से जंतु-जानवर जैसा व्यवहार किया जाता था, वैसे ही माता-बहनों को केवल भोग करने की वस्तु के रूप में देखा व व्यवहार किया जाता था-इसके बारे में भी कामरेड रघुनाथ महतो को भलीभांति जानकारी थी और प्रत्यक्ष अनुभव भी था। ब्रिटिश शासनाधीन काल में ठीक वैसे ही आचार-आचरण व बर्ताव देखकर व खुद महसूस कर वे ब्रिटिश उपनिवेशवादियों के खिलाफ कुछ कर गुजरने के लिए सोचना प्रारंभ किए थे।

पुनः 1947 में प्राप्त तथाकथित आजादी के दो/चार वर्षों के अंदर ही 1947 के बाद भी पुराना ब्रिटिश शासनाधीन काल जैसा ही गरीबी-बेकारी-भुखमरी इत्यादि सारे कुछ देखकर प्राप्त आजादी 90 प्रतिशत जनता की आजादी नहीं, केवल मुट्ठीभर शोषक वर्गों की आजादी ही है- इस समझदारी में पहुंचे। तबतक रूसी क्रांति के जरिए दुनिया में सबसे पहले मजदूर-किसान-मेहनतकश जनता का राज स्थापित होने की बात उनको मालूम हो गया था और कुछ मार्क्सवादी हिन्दी किताबों का अध्ययन करने का मौका भी मिल गया था। इसी बीच दूसरा विश्व युद्ध (1939 से 1945 तक) के मूल

कारण जो पूंजीवादी-साम्राज्यवादी देशों के बीच दुनिया के बाजार दखल को लेकर तीखी प्रतिस्पर्धा ही थी, इस बारे में तथा चीनी क्रांति की सफलता के बारे में भी कुछ न कुछ जानकारी हासिल हो गयी थी। अंततः कामरेड रघुनाथ महतो तत्कालीन अविभाजित भारत की कम्युनिस्ट पार्टी यानी सीपीआई में शामिल हो गए। पर, किस साल में उन्होंने सीपीआई का मेम्बरशिप लिया, वह पता लगा पाना संभव नहीं हुआ। लगभग 1957 में पंचायत चुनाव के माध्यम से वे तोपचांची दुमदुमी पंचायत का मुखिया चुने गए। इमानदार व सहज-सरल जीवन व मजदूर-किसानों के साथ प्यार-श्रद्धा से बात करने के कारण जनता के साथ उनका लगाव बहुत गहरा था। इस कारण से बाद में, भारत-चीन युद्ध के बाद भी वे सीपीआई में ही रह गए। इसके बाद 1967 में ऐतिहासिक नक्सलबाड़ी किसान विद्रोह की घटना घटित होने के बाद भारत के कम्युनिस्ट आंदोलन में जो हलचल मच गयी थी उसकी लहर से कामरेड रघुनाथ महतो भी अछूता नहीं रह गए थे। इसी उथल-पुथल स्थिति के 1969 के 2 दिसम्बर में उनके पास तत्कालीन एमसीसीआई और मौजूदा सीपीआई (माओवादी) के एक संस्थापक नेता कामरेड कन्हाई चटर्जी (केसी) पहुंचे और भारत के कम्युनिस्ट आंदोलन में लम्बे समय से चला आ रहा घोर संशोधनवाद व संशोधनवादी-संसदवादी कार्यवाही के खिलाफ महान नक्सलबाड़ी विद्रोह का बज्रघोष के जरिए जो संघर्ष की शुरुआत हुई उसे अंतिम मंजिल तक आगे बढ़ाने हेतु सशस्त्र संघर्ष के जरिए लाल फौज व आधार इलाके का स्थापित करना ही बुनियादी, प्रधान व केंद्रीय कर्तव्य है और इसलिए छोटानागपुर के पहाड़-जंगल इलाके को केंद्रित कर आसपास के विशाल मैदानी इलाके में कृषि-क्रांतिकारी युद्ध तथा दीर्घकालीन लोकयुद्ध को पैदा करके निश्चित रणनीतिक (Strategic) इलाका अथवा चुने हुए (या Selected) इलाके की ठोस योजना के साथ काम करना कितना जरूरी है- इस पर दोनों के बीच कई दिनों तक चर्चा चली और पारसनाथ व जिलंगा-लुगू पहाड़ रेंज को केंद्रित कर क्रांतिकारी कामकाज की शुरूआत के लिए वे पूरी तरह तैयार हो गए। वाकई में, उस दिन से यानी 1969 के दिसम्बर से 2016 के 27 अक्टूबर तक यानी मृत्यु तक उनका जीवन एक सच्चा कम्युनिस्ट का जीवन था, जो हम सबों को सदा प्रेरित करता रहेगा। एक मध्यम वर्गीय परिवार से आने के बावजूद तथा नौकरी करने के बाद में पंचायत मुखिया के पद पर रहने के बावजूद जब से क्रांतिकारी आंदोलन में जुड़ गए तब से खुद को वर्गच्युत करते हुए तथा गरीब से गरीब आदिवासी व दलित घरों के घट्ठा-लप्सी, साग-महुआ खाकर, वह भी खुशी से, जमीन पर ही गमछा बिछाकर सो-जाने की आदत बनाने में कभी कोई दिक्कत महसूस नहीं करते थे। अलावे सहज-सरल ढंग से व बोल-चाल की भाषा से समाज में मूल उत्पादनकारी वर्ग के रूप में मजदूर व किसान ही होने तथा समाज व सभ्यता को आज के मुकाम तक पहुंचाने वाले होने के बावजूद समाज में सबसे गरीबी हालत में और अपमान व बेइज्जत भरा जीवन भी उन्हीं मजदूर-किसानों को ही बिताना पड़ रहा है। यह मौजूदा शोषणमूलक समाज-व्यवस्था जबतक रहेगा तबतक वर्गीय शोषण-शासन, विचार व जुल्म-अत्याचार सबकुछ ही चलता रहेगा। अब काम है वोट के जरिए नहीं, हथियारबंद होकर पुरानी सड़ी-गली समाज व्यवस्था को तोड़ या ध्वस्त कर मजदूर-किसान-मेहनतकशों का यानी 90 प्रतिशत जनता की जनवादी व्यवस्था वाला समाज का निर्माण करने की जरुरत है- ''यही बतवा तोहनी के सोचे होतो और संगठन बनावेल होतो और खून चूसे वाला जमींदार-महाजनों के खिलाफ लड़े होतो''- इस रूप से शुरुआती दौर में कामरेड रघुनाथ महतो ने जनता के बीच क्रांतिकारी राजनीति का प्रचार करते हुए एक बड़े क्षेत्र तक जनता को प्रारंभिक रुप से सांगठनिक रुप देने के काम को बहुत ही प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाए। कामरेड रघुनाथ महतो ने ही धनबाद के टुण्डी थाना के नावांटाड़ गांव के एक समय मुखिया रहे कामरेड रावण मुर्मू (जिन्हें पारसनाथ का लाल मशालची कहा जाता था और जिनका 1988 में निधन हो गया) के साथ कॉन्टैक्ट रखकर समाज-व्यवस्था को क्रांति के जरिए बदलने की जरुरत पर चर्चा की और तुरंत ही कामरेड रावण मुर्मू (भक्ति दा) पेशेवर होकर संगठन के कामों में जुट गए।

कामरेड रघुनाथ महतो ने ही पुरानी एम.सी.सी. यानी एम. सी.सी.आई. का बांग्ला भाषा में प्रकाशित केंद्रीय कमेटी का अधिकांश बुनियादी दस्तावेज व मुखपत्र का हिन्दी अनुवाद का काम बहुत ही दक्षता के साथ किया है। फिर, का. सुनीति कुमार घोष का ''*The Indian Big Bourgeoise*'' (भारत का बड़ा बुर्जुआ) जैसे महत्वपूर्ण आलेख का भी जो और एक अनुवादक हिन्दी में अनुवाद किए हुए थे उसी को ही पुनः गहराई से हर शब्द व लाइन का सूक्ष्म रुप से विचार करते हुए तथा जरुरत के मुताबिक कुछ बदलाव करते हुए उक्त अनुवाद को और यथेष्ठ उन्नत किया था (हालांकि छापने की कई गलती रह गयी थी)।

जब बंगाल का कांकसा आंदोलन और हजारीबाग आंदोलन 1974-75 में पीछे हटना प्रारंभ किया, उस समय कामरेड रघुनाथ महतो पर बहुत ज्यादा जिम्मा आ पड़ा। मतलब अनुवाद का काम के साथ-साथ कांकसा व हजारीबाग आंदोलन के साथ जीवंत कॉन्टैक्ट बहाल रखते हुए रुपए-दवा-किताब-पर्चा आदि खुद ढोकर पहुंचाने का जिम्मा भी बखूबी पालन किये। 1975 से आपातकालीन स्थिति या 1975 से 1976 के समय में तो भारी पुलिसिया निगरानी व घर पर हमला झेलते हुए ही

उनको काफी कष्ट व तकलीफ उठाकर कामरेड के.सी. को लेकर बहुत ज्यादा गुप्त तरीका से सारे इलाके में पैदल ले जाने, आने व सुरक्षित शेल्टर में रखने के काम सहित अन्यान्य बहुत तरह का जिम्मा पालन करना पड़ता था। फिर भी सारे कुछ वे सही कार्यशैली को अपनाकर ही कुशलतापूर्वक संपन्न किए।

कामरेड रघुनाथ महतो एक सच्चा झारखंड प्रेमी होने के कारण जयपाल सिंह मुंडा द्वारा शुरू किया गया झारखंड आंदोलन के मौजूदा दौर में झारखंड आंदोलन के साथ भी कुछ-न-कुछ संबंध बनाए रखते थे। पर जयपाल सिंह मुंडा के उस आंदोलन के साथ विश्वासघात करना सहित बाद में शिबु-बिनोद बाबु द्वारा 1973-74 का झारखंड आंदोलन जो ''वोट से नहीं, चोट से लेंगे झारखंड व झारखंड को लालखंड बनाएंगे'' के नारों के साथ शुरू हुआ था- के साथ भी अंत तक झामुमो सुप्रीमो शिबु सोरेन की बेइमानी को देखते हुए उन चरम अवसरवादी, नीतिहीन, भ्रष्ट, कुर्सी लोभी, अवैध धन कमाने की उच्चाकांक्षी लोगों का पूरा विरोध करते हुए उन्हें झारखंडी जनता के स्वार्थ विरोधी शोषक-शासक के पैर चाटने वाला दलाल के रूप में चिन्हित किए।

सन् 1982 में कामरेड के.सी. की समय से पहले (या *Untimely*) मृत्यु से वे बहुत ज्यादा मर्माहत हुए। फिर भी वे पूरा लगन के साथ अपना जिम्मा का पालन करते रहे। पुरानी एम.सी.सी.आई. के केंद्रीय कमेटी के अंदर जब 1998 से 2000 तक ''कामरेड के.सी. व कामरेड अमूल्य सेन के अंदर किनका फोटो पहले रहना चाहिए, *P.W.* के साथ तुरंत आपसी संघर्ष को एकतरफा रूप से बंद करने की घोषणा करना है अथवा नहीं, माओ-त्सेतुङ विचारधारा को अभी माओवाद कहना उचित है अथवा नहीं'' इत्यादि सवालों को लेकर तीखा बहस व वितर्क चला, उस समय कामरेड रघुनाथ महतो बहुत ही जोरदार ढंग से 'बादल-भरत' गुटबंदी का विरोध करते हुए सही लाइन के पक्ष में खड़े हुए। प्रसंग वश उल्लेख किया जा सकता है कि कामरेड के.सी. और कामरेड अमूल्य सेन 1969 से जबतक उन दोनों की मृत्यु नहीं हुई तबतक शुरुआती दौर में रघुनाथ महतो के अपना मकान से लेकर *UG* होने के बाद भी कामरेड रघुनाथ महतो की देखरेख में व दी गई जगहों पर उन दोनों की कितनी बार बैठक हुई वह गिनती कर कहना शायद मुश्किल है। साथ ही साथ कामरेड के.सी. व अमूल्य सेन के साथ भी कामरेड रघुनाथ महतो की बहुत सारे राजनीतिक-सांगठनिक बातचीत होते रहती थी। इसलिए, अन्यान्य सीनियर या वरिष्ठ कामरेडों से भी उनके साथ यानी रघुनाथ महतो के साथ उन दोनों दिवंगत कामरेडों की ज्यादा ही भेंट-मुलाकात व बातचीत हुई है- इसे अस्वीकार करने का कोई सवाल ही नहीं उठता।

इसी समय से यानी 2001 से लेकर 2004 के 21 सितम्बर तक की एमसीसीआई व सीपीआई (एमएल) *P.W.* का ऐतिहासिक विलय के जरिए एक नई व एकताबद्ध पार्टी सीपीआई (माओवादी) का जन्म हुआ, इन सारे विषयों के बारे में उनको सारी जानकारी होती थी और वे इससे बहुत ज्यादा खुश थे। नई पार्टी के सीसी के कुछ सदस्यों से भी वे परिचित थे। इस समय तक भी उनका अनुवाद का काम जारी था और तमाम समाचार व पार्टी पेपर पढ़ने का क्रम जारी था। तबतक उनकी उम्र 84 वर्ष हो गयी। फिर भी, पार्टी अनुशासन मान कर अंडर ग्राउंड जीवन ही बिताते रहे। चूंकि दुश्मन काफी आक्रमण चलाना शुरू किया और उनके पीछे भी पड़ गया, इसलिए उस उम्र में भी उनको भारी दिक्कतें उठानी पड़ी। लगभग उनकी 86 साल की उम्र में पार्टी की देखरेख में एक शेल्टर में रखने की व्यवस्था कर दी गई। हालांकि दुश्मन का आक्रमण भारी तेज रहने के कारण उनकी देखरेख में कुछ कमी जरूर रह गई थी। पर, कभी भी एक बार के लिए भी देखरेख में कमी से संबंधित कोई बात या शिकायत नहीं की। बल्कि बाकी साथी लोग सुरक्षित रहकर ''आगे बढ़ो और पार्टी व क्रांति के झंडे को बुलंद रखो'' जैसा आह्वान रखकर हम सबों को प्रेरित किया करते थे। बीच में उनकी उम्र जब 90 वर्ष की हो गई तब एकबार पुलिस ने उनका डेरा में जाकर उनसे पूछताछ की। पर, वे दृढ़ होकर हर बात का एक सच्चा कम्युनिस्ट जैसा जवाब दिए। प्राकृतिक नियम के अनुसार उनकी भी उम्र बढ़ती गई। चलना-फिरना सीमित हो गया। पर, रेडियो से और दैनिक पेपरों से समाचार पढ़ने का काम चलता रहा। एक सच्चा कम्युनिस्ट का जीवन जारी रहा। अंततः मृत्यु जो एक अनिवार्य नियम है, उस नियम के अनुसार ही एक सच्चा कम्युनिस्ट कामरेड रघुनाथ महतो भी 2016 के 26 अक्टूबर को हम सबों को सदा-सदा के लिए छोड़कर चल बसे। भारतीय क्रांति के आसमान से एक उज्ज्वल ज्योति सदा-सदा के लिए बुझ गया। पर, उनके विचार, उनके जीवन, जनता के साथ उनके रिश्ते, उनके प्यारे बोली-वचन, पार्टी व लाइन के प्रति अगाध विश्वास- इन सारे विषयों पर वे एक उज्ज्वल मिसाल के बतौर हमारे जेहन में व जनता के जेहन में हमेशा जिंदा रहेंगे। हम सभी कोई उनके सपने को व अधूरे कार्यों को अवश्य-ही पूरा करेंगे। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। आवें, उनके जीवन से प्रेरणा लेकर क्रांति की मौजूदा परिस्थिति का उचित ढंग से मुकाबला कर क्रांति को उसकी अंतिम मंजिल तक आगे बढ़ाने के लिए जी-जान से प्रयास करें।

शोषित-उत्पीड़ित जनता के प्यारे सपूत और पार्टी के बिहार-झारखंड स्पेशल एरिया कमिटी सदस्य शहीद कॉमरेड आशीष को शत्-शत् लाल सलाम!

11 सितंबर की शाम 3 बजे बिहार-झारखंड स्पेशल एरिया कमिटी के सदस्य कॉमरेड अशीष की हत्या गुमला जिले के पालकोट क्षेत्र में कोबरा कमांडो बलों द्वारा पकड़ कर की गयी है, इस हत्या को कोवर्ट द्वारा अंजाम दिया गया है। प्राप्त सूचना के अनुसार 11 सितंबर के शाम को सिमडेगा सबजोन के साथी गुमला सबजोन के लिए रवाना हुए थे, ये समाचार पहले ही कोवर्ट के माध्यम से पुलिस-प्रशासन को मिला है, इस समाचार के आधार पर केंद्रीय बलों के कोबरा कमांडो सहित सैकड़ों केंद्र और राज्य के सशस्त्र बल रास्ता में घात लगाकर बैठे थे, हमारी पी.एल.जी.ए. दस्ता कॉमरेड आशीष के साथ बोड़ाडीह के समीप जंगल में पहुंचकर कुछ काम के लिए रास्ता में रूका था, उसी समय घात लगाकर बैठी पुलिस चारों तरफ से पी.एल.जी.ए. को घेरते हुए सशस्त्र बलों ने गोलीबारी शुरु कर दी थी, इस अचानक हमला का मुकाबला करते हुए कॉमरेड अशीष घायल हुआ था, इस समय बाकी पी.एल.जी.ए. के साथी मुकाबला करते हुए पीछे हटे थे, कॉमरेड अशीष को घायल अवस्था में पुलिस द्वारा पकड़ कर क्रूर यातना देकर बाद में हत्या कर दी गयी, इस घटना के कुछ दिन पहले ही सिमडेगा सबजोन से सबजोन सदस्य दीपक संगठन छोड़कर भाग खड़े हुए थे और इस घटना के कुछ ही दिन पहले एक एसी सदस्य समीर को सिमडेगा के साथी का गुमला जाने का समाचार गुमला के साथियों को देकर फिर सिमडेगा वापस जाने का था, लेकिन नहीं गया, रास्ता से ही गुम हो गया। समीर ही ये समाचार पुलिस या दीपक को दिया है। सबजोन सदस्य तिलकमैन उर्फ दीपक और समीर की गद्दारी की वजह से ही कॉमरेड आशीष की शहादत हुई है।

कॉमरेड आशीष की उम्र करीब 35 वर्ष थी। उनका जन्म जहानाबाद जिले के मखदुमपुर थाना के माली बिगहा गांव में हुआ था। उनके घर का नाम बिजेन्द्र यादव था। उनका गांव उस समय तत्कालीन भाकपा (माले) पार्टी यूनिटी के सामंतवाद विरोधी संघर्ष का एक केन्द्र था। उस गांव के कुख्यात जमींदार राजा यादव के आतंक और दमन की वजह से पूरा गांव परेशान था। वह उस इलाके का एक सामंत और गुंडों का सरदार भी था, जिसे प्रशासन, पुलिस प्रशासन और राजनीतिक पार्टियों खासकर तत्कालीन लोकसभा सदस्य सुरेन्द्र यादव का भी संरक्षण प्राप्त था। उस पूरे इलाके में उसकी सामंती धाक और आतंक की तूती बोलती थी। उसके आतंक और दमन की हालत यह थी कि उस इलाके में पहली बार आयोजित मजदूर किसान संग्राम समिति की आम सभा में छिपकर शामिल होने गए एक ग्रामीण की उसने तुरंत हत्या कर दी थी। उस जमींदार के खिलाफ संघर्ष में व्यापक जनता गोलबंद हुई। कॉमरेड आशीष का पूरा परिवार शुरुआती दौर से ही संघर्ष के साथ में था। राजा यादव के खिलाफ संघर्ष में शामिल होने की वजह से कुख्यात राजा यादव ने अपने तमाम विरोधियों को गांव से भगा दिया। इस दौरान कॉमरेड आशीष के पूरे परिवार को भी वहां से विस्थापित होना पड़ा। इसके बाद पार्टी की मदद से उनके पूरे परिवार को भगवानगंज थाने के नगौली में बसाया गया। उनके पिता कॉमरेड राजनाथ यादव भी एक स्थानीय दस्ते का सदस्य थे। इन्होंने हमेशा राजा यादव के खिलाफ संघर्ष में अग्रणी भूमिका निभायी। एक दिन गांव के अगल-बगल में मौजूद होने की जानकारी के बाद राजा यादव ने अपने गुंडे के साथ 1988-1989 में ही उनकी हत्या कर दी थी। बाद में 1993 में जनता की सशस्त्र कार्रवाई में राजा यादव का सफाया किया गया। राजा यादव के खिलाफ संघर्ष 1989 से 1993 तक चला। इस दौरान तीसरे हमले में ही उसका सफाया किया जा सका। इसके बाद करीब 10-11 साल की उम्र में 1991 से ही कॉमरेड बिजेन्द्र पार्टी के संपर्क में रहे और उनका पूरा विकास क्रांतिकारी नेताओं के सानिध्य में हुआ। वे निरंतर क्रांति के पथ पर आगे बढ़ते गए। असल में क्रांति के रास्ते पर आगे बढ़ने की शुरुआती प्रेरणा उन्हें विरासत में अपने पिता से ही मिली। बाद में अपने कॉलेज के दिनों में कॉमरेड बिजेन्द्र छात्र संगठन में भी रहे। वे अपने दोस्तों के बीच काफी लोकप्रिय थे। उनका मिलनसार व्यवहार न केवल अपने दोस्तों को प्रभावित करता था बल्कि वे जिस परिवार में जाते थे, उस परिवार के लोग उनके अगली बार आने का इंतजार करते थे। उनके इस व्यवहार की वजह से कॉलेज के दिनों में उनके दोस्तों की फेहरिस्त भी काफी लंबी थी। अपने पढ़ाई के दौरान ही उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक्स की भी पढ़ाई की। बाद में तो उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक्स के कामकाज में महारत हासिल कर ली।

इलेक्ट्रॉनिक्स के कामकाज में उनकी दक्षता और रुचि को ध्यान में रखते हुए पार्टी ने उन्हें तकनीक और संचार विभाग के कामकाज का एक हिस्सा बना दिया। उस दौरान भी उन्होंने अपनी जिम्मेवारी को काफी बेहतर तरीके से निभाया। इस दौरान उन्होंने कई नये-नये प्रयोग भी किये। इस दौरान वे दुश्मन का निशाना भी बने और दुश्मन ने एक लंबी अवधि तक उनके चारों तरफ घेरा बनाए रखा और उनके जरिए नेतृत्व तक पहुंचने की हर संभव कोशिश की। कॉमरेड आशीष ने अपनी व्यवहार कुशलता से इस घेरे को तोड़ा और

उससे बाहर निकले। कॉमरेड आशीष के व्यवहार कुशलता को हम इस बात से ही समझ सकते हैं कि दुश्मन के घेरे में उन्होंने अपने व्यवहार से उनको भी जीत लिया और उनके दमन के लिए नियुक्त जासूस भी अपनी कुछ खरीददारी के लिए उनपर निर्भर हो गए। इस घेरे को तोड़कर कॉमरेड आशीष ने 2012 में झारखंड में साथियों से संपर्क बनाने में सफलता हासिल कर ली और 2012 में वे पूरी तरह से ग्रामीण इलाके में कामकाज में शामिल हो गए। इलाके में आने के बाद कुछ ही महीनों में सैनिक मामले में दक्षता हासिल की और उन्होंने एक बेहतर कम्युनिस्ट के रुप में खुद को विकसित किया। कॉमरेड आशीष के समर्पण, व्यवहार कुशलता और उनके राजनीतिक समझ को ध्यान में रखते हुए 2013 में बिहार-झारखंड स्पेशल एरिया कमिटी के सदस्य के रुप में उन्हें शामिल किया गया और उन्हें सिमडेगा में कामकाज के विस्तार की जवाबदेही सौंपी गयी। कॉमरेड आशीष से जो भी एक बार मिलता वह उनके व्यवहार और उनकी सादगी का मुरीद बन जाता था। वे अपने तमाम साथियों के बीच भी काफी लोकप्रिय थे। 2013 से ही कॉमरेड आशीष अपनी इस जवाबदेही का बखूबी निर्वहण कर रहे थे। इलाके में जाने के बाद से ही कॉमरेड आशीष दुश्मन की निगाह में थे और उन्हें अपने जाल में फंसाने की वह हर संभव कोशिश कर रहा था। कॉमरेड आशीष एक हंसमुख स्वभाव के व्यक्ति थे और हर कठिन परिस्थितियों का बहादुरीपूर्वक सामना करने के लिए तैयार रहते थे। जो भी जिम्मेवारी उनको दी जाती थी उसे पूरा करने के लिए हर संभव कोशिश करते थे। इस बार उनका गुमला की तरफ आना भी कठिन परिस्थितियों में भी अपनी जिम्मेवारी को पालन करने की उनकी जवाबदेही का ही एक हिस्सा था। राजनीतिक सवाल हो या सैनिक सवाल, वे हर मसले पर खुले तौर पर अपनी राय रखते थे। उनके अंदर समर्पण की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। सामंती गुंडा राजा यादव द्वारा उनके परिवार को गांव से बाहर कर देने के बाद से उनका परिवार दूसरी जगह पर काफी संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में अपना जीवन-यापन कर रहा था। उनका परिवार काफी कठिन परिस्थितियों में रह रहा था, इसके बावजूद उन्होंने अपने क्रांतिकारी मिशन में इसको कभी भी बाधा नहीं बनने दिया। जिस दिन से उन्होंने अपने जीवन को क्रांति को समर्पित कर दिया, इसके बाद उन्होंने कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखा और क्रांति के पथ पर निरंतर आगे बढ़ते गए। यह जानते हुए भी कि उनकी वर्तमान जवाबदेही काफी कठिन और चुनौती भरा है, वे कभी भी इसका सामना करने में पीछे नहीं हटे। अपने दो भाई और एक बहन में वे सबसे छोटे थे। वे अपने पीछे अपनी विधवा मां, एक भाई और बहन को छोड़ गए हैं। वे अब तक अविवाहित थे। उनकी सादगी और समर्पण तमाम कम्युनिस्ट और पार्टी कतारों के बीच एक आदर्श के रुप में कायम रहेगा और तमाम साथियों को राह दिखाने का काम करेगा। कॉमरेड आशीष की शहादत क्रांतिकारी आंदोलन के लिए एक बहुत ही भारी क्षति है। दमन के इस दौर में इसकी तात्कालिक भरपाई काफी मुश्किल है, लेकिन हम अपने तमाम साथियों की शहादत को ताकत में बदलकर आगे बढ़ने के लिए मजबूर हैं और कॉमरेड आशीष की शहादत भी इसी प्रक्रिया का एक हिस्सा है और हमें यह संकल्प लेना है कि हम कॉमरेड आशीष की शहादत को संकल्प में बदलकर आगे बढ़ेंगे।

कॉमरेड आशीष की शहादत की खबर एक ऐसे समय में आयी है, जब तमाम साथी पार्टी की 12वीं वर्षगांठ को मनाने की तैयारी में जुटे थे। यह हत्या वास्तव में शासक वर्गों के उस संपूर्ण युद्ध अभियान 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' का ही एक हिस्सा है, जिसमें शासक वर्ग दमन और हत्या के जरिए पूरे माओवादी आंदोलन को नेस्तनाबूद करने की कोशिश कर रहा है। इसके लिए लाखों केन्द्रीय बलों के अलावा राज्य के बल, कोवर्ट साजिश और टीपीसी, जेजेएमपी जैसे सशस्त्र खुफिया गिरोह भी शामिल हैं। नेतृत्व के खात्मे के लिए पैसे के जरिए कोवर्ट ऑपरेशन ही प्रमुख तरीका है। इस बात की ज्यादा गुंजाइश है कि कॉमरेड आशीष की शहादत भी इस कोवर्ट ऑपरेशन का ही एक हिस्सा है। कॉमरेड आशीष इस हमले का एक प्रमुख निशाना भी थे ताकि उस इलाके के कामकाज को ज्यादा से ज्यादा प्रभावित किया जा सके।

केन्द्र और झारखंड में भाजपा सरकार के सत्ता में आने के बाद से ही इस युद्ध अभियान को और तेज किया गया है और तमाम इलाकों में केन्द्रीय बलों का अभियान नियमित रूप से चलाया जा रहा है। इस युद्ध अभियान का प्रमुख निशाना नेतृत्व को खत्म करना है। आज तमाम क्षेत्रों में आम जनता से लेकर प्रतिरोध की तमाम ताकतों पर शासक वर्ग के हमले में भारी वृद्धि हुई है। एक तरफ सीएनटी-एसपीटी और स्थानीय कानून में संशोधन के जरिए आदिवासियों को जल-जंगल-जमीन से बेदखल करने की कोशिश की जा रही है तो दूसरी तरफ इसके प्रतिरोध में खड़े होने वाली तमाम ताकतों पर भीषण हमले किए जा रहे हैं। इसके अलावा दलितों-अल्पसंख्यकों पर हमलों में भी लगातार तेजी आयी है। ऐसे में प्रतिरोध की तमाम ताकतों को संगठित करते हुए एक दिशा देने का कार्यभार भी हमारी पार्टी के कंधों पर आ पड़ी है और प्रतिरोध के तमाम स्वरुप को संगठित करने का कार्यभार भी हमारे सामने है। ऐसे समय में कॉमरेड आशीष की शहादत हमारे लिए काफी नुकसानदायक है। लेकिन अब तक हम अपने तमाम साथियों की शहादत को पथ प्रदर्शक के रुप में लेते हुए हमेशा अपने शोक को ताकत में बदलते हुए आगे बढ़ते रहे हैं। हम कॉमरेड आशीष की शहादत से उभरे शोक और क्षोभ को भी ताकत में बदलकर इस दमन अभियान को हरायेंगे।

अमर शहीद कामरेड संग्राम मुर्मू उर्फ श्यामलाल को शत्-शत् लाल सलाम!

विगत अक्टूबर 2016 में झारखंड रीजनल कमेटी के वरिष्ठ व अनुभवी सदस्य कामरेड संग्राम मुर्मू 63 वर्ष की उम्र में ही हम सबों को छोड़कर हमेशा के लिए चल बसे। समय से पहले उनकी यह मृत्यु हमारी पार्टी के लिए और खासकर बीजे सैक अंतर्गत झारखंड रीजन के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

कामरेड संग्राम मुर्मू का जन्म सन् 1953 में एक आदिवासी गरीब किसान परिवार में हुआ था। उनका जन्म स्थान मौजूदा झारखंड के धनबाद जिला अंतर्गत टुण्डी थाना के दो-मुंडा गांव में था। वे मैट्रीक तक की पढ़ाई पूरा कर गरीबी हालत के कारण खेती-बारी के काम में जुट गए। अलावे, जब खेती का काम नहीं रहता था उस समय बतौर ठेका मजदूर के रुप में भी काम करते थे। इस रुप से बाद में निम्न-मध्यम किसान के स्तर पर आए। उसी वक्त उनकी शादी भी हुई। पर, कामरेड संग्राम मुर्मू उसी समय से उस इलाके में 1970 से जो क्रांतिकारी प्रचार व कामकाज शुरू हुआ था उसके प्रति आकर्षित हुए और उस काम काज के साथ आंशिक समय देकर जुट भी गए। इस रुप से लगभग दो वर्षों तक लगन से काम करने के बाद उनके राजनीतिक विकास को देखते हुए उन्हें पार्टी मेम्बरशीप (या सदस्यता) दिया गया और वे इसी बीच पेशेवर क्रांतिकारी भी बन गए। उनकी पत्नी कामरेड संग्राम को राजनीति में दिलचस्पी लेते देख काफी नाराज हुई और अंत में उन्हें छोड़कर चली गई।

तब तक शिबु सोरेन व बिनोद बिहारी के नेतृत्व में झारखंड मुक्ति मोर्चा का गठन होकर 1973-74 के कुछ जुझारू नारे, जैसे: ''मारो महाजन, मारो दरोगा; कैसे लेंगे झारखंड, लड़के लेंगे झारखंड; वोट से नहीं, चोट से लेंगे झारखंड'' के आधार पर जुझारू झारखंड आंदोलन की शुरूआत हुई। हमारी पार्टी उस आंदोलन का समर्थन व सहानुभूति के दृष्टिकोण से देखते हुए उस आंदोलन के साथ जुट गई और झामुमो के शीर्ष नेतृत्व की सुविधावादी व सुधारवादी लाइन के साथ एकता-विरोध-एकता के उसूल के मुताबिक द्वि-पक्षीय संबंध बनाए रखा। उसी समय लगभग 1975 में इंदिरा गांधी द्वारा आपातकाल की घोषणा के बाद शिबु सोरेन को गिरफ्तार कर लिया गया और शिबु सोरेन खुद भी इंदिरा गांधी के 20 सूत्री कार्यक्रम का पूरा समर्थन देकर झारखंड आंदोलन को पूरी तरह से बंद करने का ऐलान किया और इस रूप से झारखंड आंदोलन के साथ बेइमानी कर बैठा।

सन् 1980 के दशक के बीच के समय से पुन: झारखंड आंदोलन का सिलसिला शुरु हुआ। तब तक नक्सलवादी क्रांतिकारी आंदोलन भी बिहार-झारखंड के बहुत जिलों में जोर-शोर से चल रहा था। इसी बीच झामुमो के लड़ाकू कार्यकर्ताओं को पुन: झारखंड आंदोलन को, उसमें घुसे गलत तत्वों को निकाल बाहर कर, पुन: झारखंड आंदोलन को आगे बढ़ाने में कामरेड संग्राम मुर्मू बहुत कारगर भूमिका निभाए।

इसी क्रम में वे झामुमो के केंद्रीय सम्मेलन के जरिए केंद्रीय समिति के एक सदस्य के रूप में चुने गए। पर, कुछ दिनों के अंदर शिबु सोरेन तत्कालीन शासक पार्टी के साथ कुर्सी पाने के लालच में सांठ-गांठ कर नक्सलवादी क्रांतिकारियों को गिरफ्तार करवा देने, मारपीट करने और ऐसा कि हत्या करने जैसा चरम प्रतिक्रियावादी कामों को अंजाम देने के काम में उतर पड़ा। उसी हालत में कामरेड संग्राम मुर्मू को भी गुप्त (UG) होकर क्रांतिकारी किसान संग्राम को आगे बढ़ाने के काम में लग जाना पड़ा। वे एरिया कमेटी से शुरू कर अंत तक झारखंड रीजनल कमेटी का सदस्य बने। मृत्यु तक वे उस रीजलन कमेटी के सदस्य की हैसियत से अपना जिम्मा बखूबी निभाए।

का. संग्राम मुर्मू सबसे पहले अपने घर इलाके यानी टुण्डी व गोविंदपुर इलाके से शुरू कर गिरिडीह व हजारीबाग जिले के विभिन्न रणनीतिक क्षेत्रों में काम करते हुए पार्टी की रणनीतिक क्षेत्र बनाने की योजना के अनुसार ओड़िशा के मयूरभंज के बांगरी पोसी पहाड़ी क्षेत्र में भी कामकाज किए। वहां से ही वे गिरफ्तार हो गए और दो वर्षों तक जेल जीवन बिताने के बाद पुन: निकल आए और दूसरे क्षेत्र के काम के साथ जुट गए। 2015 में उनका जिम्मा पूर्वी बिहार-पूर्वोतर झारखंड के अंतर्गत बहुत ही महत्वपूर्ण जोन संथाल परगना जोन क्षेत्र में दिया गया। वहां पहले वे ब्रेन मलेरिया से पीड़ित हुए और उससे कुछ ठीक-ठाक होने के बाद पुन: डायरिया बीमारी से पीड़ित हो गए और लगातार उल्टी और पतला पैखाना होने लगा। उस जोन के एक गांव में रहते हुए ही स्थानीय डॉक्टर से इलाज करवाने से कुछ ठीक तो हुआ। पर, लगातार ब्रेन मलेरिया व डायरिया हो जाने से और लगभग 26/27 वर्षों तक ग्रामीण क्षेत्र में काफी गरीब व आदिवासी जनता के बीच जिंदगी बिताने के कारण और तब तक 63 वर्ष की उम्र में पहुंच जाने के कारण और शरीर में खून की कमी होने के कारण दो/चार दिन बीतते न बीतते ही उनके जीभ व गर्दन में सूजन आ गया। अंतत: 3 अक्टूबर 2016 को हम सबों को छोड़कर सदा-सदा के लिए विदा हो गए। अमर शहीद कामरेड संग्राम मुर्मू उर्फ श्यामलाल को पार्टी के

मर्यादानुसार अंतिम विदाई दिया गया और उनके पार्थिव शरीर को पार्टी कतारों और क्रांतिकारी जनता ने मिलकर अंतिम दाह संस्कार किया।

कामरेड संग्राम आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनका जीवन हमारे लिए एक आदर्श के समान है। वे एक जबरदस्त संगठक होने के साथ-साथ जनता के गीत लिखते व पूरे मन से गाते भी थे। वे रेडियो हो या समाचारपत्र या फिर कोई पत्रिका, तमाम तरह के खबरों पर पैनी निगाह रखते थे और तुरंत तथ्यों को समेटकर अपने नोटबुक में कैद कर लेते थे। उनके पास आपको पुराने से पुराने खबरों के संकलन भी मिल जाते। वे झारखंड रीजनल कमेटी का सदस्य होने व 60 वर्ष के होने के बावजूद भी संतरी की ड्यूटी मुस्तैदी के साथ निभाते थे। सामान लाने व ले जाने में भी उन्होंने अपने उम्र को कभी आड़े नहीं आने दिया। इसके साथ ही उनका सादा जीवन भी हमारे पीएलजीए के लिए एक आदर्श के समान है। एक ही कपड़े को कई वर्षों तक चलाना, कभी भी अपने लिए कोई डिमांड न करना, सभी से सरल व्यवहार करना जैसे सर्वहारा गुण उनसे हमें जरूर सीखना चाहिए। मालेमा पर भी उनकी पकड़ अद्भुत थी। उन्होंने पार्टी के कई पर्चे का संथाली व खोरठा में अनुवाद भी किया था। सही मायने में उनका जीवन पार्टी व क्रांति के लिए समर्पित था।

हम सभी कोई उनके सपने को व अधूरे कार्यों को अवश्य-ही पूरा करेंगे। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। आवें, उनके जीवन से प्रेरणा लेकर क्रांति की मौजूदा परिस्थिति का उचित ढंग से मुकाबला कर क्रांति को उसकी अंतिम मंजिल तक आगे बढ़ाने के लिए जी-जान से प्रयास करें।

अमर शहीद कामरेड सोमेन दा को शत्-शत् लाल सलाम!

विगत 3 अगस्त, 2016 को कामरेड सोमेन दा हमलोगों को हमेशा के लिए छोड़ कर चले गये। उनकी आकस्मिक मृत्यु से पश्चिम-बंग में हमारे क्रांतिकारी आंदोलन को अपूरणीय क्षति हुई है। 1968 में नक्सलबाड़ी संघर्ष के समकालीन समय से ही इस क्रांतिकारी कम्युनिस्ट आंदोलन में एक सक्रिय कार्यकर्त्ता के रुप में उन्होंने भाग लिया था। उस समय दक्षिण देश पत्रिका के माध्यम से कामरेड सोमेन दा पहली बार इस आंदोलन के बारे में समझ पाये थे। 1969 में सीपीआई (एम-एल) बनने के बाद कामरेड सोमेन दा इस पार्टी में शामिल हुए थे। उस समय क्रांतिकारी छात्र-युवा के नेतृत्व में खड़दाह इलाके के एक आंदोलन में व्यापक जनता शामिल हुई थी। उस आंदोलन में कामरेड सोमेन दा भी शामिल थे। 70 के दशक में वे हमारी पार्टी के संस्थापक व शिक्षक कामरेड चारु मजुमदार और कामरेड कन्हाई चटर्जी के संपर्क में आये और उसी समय उन्हें कामरेड सरोज दत्त से भी मिलने का मौका मिला। शोषक वर्ग ने आंदोलन के खिलाफ में तीव्र राष्ट्रीय आतंक-दमन चलाया था। 70 के दशक में उस आंदोलन में बहुत से कामरेड शहीद हुए थे। बहुत को गिरफ्तार कर लिया गया और पुलिस हिरासत में क्रूर यातना दी गयी। उस समय 1973 में कामरेड सोमेन दा को भी गिरफ्तार कर लिया गया था। पुलिस हिरासत में क्रूर अत्याचार के बाद भी क्रांति के प्रति उनकी आस्था बनी रही और जेल में भी उन्होंने कई संघर्षों में भाग लिए। 1975 में उन्हें जेल से मुक्त कर दिया गया। जेल से रिहा होने के बाद उन्होंने कुछ दिनों तक कारखाना में काम किया। वहां ट्रेड यूनियन के द्वारा मजदूरों को उन्होंने नक्सलबाड़ी क्रांति की राजनीति में शामिल करने की कोशिश किये। बाद में कारखाना से निकाल दिये गये मजदूरों को भी संगठित करने का प्रयास किये। मजदूर आंदोलन के समय वे सीपीआई (एम-एल) के उत्तर चौबीस परगना जिला कमेटी नाम से कौशिक बनर्जी के प्रभावाधीन छोटे दल के साथ काम किये। कुछ ही दिनों के भीतर उन्होंने वहां के नेतृत्व में दक्षिणपंथी सुविधावादी चरित्र को पहचान लिया। अत: कौशिक बनर्जी जब फिर से सीपीआई (एम-एल) के साथ एकीकृत होने लगा तब वे शामिल नहीं हुए। उसके बाद उन्होंने नक्सलबाड़ी संघर्ष के सच्चे कम्युनिस्ट क्रांतिकारी शक्तियों के साथ एकजुट होना उचित समझा। राष्ट्रीय आतंक-दमन का मुकाबला करते हुए क्रांतिकारी संघर्ष को आगे बढ़ाने के प्रश्न को लेकर क्रांतिकारी शिविर में अनेक राजनीतिक पार्टियां एकजुट हुई थीं। कुल मिलाकर तीन धाराओं में अनेक शक्तियां काम कर रही थी। एक दल नक्सलबाड़ी संघर्ष में हुई गलतियों का मूल्यांकन के नाम से उसकी क्रांतिकारी अंतर्वस्तु को छोड़कर निर्वाचन (चुनाव) की राजनीति में उतर पड़ा और क्रांतिकारी रास्ता को त्याग कर सशस्त्र संघर्ष को जन संगठन में परिवर्तित कर दिया। दूसरा दल नक्सलबाड़ी संघर्ष का मूल्यांकन करके द्वंद्वात्मक तरीके से उस संघर्ष में हुई गलती को चिन्हित करने के लिए सहमत नहीं था। तीसरा दल नक्सलबाड़ी के लाइन को नहीं मानकर संशोधनवादी लाइन को ही अनुसरण करने में लगा हुआ था। वहीं कुछ अल्पसंख्यक सच्चे क्रांतिकारी लोग इस आंदोलन को द्वंद्वात्मक तरीके से वस्तुगत सार-संकलन करके दिखा दिये कि नक्सलबाड़ी संघर्ष के सही दिशा प्रधान होने से भी रणनीतिक रुप से इस आंदोलन में बहुत कुछ गलतियां थीं।

सही मूल्यांकन के सवाल पर, जन आंदोलन खड़ा करने के सवाल पर, संघर्ष में पर्याप्त नारा देने के सवाल पर बहुत कुछ गलतियां थीं, जिसे दरकिनार करते हुए नक्सलबाड़ी की मूल शिक्षा को अनुसरण कर रणनीतिक रूप से नक्सलबाड़ी ने भारतीय क्रांति की जो दीर्घकालीन जनयुद्ध की लाइन तय की थी, उस लाइन को पश्चिम-बंग में मूल रूप से दो संगठन प्रतिनिधित्व कर रहे थे, वे हैं सीपीआई (एमएल) पीयू और एमसीसी। ये संगठन पश्चिम-बंग में ही नहीं, बल्कि बिहार और झारखंड में भी आंदोलन खड़ा करने के लिए सक्रिय थे। इसी धारा के एक अन्य संगठन सीपीआई (एम-एल) पीडब्ल्यू. आंध्र-तेलंगाना में सक्रिय था। कामरेड सोमेन दा क्रांतिकारी धारा के एक अन्य संगठन सीपीआई (एमएल) पीयू में अपना योगदान दिये, उस समय वे पहले मजदूर आंदोलन में हिस्सा लिये, उसके बाद पार्टी के निर्देश में उत्तर-बंग के मालदा इलाके में किसान संघर्ष में हिस्सा लिये।

राज्य कमेटी के एक सदस्य के रुप में पूरी जिम्मेदारी के साथ उन्होंने पार्टी का काम सम्भाला और देहाती इलाके में सामंतवाद विरोधी संघर्ष को विकसित करने में विशेष भूमिका निभाई थी। 1998 में सीपीआई (एम-एल) पीडब्ल्यू. और पीयू दोनों संगठनों के विलय से नयी एकताबद्ध पार्टी सीपीआई (एम-एल) पी. डब्ल्यू. बना। पीयू ने 1995 से घोषित रुप से पश्चिम-बंग में काम करना शुरु किया था। एक ओर पीयू नदिया, मालदा, मुर्शिदाबाद इलाके में अपने काम को केन्द्रित कर किसान संघर्ष खड़ा करने की कोशिश कर रही थी, वहीं शुरु से पी. डब्ल्यू. बंगाल, झारखंड और ओड़िसा के सीमावर्ती इलाके को केन्द्रित कर गुरिल्ला जोन बनाने के लक्ष्य के साथ संघर्ष को आगे बढ़ा रहा था। जबकि, एमसीसी का पहले से ही इन इलाकों में काम चल रहा था, उस काम को बिहार-झारखंड स्पेशल एरिया कमेटी गाइड कर रही थी। इसके अलावे हुगली और सुन्दरवन इलाके में भी एमसीसी के नेतृत्व में किसान संघर्ष चल रहा था। जो भी हो, दोनों संगठनों की प्रत्यक्ष पहलकदमी से ही उन इलाके में वर्ग संघर्ष को सशस्त्र संघर्ष में विकसित करते हुए गुरिल्ला क्षेत्र बनाने के लिए संघर्ष जारी था। साथ ही विभिन्न तरह के मुद्दों को लेकर आंदोलन के माध्यम से क्रांतिकारी लोग जनता को एकजुट करने का प्रयास जारी रखे हुए थे।

इस प्रकार एक समय सीपीआई (एम-एल) पीडब्ल्यू. और पीयू के एक होने के कारण बिहार-झारखंड-ओड़िसा के इलाके का एक बड़ा हिस्सा एकताबद्ध क्रांतिकारियों के नेतृत्व के अधीन आने से किसान आंदोलन और तेज हुआ। सन् 2000 से बिहार-झारखंड-ओड़िसा-पश्चिम बंग इलाकों में किसान संघर्ष ज्यादा से ज्यादा सशस्त्र-संग्राम का रुप धारण करने लगा। स्थानीय नियमित गुरिल्ला स्कवाड के नेतृत्व में व्यापक जन-आंदोलन को और तेज करने की रणनीति अपनायी गयी। आलू बॉण्ड घोटाला को लेकर आंदोलन, जंगल बचाओ मांग को लेकर आंदोलन, साल पत्ता, साबइ घास और केंदू पत्ता के मूल्य में वृद्धि को लेकर आंदोलन, जमीन दखल आंदोलन इत्यादि के साथ-साथ सामाजिक फासीवादी सीपीएम के आतंक के विरोध में सशस्त्र संघर्ष शुरु हुआ। स्वाभाविक रुप में वहां राष्ट्रीय आतंक और भी तीव्र हो रहा था। मेदिनीपुर, पुरुलिया, बांकुड़ा इत्यादि के साथ विशाल इलाके, मुख्य रुप से नदिया, मुर्शिदाबाद, मालदा, हुगली और बिरभूम में पुलिस एमसीसी और पी. डब्ल्यू. के कार्यकर्त्ता और नेतृत्व को अन्यायपूर्ण तरीके से दमन करती रही। इस तीव्र राष्ट्रीय आतंक-दमन के समय हमारे नेतृत्व को उस संघर्ष को अच्छा नेतृत्व देकर आगे बढ़ाने की जरूरत थी और उस राष्ट्रीय आतंक और सामाजिक आतंक का मुकाबला करते हुए सशस्त्र संघर्ष आगे बढ़ाना था। अपनी कमियों को दूर कर पार्टी को बोल्शेवीकरण करते हुए परिस्थिति का सही विश्लेषण कर पार्टी के नेतृत्व में चल रहे क्रांतिकारी किसान संघर्ष को आगे बढ़ाना था। जब पार्टी के राज्य कमिटी के अधिकांश सदस्य मनोगतवाद और गैर-सर्वहारा रूझान को प्रधान समस्या के रूप में चिन्हित कर पार्टी को बोल्शेवीकरण करना चाहा, तब राज्य सचिव मानिक ने विपरीत दलील दिया, जिसमें उन्होंने मनोगतवाद को नहीं बल्कि स्वत:स्फूर्तता को प्रधान समस्या के रूप में चिन्हित किया और मजदूर वर्ग के नेतृत्व के अंदर छिपी अंतर्वस्तु में क्रांतिकारी और कृषि-क्रांतिकारी संघर्ष को ही इनकार करने की लाइन को जाहिर किया। इससे पार्टी के संघर्ष में एक नया संकट उभर आया। राज्य सचिव मानिक की यह लाइन असल में संशोधनवादी लाइन थी। ऐसी संकटमय परिस्थिति में कामरेड सोमेन दा पार्टी को नेतृत्व देने के लिए आगे आए। मालदा प्लेनम में मानिक के इस संशोध नवादी लाइन के विरोध में तार्किक संघर्ष में दृढ़ता के साथ एक सही कृषि-क्रांति की लाइन के पक्ष में खड़ा होकर अगले कार्यसूची को दृढ़ता के साथ कृषि-क्रांति में रूपांतरण करने के लिए पूरी कोशिश किये थे। इसके बाद मानिक पार्टी के अंदरूनी तर्क-वितर्क में और ज्यादा दिनों तक टिक नहीं पाया तथा राज्य कमिटी की अगली बैठक में उपस्थित नहीं होकर अपना त्याग पत्र भेज दिया और मीडिया के माध्यम से अपना पद त्यागने की घोषणा कर दिया। वास्तव में उन्होंने राज्य कमिटी को एक संकटमय परिस्थिति में छोड़कर ऐसा किया। इस परिस्थिति में राज्य कमिटी ने कामरेड सोमेन दा की राजनीतिक योग्यता को देखते हुए अपना सचिव मनोनित किया और उनके नेतृत्व में बैठक का संचालन कर आगे की रणनीति तय की गयी। कामरेड सोमेन दा के नेतृत्व में राज्य कमेटी बीजेओ के साथ और भी इलाके में किसान संघर्ष को

उन्नत स्तर में ले जाने में सक्षम हुआ था।

खासकर सन् 2004 में सीपीआई (एम-एल) पी. डब्ल्यू. और एमसीसीआई के महामिलन होने से सीपीआई (माओवादी) का गठन होने के बाद पूरे देश में क्रांतिकारी कम्युनिस्ट आंदोलन एक ऐतिहासिक दौर में प्रवेश किया। तब बीजेओ के इलाके के संघर्ष को एक नयी गति मिली, जिससे पश्चिम-बंग के शोषित-पीड़ित मेहनतकश जनता को भी एक नयी प्रेरणा मिली। ऐतिहासिक लालगढ़ आंदोलन भी उसी का धारावाहिक रूप था। सन् 2004 में एकीकृत पार्टी गठन होने के बाद राज्य कमेटी का सचिव कामरेड तापस दा को बनाया गया, लेकिन कुछ ही दिनों के भीतर, पश्चिम-बंग के क्रांतिकारी आंदोलन में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभा रहे पोलित ब्यूरो सदस्य कामरेड वरूण दा और एक महत्वपूर्ण सदस्य कामरेड प्रतुल दा के साथ कामरेड तापस दा गिरफ्तार हो गये। बाद में शोषक वर्ग की साजिश के तहत उन्हें आजीवन कारावास की सजा दी गई। साथ ही अस्वस्थ कामरेड वरुण दा को भी पांच वर्ष की सजा दी गई और बाद में भी अनेक फर्जी मुकदमों में फंसाकर दीर्घ दिन तक जेल में रहने के लिए विवश कर दिया और बिना इलाज के इस प्रवीण कम्युनिस्ट नेता को तिल-तिल मृत्यु की ओर धकेल कर जीवन के आखिरी क्षण में जेल से रिहा कर दिया गया। जेल से रिहा होने के कुछ ही दिनों के भीतर कामरेड वरुण दा शहीद हो गये। जीवन के आखिरी क्षण में भी वे पार्टी और क्रांति के प्रति आस्था बनाये रखे और कष्टपूर्ण जीवन में भी क्रांतिकारी जनता के बीच में अपने लेख के माध्यम से क्रांति को आगे बढ़ाने में मदद किये। जबकि, कामरेड तापस दा और कामरेड प्रतुल दा अब भी जेल में बंद हैं। इन कामरेडों की गिरफ्तारी के बाद कामरेड सोमेन दा को पुनः पार्टी की ओर से राज्य सचिव नियुक्त किया गया। कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने हँसते हुए पार्टी का कार्यभार संभाला। राज्य कमिटी की ओर से उत्तर-बंग और कलकत्ता में पार्टी कार्य की जिम्मेदारी मिलने से भी बीजेओ इलाके में कार्यरत कामरेडों के साथ प्रत्यक्ष रुप से रहकर उन्हें विभिन्न समय में मदद किये। राज्य कमिटी की ओर से सिंगुर-नंदीग्राम में संघर्ष के दौरान उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। उनके नेतृत्व में चलाए गए आंदोलन ने ही बाद में लालगढ़ आंदोलन को जन्म दिया। ऐतिहासिक लालगढ़ आंदोलन उठ खड़ा होने से पहले ही दुश्मन ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और बाद में झूठे मामलों में फंसाकर करीब 7 वर्षों तक जेल में रखा। उनमें झारखंड के भी कई मामले शामिल थे, इस तरह झूठे मामलों के चलते उन्हें कई जेलों में रहना पड़ा। जेल प्रशासन ने बीमार सोमेन दा को ठीक से ईलाज तक नहीं किया। जिस बिमारी के चलते जेल में उनकी मृत्यु हुई, उसका डायग्नोसिस तक सरकार नहीं कराई और एक षड़यंत्र के तहत जेल में ही उनकी हत्या कर दी गई।

कामरेड सोमेन दा जीवन के आखिरी क्षण तक क्रांतिकारी ओन्दलन के साथ जुड़े रहे, इसलिए सीपीआई (माओवादी) की ओर से पश्चिम-बंग राज्य कमिटी उन्हें क्रांतिकारी लाल अभिनंदन पेश कर रही है। पश्चिम-बंग के माओवादी आंदोलन के उतार-चढ़ाव के दौर में भी कामरेड सोमेन दा ने एक कुशल नेतृत्व का परिचय दिये। मजदूर आंदोलन से शुरु कर किसान आंदोलन में जन संघर्ष, सशस्त्र संघर्ष और सैद्धांतिक संघर्ष में भी वे हमारे आदर्श नेता थे। मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद में मजबूत पकड़ होने के साथ-साथ तार्किक संघर्ष में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान था। राज्य सचिव के रुप में विभन्न समय में महत्वपूर्ण राजनीतिक हस्तक्षेप किये। उनका जीवन काफी सरल व सहज था। गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध में बदलने के लक्ष्य से संघर्षरत कामरेड उनके जीवन से काफी कुछ सीख सकते हैं। खासकर कठिन परिथितियों में संकीर्णतावाद को छोड़कर अनुशासित रुप से जनवादी केंद्रियता को अपनाते हुए व्यक्तिगत स्वार्थों को त्याग कर कुशल सेनापति का परिचय दिये। एक कम्युनिस्ट को कैसे अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को छोड़कर जनता और क्रांति के प्रति समर्पित रहना है, उसकी अच्छी मिसाल कामरेड सोमेन दा ने पेश की है। सीपीआई (माओवादी) की पश्चिम-बंग राज्य कमेटी शपथ लेती है कि दीर्घकालीन जनयुद्ध के रास्ते नवजनवादी क्रांति को सफल कर समाजवादी समाज की स्थापना करके ही हम कामरेड सोमेन दा समेत अनगिनत शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि पेश करेंगे।

''यदि किसी पार्टी की लाइन सही है तो चाहे उसके पास कोई सिपाही न हो तब भी उसके पास सिपाही हो जायेंगे; अगर उसके पास सत्ता न हो तो वह सत्ता हासिल कर लेगी। यदि किसी पार्टी की लाइन गलत है तो चाहे वह राष्ट्रीय और स्थानीय दोनों सरकारों और सेना का नियंत्रण करती हो, उसका पतन हो जायेगा।''

साभार

-कम्युनिस्ट पार्टी की बुनियादी समझदारी

लातेहार जिला के छिपादोहर थानान्तर्गत करमडीह गांव के पास बूढ़ा नदी (पथलगढ़वा) के किनारे शहीद हुए तमाम सात शहीदों को शत्-शत् लाल सलाम!

लातेहार जिला के छिपादोहर थानान्तर्गत करमडीह गांव के पास स्थित बूढ़ा नदी के किनारे दुश्मन पुलिस द्वारा घात लगाकर किए गए अचानक हमले में हमारी पार्टी के सात योद्धा कामरेड शहीद हो गए। यह शहादत भारत में नवजनवादी क्रांति के लिए जारी दीर्घकालीन जनयुद्ध को अपूरणीय क्षति है। हमारे इन सात साथियों की शहादत से पूरे देश के क्रांतिकारी जनता को आघात पहुंचा है, फिर भी हमारी पार्टी अपने आंखों से निकले आंसूओं को संकल्प में बदलकर और भी दृढ़ता से साथियों के शहादत का बदला लेने का प्रण लेती है।

प्राप्त सूचना के अनुसार, दुश्मन के तमाम घेराव-दमन का मुकाबला करते हुए हमारी पार्टी के कोयल-शंख जोनल कमेटी के द्वारा एक सैनिक प्रशिक्षण कैम्प का सफल आयोजन इस इलाके में किया गया था। सैनिक प्रशिक्षण की समाप्ति पर विभिन्न इलाके के साथी अपने-अपने इलाके में जाने के लिए 22 नवंबर, 2016 को निकले। प्रशिक्षण कैम्प से कुछ दूर जाने पर खाना बनाकर खाने के बाद रात्रि विश्राम किये। 23 नवंबर की सुबह 6 बजे उठकर कुछ दूरी चलकर बूढ़ा नदी के किनारे रूककर रोल कॉल करके डेरा डाला गया और सभी सेक्शन के साथी खाना बनाने में जुट गए। सभी सेक्शन को आर्क दिया गया और सभी सेक्शन से दो-दो साथी को करमडीह गांव रिपोर्ट लाने के लिए जाना तय हुआ, उसमें 10 साथी को जाना था। इसी बीच 6 साथी जल्दी ही यानी कि सुबह के 7:30 बजे ही तैयार होकर नदी पार कर जूता पहन रहे थे कि दुश्मन ने घात लगाकर एकदम नजदीक से ताबड़तोड़ गोलियों की बौछार कर दी, जिसमें हमारे तमाम उपस्थित 6 साथी मौके पर ही शहीद हो गए। हमारे साथियों को सम्भलने व गोली चलाने का भी मौका नहीं मिला। इधर सन्तरी पोस्ट पर अचानक दुश्मन ने हमला कर दिया, जिसमें सन्तरी पोस्ट पर तैनात कामरेड अनुप्रिया रिट्रीट होते समय गोली लगने के कारण शहीद हो गई। हम सिर्फ कामरेड अनुप्रिया के ही शव को कब्जा में ले पाए और क्रांतिकारी तौर-तरीके से श्रद्धांजलि देते हुए शव को दफना पाए।

शहीद हुए साथियों के नाम, उम्र, पार्टी स्तर, पार्टी उम्र, शिक्षा, वर्ग व पता -

(1) अमर शहीद कामरेड शैलेस उर्फ दीपक उर्फ श्याम सुंदर सिंह खेरवार, उम्र- 32 वर्ष, पार्टी स्तर- जोनल कमेटी सदस्य, पार्टी उम्र- 7 वर्ष, शिक्षा- 6ठी क्लास, वर्ग- गरीब किसान, ग्राम- सरदमदाग, थाना- मनिका, जिला- लातेहार (झारखंड)

(2) अमर शहीद कामरेड नागेन्द्र यादव, उम्र- 19 वर्ष, पार्टी स्तर- सबजोनल कमेटी सदस्य, पार्टी उम्र- 5 वर्ष, शिक्षा- 6ठी क्लास, वर्ग- गरीब किसान, ग्राम- बेलंगा, थाना- चंदवा, जिला- लातेहार (झारखंड)

(3) अमर शहीद कामरेड मनोज उरांव, उम्र- 22 वर्ष, पार्टी स्तर- एरिया कमेटी सदस्य, पार्टी उम्र- 4 वर्ष, शिक्षा- 7वीं क्लास, वर्ग- गरीब किसान, ग्राम- केरार, थाना- पेशरार (बगडू), जिला- लोहरदगा (झारखंड)

(4) अमर शहीद कामरेड हर्षू उर्फ हर्षनाथ, उम्र- 18 वर्ष, पार्टी स्तर- एरिया कमेटी सदस्य, पार्टी उम्र- 6 वर्ष, शिक्षा- साक्षर, वर्ग- गरीब किसान, थाना- चंदवा, जिला- लातेहार (झारखंड)

(5) अमर शहीद कामरेड सुकरा खड़िया, उम्र- 35 वर्ष, पार्टी स्तर- पार्टी सदस्य, पार्टी उम्र- 3 वर्ष, शिक्षा- साक्षर, वर्ग- गरीब किसान, ग्राम- गोइलकेरा, थाना- भरनो, जिला- गुमला (झारखंड)

(6) अमर शहीद कामरेड मनोज महतो, उम्र- 23 वर्ष, पार्टी स्तर- पीएलजीए सदस्य, पार्टी उम्र- 6 माह, शिक्षा- साक्षर, वर्ग- गरीब किसान, ग्राम- पकनी, थाना- चैनपुर, जिला- गुमला (झारखंड)

(7) अमर शहीद कामरेड अनुप्रिया, उम्र- 16 वर्ष, पार्टी स्तर- सेल सदस्य, पार्टी उम्र- 4 वर्ष, शिक्षा- 5वीं क्लास, वर्ग- गरीब किसान, ग्राम- कुमाड़ी, थाना- बिशुनपुर, जिला- गुमला (झारखंड)

इस पूरे घटनाक्रम में हमारे साथियों की गलती भी सामने आयी। दुश्मन सैकड़ों सीआरपीएफ व झारखंड पुलिस के साथ अपने मुखबिरों से हमारे पीएलजीए का पुख्ता समाचार पाकर 22 नवंबर की रात को ही पोजीशन ले लिया था, लेकिन हमारे साथियों को इसकी जानकारी नहीं हो पायी थी। फिर 23 नवंबर की सुबह में हमारे साथियों ने जहां डेरा डाला, उसके अगल-बगल जांच भी नहीं किया जबकि दुश्मन हमारे साथियों की सारी गतिविधियों पर नजर रख रहा था। साथ ही साथ दुश्मन हमारे आने-जाने के सारे रास्तों को

जानती थी। इस घटना में हमारे पीएलजीए का दो एसएलआर, एक इन्सास और तीन .315 बोर राइफल भी दुश्मन के पास चले गए। इस पूरे घटनाक्रम से हमें सीख मिलती है कि हमारे साथियों को कहीं भी डेरा डालने के पहले जरूर अगल-बगल जांच कर लेनी चाहिए।

आज जिस प्रकार केन्द्र की ब्राह्मणवादी हिन्दु फासीवादी मोदी सरकार व झारखंड की ब्राह्मणवादी हिन्दु फासीवादी रघुवर सरकार हमारे पार्टी को खत्म करने पर आमदा है और उसके प्रमुख सिपहसलार झारखंड के लंपट डीजीपी डी. के. पांडेय नित्य-प्रतिदिन हम पर पाशविक हमले चला रहा है। ऐसे वक्त में हमारे सात साथियों की शहादत जरूर ही हमारे लिए एक गहरा धक्का है। लेकिन इन साथियों के शहादत का बदला लेने का संकल्प लेते हुए जरूर हम दुश्मन को मुंहतोड़ जवाब देंगे और दीर्घकालीन जनयुद्ध के रास्ते आगे बढ़ते जाएंगे।

23 नवंबर, 2016 का दिन हम कभी नहीं भूलने और शहीद हुए साथियों के सपनों को साकार करने का संकल्प हमारी पार्टी दोहराती है, साथ ही साथ अश्रुपूरित आंखों से सभी शहीद साथियों को सच्ची श्रद्धांजलि पेश करती है।

मलकानगिरी के शहीदों की याद में एक पीएलजीए कामरेड की कविता

कामरेड, जब आपके क्षेत्र को मैंने देखा
तो वहां था उबड़-खाबड़ पहाड़
हरे-भरे जंगल ही जंगल
समुद्र की तरह चारों ओर पानी ही पानी।

वहां की जनता को नवीन पटनायक सरकार ने
पानी की मछली व जंगल के जानवर के समान
कर रखा है कैद
तब मैंने सोचा, यहां की जनता
जी रही है कठिन जिन्दगी
पानी बढ़ गया तो पहाड़ के उपर
पानी घट गया तो पहाड़ के नीचे
होती रहती है यहां की जनता।

कामरेड आप रहते थे उन
उबड़-खाबड़ पहाड़ों पर
लेकिन जनता के दुश्मनों ने
छीन लिया आपको हमारे हाथ से
आपकी शहादत की खबर हमें मिली
हमारी आंखें आंसुओं से भर आई।

कामरेड आपको बुला रही है
उन पहाड़ों की जनता
आह्वान कर रही है
सारी दुनिया की जनता
बेशक आपके शरीर को छीन लिया
आंध्र के ग्रेहाउंड्स के कुत्तों ने
पर आपकी सोच को कैसे छीन पाएंगे
जो बस गई है
जंगल-पहाड़ों के जनता के दिलों में
आपका खून जो सलेरू की धारा में बहा
लाल कर रहा है चित्रकोण्डा की पहाड़ियों को
जैसे सलेरू को बांधकर कोई न रख सका
सलेरू के पानी की तरह चित्रकोण्डा की जनता
क्रांति को अपनी मंजिल तक जरूर पहुंचाएगी।

जब आएगी 28 जुलाई
हर साल हम याद करेंगे आपको
आपके याद में जलाएंगे हम लाल आग
जलेगा लूटेरा निजाम
लाल आग की रोशनी से होगी नयी सुबह
जिसकी किरणें पहुंचेगी देश के कोने-कोने में
नयी सुबह बरसायेगी लाल बारिश
चलायेंगे हल किसान, उगाएंगे लाल फसल
तब बदलेगी दुनिया, बदलेगा समाज।

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के 50 वर्ष

(मालूम हो कि हमारी पार्टी भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) के महासचिव कामरेड गणपति ने चीन के महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति की पचासवीं वर्षगांठ को 16 से 20 मई 2016 तक मनाने का आह्वान किया था, साथ में आह्वान में देरी के लिए खेद प्रकट करते हुए उन्होंने इस दिवस को मई 2016 से मई 2017 के बीच में कभी भी मनाने की सलाह दी थी।

16 मई 1966 से प्रारंभ महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति समाजवादी चीन में कामरेड माओ और कम्युनिस्ट पार्टी के प्रत्यक्ष नेतृत्व में चलनेवाला एक अभूतपूर्व जनान्दोलन था। इसका लक्ष्य था, बुर्जुआ व अन्य प्रतिक्रियावादी संस्कृतियों के खिलाफ व्यापक मेहनतकश जनता को जागृत कर सांस्कृतिक अधिरचना के हर एक पहलू (विचारधारा, राजनीति, संस्कृति, नियम-कानून पुरानी आदतें आदि) को देश के समाजवादी आर्थिक बुनियाद के मुताबिक ढालना। जड़ जमाए हुए पूंजीवाद के राहगीरों के खिलाफ यह एक तीखा वर्ग संघर्ष था, इसने महान बहस के संशोधनवाद-विरोधी संघर्ष को आगे बढ़ाया और चीनी क्रांति के विकास के क्रम में एक नयी पड़ाव की शुरूआत की। समाजवाद का निर्माण और मजबूतीकरण कर साम्यवाद की तरफ बढ़ने में कामरेड माओ के सिखाए गए कथन को इसने सही साबित किया। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसने कई देशों के कम्युनिस्ट आंदोलनों में संशोधनवाद से निर्णायक विच्छेद का, नयी मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टियों की स्थापना का और सशस्त्र कृषि क्रांतिकारी युद्धों की एक नयी लहर का परिप्रेक्ष्य तैयार किया। भारत में इसने महान नक्सलबाड़ी किसान क्रांतिकारी सशस्त्र आंदोलन को - जो अपनी पचासवीं वर्षगांठ पूरी करने जा रही है - प्रभावित और प्रेरित किया। हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी) के दो महान नेता, शिक्षक व पूर्व-संस्थापक कामरेड सीएम और कामरेड केसी में से एक कामरेड सीएम के नेतृत्व में उभरी नक्सलबाड़ी एक दिशा-निर्देशकारी आंदोलन थी। इस आंदोलन ने देश की जनवादी क्रांति के इतिहास में एक नये युग की शुरूआत की थी।

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के महत्ता को देखते हुए ही 'महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के बारे में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का फैसला' व उस समय चीन के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित चार लेख को यहां हम प्रकाशित कर रहे हैं, ताकि हमारी पार्टी, पीएलजीए व तमाम कतार इन लेखों की रोशनी में कुछ शिक्षा ग्रहण करें। - संपादकमंडल, लाल चिनगारी)

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के बारे में
चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का फैसला
(8 अगस्त, 1966 को स्वीकृत)

01. समाजवादी क्रांति की एक नई मंजिल

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति, जिसका आजकल विकास हो रहा है, एक भारी क्रांति है जो लोगों की सम्पूर्ण चेतना का स्पर्श करती है तथा हमारे देश में समाजवादी क्रांति के विकास की एक नई मंजिल की, पहले से ज्यादा गहन और पहले से ज्यादा व्यापक मंजिल की द्योतक है।

पार्टी की आठवीं केन्द्रीय कमेटी के दसवें पूर्ण अधिवेशन में कामरेड माओ त्से-तुङ ने कहा था: किसी भी राज्यसत्ता को उखाड़ फेंकने के लिए, हमेशा ही सबसे पहले इस बात की जरूरत होती है कि लोकमत तैयार किया जाय, विचारधारा के क्षेत्र में कार्य किया जाय। यह बात जहां क्रांतिकारी वर्ग पर लागू होती है वहां प्रतिक्रांतिकारी वर्ग पर भी लागू होती है। कामरेड माओ त्से-तुङ की यह स्थापना व्यवहार में बिल्कुल सही साबित हो चुकी है।

यद्यपि पूंजीपति वर्ग का तख्ता पलटा जा चुका था, तथापि वह आज भी शोषक वर्गों के पुराने विचारों, पुरानी संस्कृति,

पुराने रिवाजों और पुरानी आदतों का इस्तेमाल करके आम जनता का आचरण-भ्रष्ट करने, उसके दिमाग को अपने काबू में करने तथा सत्ता फिर से हथियाने की कोशिश कर रहा है। सर्वहारा वर्ग को इससे बिल्कुल उल्टी कार्यवाही करनी चाहिए: उसे विचाराधारात्मक क्षेत्र में पूंजीपति वर्ग की हर चुनौती का डटकर सामना करना चाहिए तथा सर्वहारा वर्ग के नए विचारों, नई संस्कृति, नए रिवाजों और नई आदतों का इस्तेमाल करके समूचे समाज की मानसिक स्थिति को बदलने की कोशिश करनी चाहिए। इस समय हमारा लक्ष्य है उन कर्ताधर्ता लोगों के खिलाफ संघर्ष करना और उन्हें धराशायी कर देना जो पूंजीवादी रास्ता अपना रहे हैं, विद्याध्ययन के क्षेत्र में काम करने वाले प्रतिक्रियावादी पूंजीवादी ''धुरंधर विद्वानों'' और पूंजीपति वर्ग व तमाम शोषक वर्गों की विचारधारा की आलोचना करना और उनका खंडन करना तथा शिक्षा, साहित्य व कला तथा ऊपरी ढांचे के उन तमाम अंगों का रूपांतरण कर देना जो समाजिक आर्थिक आधार के अनुरूप नहीं हैं, ताकि समाजवादी व्यवस्था को सुदृढ़ व विकसित किया जा सके।

02. मुख्यधारा और टेढ़े-मेढ़े रास्ते

मजदूर, किसान, सैनिक, क्रांतिकारी बुद्धिजीवी और क्रांतिकारी कार्यकर्ता इस महान सांस्कृतिक क्रांति की मुख्य शक्ति हैं। क्रांतिकारी नौजवानों की बहुत बड़ी तादाद, जिसे पहले कोई जानता भी नहीं था, हौसले और हिम्मत से ओतप्रोत अग्रिम दस्ते के रूप में काम कर रही है। वे भरपूर शक्ति से काम करते हैं और बड़े बुद्धिमान बड़े-बड़े अक्षरों वाले पोस्टरों और बड़े-बड़े वाद-विवादों के जरिए, वे लोग बहस छेड़ते हैं, पूरी तरह बेनकाब कर डालते हैं और आलोचना करते हैं तथा पूंजीपति वर्ग के खुले और छिपे हुए प्रतिनिधियों पर दृढ़तापूर्वक प्रहार करते हैं। इस प्रकार के महान क्रांतिकारी आंदोलन में उनके द्वारा किसी भी किस्म की कमी जाहिर न होने देना नामुमकिन है, लेकिन उनकी मुख्य क्रांतिकारी दिशा शुरू से ही सही रही है। यह महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति की मुख्य धारा है। यह एक मुख्य दिशा है जिसकी तरफ महान सर्वहारा सांस्कतिक क्रांति लगातार आगे बढ़ती जा रही है।

चूंकि सांस्कृतिक क्रांति एक क्रांति है, इसलिए प्रतिरोध का सामना करना इसके लिए अनिवार्य हो जाता है। यह प्रतिरोध मुख्य रूप से ऐसे कर्ताधर्ता लोग करते हैं जो मौका पाकर पार्टी में आ घुसे हैं तथा पूंजीवाद का रास्ता अपना रहे हैं। इस प्रतिरोध का जन्म समाज की पुरानी पकी हुई आदतों से भी होता है। इस समय यह प्रतिरोध अपेक्षाकृत अधिक कड़ा और हठधर्मी भरा है। लेकिन महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति आखिर एक अदम्य व्यापक धारा है। इस बात के प्रर्याप्त प्रमाण मौजूद हैं कि जहां एक बार आम जनता पूरी तरह जागृत हो गई, तो इस प्रकार का प्रतिरोध बड़ी जल्दी खत्म हो जाएगा।

चूंकि यह प्रतिरोध अपेक्षाकृत कड़ा है, इसलिए इस संघर्ष में हमें जासूसों (Spies) का समना करना पड़ेगा, यहां तक कि बार-बार जासूसों का सामना करना पड़ेगा। इससे कोई नुकसान नहीं होगा। इससे सर्वहारा वर्ग और अन्य मेहनतकश जनता, खास तौर पर नौजवान लोग तपकर फौलाद बन जाते हैं, उन्हें शिक्षा प्राप्त होती है और अनुभव प्राप्त होता है, तथा उन्हें यह समझने में मदद मिलती है कि क्रांति का रास्ता एक टेढ़ामेढ़ा रास्ता है, सीधा नहीं।

03. साहस को सर्वोपरि रखो और निर्भिकता के साथ आम जनता को जागृत करो

इस महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के परिणाम का निर्णय इस बात से होगा कि पार्टी-नेतृत्व निर्भिकता के साथ आम जनता को जागृत करने का साहस रखता है अथवा नहीं।

इस समय अलग-अलग स्तर के पार्टी-संगठनों द्वारा सांस्कृतिक क्रांति आंदोलन को प्रदान किये जाने वाले नेतृत्व के क्षेत्र में चार अलग-अलग परिस्थितियां मौजूद हैं:

I. एक स्थिति ऐसी है जिसमें पार्टी-संगठनों के कर्ताधर्ता लोग आंदोलन के हिरावल दस्ते में मौजूद हैं तथा बड़ी निर्भिकता के साथ आम जनता को जागृत करते हैं। वे साहस को सर्वोपरि रखते हैं; वे निर्भिक कम्युनिस्ट योद्धा हैं और अध्यक्ष माओ के श्रेष्ठ शिष्य हैं। वे बड़े-बड़े अक्षरों वाले पोस्टरों तथा बड़े-बड़े वाद-विवादों का पक्ष पोषण करते हैं। वे आम जनता को प्रोत्साहन देते हैं कि वह हर किस्म के दैत्यों और दानवों को बेनकाब कर डालें तथा कर्ताधर्ता लोगों के काम की कमियों और गलतियों की आलोचना करे। यह सही किस्म का नेतृत्व कायम करना, सर्वहारा राजनीति को सर्वोपरि रखने और माओ त्से-तुङ के विचारों को प्रमुख स्थान देने का परिणाम है।

II. बहुत सी इकाइयों में, कर्ताधर्ता लोग इस महान संघर्ष के नेतृत्व-कार्य की बहुत कम समझ रखते हैं, उनका नेतृत्व

लगन से काम करने वाला और कारगर नेतृत्व कतई नहीं होता तथा इस प्रकार वे अपने आपको असमर्थता और कमजोरी की हालत में पाते हैं। वे भय को सर्वोपरि रखते हैं, पुराने तौर-तरीकों और कायदों से चिपके रहते हैं तथा घिसीपिटी लीक का परित्याग करने और आगे बढ़ने को तैयार नहीं होते। वे लोग नई स्थिति से, आम जनता की क्रांतिकारी स्थिति से, बिल्कुल बेखबर हैं; नतीजा यह हुआ है कि उनका नेतृत्व वास्तविक स्थिति से पिछड़ गया है, आम जनता से पिछड़ गया है।

III. कुछ इकाइयों में, ऐसे कर्ताधर्ता लोगों द्वारा जो अतीत काल में किसी न किसी किस्म की गलती कर चुके हैं, भय को सर्वोपरि रखे जाने की अधिक संभावना है क्योंकि वे इस बात से डरते हैं कि कहीं आम जनता उनकी गर्दन पकड़ कर उन्हें बाहर ना खींच लें। वास्तव में, अगर वे गम्भीरतापूर्वक आत्म-आलोचना करें और आम जनता द्वारा की गई आलोचना को स्वीकार कर लें, तो पार्टी व आम जनता उनकी गलतियों के प्रति नरमी का रुख अपनाएगी। लेकिन अगर उक्त कर्ताधर्ता लोग ऐसा नहीं करेंगे, तो वे लोग गलतियां करना जारी रखेंगे और जन आन्दोलन के रास्ते की बाधा बन जाएंगे।

IV. कुछ इकाइयां ऐसे लोगों के नियंत्रण में हैं जो मौका पाकर पार्टी के भीतर घुस आए हैं और पूंजीवादी रास्ता अपना रहे हैं। इस प्रकार के कर्ताधर्ता इस बात से बेहद डरते हैं कि कहीं आम जनता उनकी कलई न खोल दे और इसलिए जन-आंदोलन का दमन करने के लिए हर मुमकिन बहाना खोजते रहते हैं। वे अपने हर प्रकार के लक्ष्यों को बदल देने और काले को सफेद बना डालने जैसी चालबाजियों का सहारा लेकर आंदोलन को उसके रास्ते से भटकाने की कोशिश करते हैं। जब वे यह देखते हैं कि वे खुद बिल्कुल अलगाव की स्थिति में पड़ गए हैं और पहले की तरह क्रियाशील नहीं रह सकते तो और भी अधिक साजिशें रचने लगते हैं, लोगों की पीठ पर छुरा भोंक देते हैं, अफवाहें उड़ाते हैं, तथा क्रांति और प्रतिक्रांति के बीच के फर्क को यथासम्भव धुंधला बनाने की कोशिश करते हैं और उनकी इन सब कारगुजारियों का मकसद होता है क्रांतिकारियों पर प्रहार करना।

पार्टी की केंद्रीय कमेटी विभिन्न स्तरों की पार्टी-कमेटियों से यह मांग करती है कि वे निरंतर सही ढंग से नेतृत्व करें, साहस को सर्वोपरि रखें, निर्भीकता के साथ आम जनता को जागृत करें, जहां कहीं भी कमजोरी और अयोग्यता नजर आए उसे दूर करें, उन साथियों को, जिन्होंने गलतियां तो की हैं लेकिन जो उन्हें सुधारने को तैयार हैं, इस बात को प्रोत्साहन दें कि अपने मानसिक बोझ को दूर कर लें और संघर्ष में शामिल हो जाएं, तथा ऐसे तमाम कर्ताधर्ता लोगों को नेतृत्वकारी पदों से हटा दें जो पूंजीवादी रास्ता अपनाते हैं, ताकि सर्वहारा क्रांतिकारियों के लिए नेतृत्व फिर से हस्तगत करना सम्भव हो जाय।

04. आंदोलन के दौरान आम जनता को खुद को शिक्षित होने दो

इस महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के दौरान एकमात्र तरीका यह है कि आम जनता अपने आपको खुद ही मुक्त कराए, तथा आम जनता की तरफ से काम करने का तरीका न अपनाया जाय।

आम जनता पर विश्वास करो, उस पर भरोसा रखो, और उसकी पहलकदमी की कद्र करो। डर को निकाल फेंको। अव्यवस्था से न डरो। अध्यक्ष माओ ने हमें अक्सर बताया है कि क्रांति ऐसी कोई नफीस, शिष्ट या नम्र, दयालु, सुशील, संयत और उदार चीज नहीं हो सकती। इस महान क्रांतिकारी आंदोलन में आम जनता को अपने आपको शिक्षित करने दो, तथा सही बात और गलत बात के बीच, सही कार्यशैली और गलत कार्यशैली के बीच फर्क करने दो।

बड़े-बड़े अक्षरों वाले पोस्टरों और बड़े-बड़े वाद-विवादों का पूरा इस्तेमाल करते हुए बहस छेड़ दो, ताकि आम जनता सही विचारों का स्पष्टीकरण कर सके, गलत विचारों की आलोचना कर सके, तथा तमाम दैत्यों और दानवों का पर्दाफाश कर सके। इस प्रकार आम जनता संघर्ष के दौरान अपनी राजनीतिक चेतना का स्तर ऊंचा उठा सकेगी, अपनी योग्यता व प्रतिभा में बढ़ोतरी कर सकेगी, सही और गलत के बीच फर्क कर सकेगी तथा दुश्मन और हमारे बीच एक स्पष्ट विभाजन रेखा खींच सकेगी।

05. पार्टी की वर्ग-दिशा को दृढ़तापूर्वक कार्यान्वित करो

हमारे दुश्मन कौन हैं? हमारे दोस्त कौन हैं? यह क्रांति के लिए एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण सवाल है तथा यह महान सांस्कृतिक क्रांति के लिए भी एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण सवाल है।

पार्टी-नेतृत्व को वामपंथियों का पता लगाने और वामपंथियों की पांतों को विकसित करने व सुदृढ़ बनाने में निपुण होना चाहिए तथा क्रांतिकारी वामपंथियों पर दृढ़तापूर्वक निर्भर रहना

चाहिए। आंदोलन के दौरान केवल इसी तरह अत्यंत प्रतिक्रियावादी दक्षिणपंथियों को बिल्कुल अलगाव की स्थिति में डाला जा सकता है, मध्यममार्गियों को अपने पक्ष में किया जा सकता है तथा भारी बहुसंख्यकों के साथ एकता कायम की जा सकती है, ताकि आंदोलन समाप्त होने पर हम 95 प्रतिशत से अधिक कार्यकर्ताओं और 95 प्रतिशत से अधिक आम लोगों के बीच एकता कायम कर सकें।

मुट्ठीभर अत्यंत प्रतिक्रियावदी पूंजीवादी दक्षिणपंथियों और प्रतिक्रांतिकारी संशोधनवादियों पर प्रहार करने के लिए पूरी ताकत लगा दो, तथा पार्टी के खिलाफ, समाजवाद के खिलाफ और माओ त्से-तुङ के विचारों के खिलाफ उनके द्वारा किए गए जुर्मों का पूरी तरह भण्डाफोड़ कर दो और उनकी भरपूर आलोचना करो, ताकि उन्हें अधिकाधिक अलगाव की स्थिति में डाला जा सके।

वर्तमान आंदोलन का मुख्य निशाना पार्टी के भीतर मौजूद वे कर्ताधर्ता लोग हैं जो पूंजीवादी रास्ता अपना रहे हैं।

पार्टी-विरोधी व समाजवाद-विरोधी दक्षिणपंथियों तथा उन लोगों के बीच फर्क करने में अत्यंत सावधानी बरतनी चाहिए जो पार्टी और समाजवाद का तो समर्थन करते हैं लेकिन जिन्होंने कुछ गलत बातें की हैं, कुछ गलत काम किए हैं अथवा कुछ बुरे लेखों या बुरी रचनाओं का सृजन किया है।

प्रतिक्रियावादी पूंजीवादी निरंकुश विद्वानों व ''धुरंधर विद्वानों'' तथा उन लोगों के बीच फर्क करने में अत्यंत सावाधानी बरतनी चाहिए जो विद्याध्ययन के बारे में सामान्य पूंजीवादी विचार रखते हैं।

06. जनता के बीच के अंतरविरोधों को सही ढंग से हल किया जाय

इन दो भिन्न प्रकार के अंतरविरोधों के बीच बिल्कुल स्पष्ट रूप से फर्क करना चाहिए: जनता के बीच के अंतरविरोध तथा हमारे और दुश्मन के बीच के अंतरविरोधों के बीच। जनता के बीच के अंतरविरोधों को हमारे और दुश्मन के बीच के अंतरविरोध नहीं बना देना चाहिए; और न हमारे तथा दुश्मन के बीच के अंतरविरोधों जनता के बीच का अंतरविरोध समझना चाहिए।

अलग-अलग राय रखना आम जनता के लिए स्वाभाविक बात है। अलग-अलग प्रकार की रायों के बीच होड़ होना अनिवार्य, आवश्यक और लाभदायक है। एक सामान्य और मुकम्मिल वाद-विवाद के दौरान आम जनता जो कुछ सही है उसकी पुष्टि करेगी, जो कुछ गलत है उसे ठीक कर लेगी और कदम-ब-कदम एकमत हो जाएगी।

वाद-विवाद में जो तरीका अपनाया जाना चाहिए वह है, तथ्यों को पेश करना, तर्क द्वारा अपनी बात सिद्ध करना, और तर्क द्वारा समझाना-बुझाना। किसी भी ऐसे तरीके की इजाजत नहीं दी जा सकती जिसमें कि अलग रखने वाले अल्पमत को बहुमत से सहमत होने के लिए मजबूर किया जाय। अल्पमत रखने वालों की रक्षा की जानी चाहिए। क्योंकि कभी-कभी सच्चाई अल्पमत के साथ होती है। अगर अल्पमत वाले गलत भी हों, फिर भी उन्हें अपनी बात पेश करने का मौका मिलना चाहिए तथा उन्हें अपनी राय पर कायम रहने देना चाहिए।

जब कभी वाद-विवाद हो तो उसका संचालन तर्क द्वारा होना चाहिए, जोर जबरदस्ती या ताकत के जरिए नहीं।

वाद-विवाद के दौरान हर क्रांतिकारी को अपने आप ही सोच में निपुण होना चाहिए और उसे अपने अंदर साहस के साथ सोचने, साहस के साथ बोलने और साहस के साथ काम करने की कम्युनिस्ट भवना को विकसित करना चाहिए। इस बात को ध्यान में रखते हुए, कि उनकी मुख्य दिशा एक ही है, क्रांतिकारी साथियों को चाहिए कि वे अपनी एकता को मजबूत बनाने हेतु गौण विषयों को लेकर अंतहीन वाद-विवाद में न फंसें।

07. उन लोगों से सावधान रहो जो क्रांतिकारी आम जनता को ''क्रांति-विरोधी'' कह कर कलंकित करते हैं

कुछ स्कूलों, इकाइयों, तथा सांस्कृतिक क्रांति के कार्यदलों में वहां के कर्ताधर्ता लोगों ने आम जनता के उन लोगों के खिलाफ जवाबी प्रहार करने वाली कार्यवाहियों का संगठन किया है जिन्होंने बड़े-बड़े अक्षरों वाले पोस्टर लगाकर उनकी आलोचना की थी। ये लोग यहां तक आगे बढ़ गए कि उन्होंने इस तरह के नारे लगाए हैं: किसी इकाई या कार्य-दल के नेताओं का विरोध करने का मतलब है पार्टी की केंद्रीय कमेटी का विरोध करना, इसका मतलब है पार्टी और समाजवाद का विराध करना, इसका मतलब है क्रांति का विरोध करना। इस तरह अनिवार्य रूप से कुछ सच्चे क्रांतिकारी सक्रिय कार्यकर्ता उनके प्रहार का शिकार बन जाएंगे। यह गलती दिशा-निर्धारण सम्बंधी गलती है, कार्यदिशा सम्बंधी गलती है और इसकी हरगिज इजाजत नहीं दी जा सकती।

कुछ ऐसे लोग जिनके विचार विचारधारा की दृष्टि से गम्भीर रूप से गलत हैं और खास तौर से कुछ पार्टी-विरोधी तथा समाजवाद-विरोधी दक्षिणपंथी लोग, जन-आंदोलन की कुछ कमियों व गलतियों से फायदा उठाकर अफवाहें व झूठी बातें उड़ा रहे हैं तथा लोगों को भड़का रहे हैं और जानबूझ कर आम जनता के कुछ लोगों को ''क्रांति-विरोधी'' कह कर उन्हें कलंकित कर रहे हैं। यह आवश्यक है कि ऐसे ''जेब-कतरों'' से सावधान रहा जाय और उनकी चालबाजियों का यथासमय भण्डाफोड़ किया जाय।

आंदोलन जारी रहने के समय, उन सक्रिय प्रतिक्रांतिकारियों के मामलों को छोड़कर जहां इस तरह के जुर्मों का स्पष्ट सबूत मिलता है। जैसे- कत्ल करना, आग लगाना, जहर देना, तोड़-फोड़ करना या गोपनीय सरकारी सूचनाओं की चोरी करना और जिन्हें कानून के मुताबिक निबटाया जाना चाहिए, विश्वविद्यालयों, कॉलेजों, मिडिल स्कूलों तथा प्राइमरी स्कूलों के विद्यार्थियों के खिलाफ, आंदोलन के दौरान उठने वाली समस्याओं की वजह से कोई कार्यवाही नहीं की जानी चाहिए। संघर्ष कहीं अपने मुख्य लक्ष्य से भटक न जाय, इसलिए चाहे कुछ भी बहाना क्यों न हो, इस बात की इजाजत नहीं दी जा सकती कि आम जनता को एक दूसरे के खिलाफ संघर्ष करने के लिए भड़काया जाय या विद्यार्थियों को भी इसी तरह भड़काया जाय। ऐसे दक्षिणपंथियों के मामले भी जिनका जुर्म साबित हो चुका है, हर मामले की गम्भीरता को देखते हुए आंदोलन के बाद के दौर में निबटाए जाने चाहिए।

08. कार्यकर्ताओं का सवाल

कार्यकर्ताओं को मोटे तौर पर निम्नलिखित चार श्रेणियों में रखा जा सकता है:

(1) अच्छे;

(2) अपेक्षाकृत अच्छे;

(3) ऐसे कार्यकर्ता जिन्होंने गम्भीर गलतियां तो की हैं, लेकिन फिर भी जो पार्टी-विरोधी व समाजवाद-विरोधी दक्षिणपंथी नहीं बने;

(4) मुट्ठीभर ऐसे कार्यकर्ता, जो पार्टी-विरोधी व समाजवाद-विरोधी दक्षिणपंथी हैं।

पहली दो श्रेणियों (अच्छे और अपेक्षाकृत अच्छे) के कार्यकर्ता आम तौर पर भारी बहुसंख्या में हैं।

पार्टी-विरोधी व समाजवाद-विरोधी दक्षिणपंथियों का पूरी तरह भण्डाफोड़ कर देना चाहिए, उन पर भीषण प्रहार करना चाहिए, उन्हें अपदस्थ कर देना चाहिए और उनकी साख बिल्कुल मिट्टी में मिला देनी चाहिए तथा उनके असर को नेस्तानाबूद कर देना चाहिए। साथ ही उन्हें सुधरने का मौका भी देना चाहिए, ताकि वे एक नई जिंदगी शुरु कर सकें।

09. सांस्कृतिक क्रांतिकारी ग्रुप, सांस्कृतिक क्रांतिकारी कमेटियां और सांस्कृतिक क्रांतिकारी प्रतिनिधि-सभाएं

महान सर्वहारा सांस्कृतिक आंदोलन में बहुत सी नई चीजें पैदा होनी शुरू हो गई हैं। सांस्कृतिक क्रांतिकारी ग्रुप, सांस्कृतिक क्रांतिकारी कमेटियां और सांस्कृतिक क्रांति के अन्य संगठनात्मक रूप, जिन्हें आम जनता ने बहुत से स्कूलों और इकाइयों में कायम किया है, एक नई चीज है और इनका भारी ऐतिहासिक महत्व है।

सांस्कृतिक क्रांतिकारी ग्रुप, कमेटियां और प्रतिनिधि-सभाएं संगठन के शानदार नए रूप हैं, जिनके जरिए कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में आम जनता अपने आपको शिक्षत कर रही है। ये संगठन हमारी पार्टी का आम जनता के साथ घनिष्ठ सम्पर्क कायम करने वाले शानदार सेतु हैं। ये सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के सत्ताधारी संगठन हैं।

हजारों वर्षों से सभी शोषक वर्गों द्वारा छोड़े गए पुराने विचारों, पुरानी संस्कृति, पुराने रिवाजों तथा पुरानी आदतों के खिलाफ सर्वहारा वर्ग को अपना संघर्ष अनिवार्य रूप से बहुत अधिक लम्बे समय तक जारी रखना होगा। इसलिए सांस्कृतिक क्रांतिकारी ग्रुपों, कमेटियों और प्रतिनिधि-सभाओं को अस्थायी संगठन नहीं बल्कि मुस्तकिल, स्थायी जन-संगठन बन जाना चाहिए। ये संगठन न सिर्फ कॉलेजों, स्कूलों और सरकारी विभागों व अन्य संस्थाओं के लिए जरूरी है बल्कि आम तैर पर कारखानों, खानों, अन्य कारोबारों, शहरी बस्तियों और गांवों के लिए भी जरूरी हैं।

यह आवश्यक है कि सांस्कृतिक क्रांतिकारी ग्रुपों व कमेटियों के सदस्यों तथा सांस्कृतिक क्रांतिकारी प्रतिनिधि-सभाओं के प्रतिनिधियों का चुनाव करने के लिए पेरिस कम्यून जैसी ही आम चुनाव की व्यवस्था कायम की जाय। उम्मीदवारों की सूची क्रांतिकारी आम जनता द्वारा पूर्ण विचार-विमर्श के बाद पेश की जानी चाहिए तथा चुनाव तभी होने चाहिए जब आम जनता उस सूची के बारे में बार-बार विचार-विमर्श कर चुकी हो।

आम जनता को यह हक हासिल होगा कि वह किसी भी समय सांस्कृतिक क्रांतिकारी ग्रुपों व कमेटियों के सदस्यों और सांस्कृतिक क्रांतिकारी प्रतिनिधि-सभाओं के निर्वाचित प्रतिनिधियों की आलोचना करे। अगर वे सदस्य या प्रतिनिधि अयोग्य साबित हों, तो उन्हें आम जनता, विचार-विमर्श करने के बाद, चुनाव के जरिए बदल सकेगी अथवा वापस बुला सकेगी।

कालेजों, स्कूलों में सांस्कृतिक क्रांतिकारी ग्रुपों, कमेटियों और प्रतिनिधि-सभाओं के अंदर मुख्य रूप से क्रांतिकारी विद्यार्थियों के प्रतिनिधि होने चाहिए। साथ ही उनमें कुछ प्रतिनिधि क्रांतिकारी अध्यापकों और कर्मचारियों के भी होने चाहिए।

10. शिक्षा-व्यवस्था में सुधार

इस महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति का एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है पुरानी शिक्षा-व्यवस्था और पढ़ाने के पुराने सिद्धांतों व तरीकों को बदल डालना।

इस महान सर्वहारा क्रांति में यह निहायत जरूरी है कि हम अपने विद्यालयों पर पूंजीवादी बुद्धिजीवियों के प्रभुत्व की स्थिति को पूरे तौर पर बदल डालें।

हर किस्म के विद्यालय में हमें कामरेड माओ त्से-तुङ द्वारा प्रतिपादित नीति को - शिक्षा द्वारा सर्वहारा राजनीति की सेवा करने तथा शिक्षा को उत्पादक - श्रम के साथ मिलाने की नीति को मुकम्मिल तौर पर लागू करना चाहिए, ताकि जो लोग शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं वे नैतिक, बौद्धिक व शारीरिक दृष्टि से विकास कर सकें और समाजवादी चेतना व संस्कृति से लैस श्रमिक बन सकें।

विद्यार्थियों के शिक्षण की अवधि को कम किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम अपेक्षाकृत थोड़े व बेहतर होने चाहिए। पाठ्य-सामग्री को पूरे तौर पर बदल डालना चाहिए, कहीं-कहीं जटिल सामग्री को सरल बनाकर इस कार्य की शुरूआत करनी चाहिए। यद्यपि विद्यार्थियों का मुख्य कर्तव्य अध्ययन करना है, तथापि उन्हें अन्य चीजों को भी सीखना चाहिए। अर्थात्, अपनी पढ़ाई के अलावा उन्हें औद्योगिक कार्य, खेती-बारी तथा फौजी मामलों के बारे में भी सीखना चाहिए और सांस्कृतिक क्रांति के संघर्षों में, जैसे-जैसे वे उभरते जाएं, हिस्सा लेना चाहिए ताकि पूंजीपति वर्ग की आलोचना की जा सके।

11. समाचारपत्रों में नाम को लेकर आलोचना करने का सवाल

सांस्कृतिक क्रांति के जन-आंदोलन के दौरान, पूंजीवादी और सामंतवादी विचारधारा की आलोचना करने के साथ-साथ सर्वहारा विश्व-दृष्टिकोण का और मार्क्सवाद-लेनिनवाद का, माओ त्सेतुङ के विचारों का प्रचार-प्रसार भी अच्छी तरह करना चाहिए।

पूंजीपति वर्ग के उन विशिष्ट प्रतिनिधियों की, जो मौका पाकर पार्टी में आ घुसे हैं तथा विद्याध्ययन के क्षेत्र में काम करने वाले विशिष्ट प्रतिक्रियावादी पूंजीवादी ''धुरंधर विद्वानों'' की आलोचना करने के लिए संगठन-कार्य करना चाहिए तथा जिसमें दर्शन-शास्त्र, इतिहास, राजनीतिक अर्थशास्त्र व शिक्षा के क्षेत्र में, साहित्य व कला की रचनाओं और साहित्य व कला के सिद्धांतों के क्षेत्र में, प्राकृतिक विज्ञान के सिद्धांतों के क्षेत्र में और अन्य क्षेत्रों में मौजूद विभिन्न प्रकार के प्रतिक्रयावादी विचारों की आलोचना भी शामिल है।

अगर किसी की आलोचना नाम लेकर समाचारपत्रों में करनी हो, तो पहले उसी स्तर की पार्टी-कमेटी में विचार-विमर्श करके इस बात का फैसला कर लेना चाहिए तथा कुछ परिस्थितियों में ऊपर की पार्टी-कमेटी के पास भेज कर उसकी मंजूरी हासिल कर लेनी चाहिए।

12. वैज्ञानिकों, तकनीशियनों और स्टाफ के साधारण कर्मचारियों के प्रति नीति

जहां तक वैज्ञानिकों, तकनीशियनों और स्टाफ के साधारण कर्मचारियों का ताल्लुक है, जब तक वे देशभक्ति की भावना रखें, सक्रियता से काम करते रहें, पार्टी व समाजवाद का विरोध न करें, तथा किसी अन्य देश के साथ नाजायज सम्बंध न रखें, तब उनके प्रति हमें अपने वर्तमान आंदोलन में ''एकता, आलोचना, एकता'' की नीति जारी रखनी चाहिए। उन वैज्ञानिकों तथा वैज्ञानिक व तकनीकी कर्मचारियों का खास खयाल रखना चाहिए जिन्होंने अपने कार्य-क्षेत्र में योगदान किया है। हमें उनके विश्व-दृष्टिकोण और कार्यशैली का कदम-ब-कदम रूपांतर करने के कार्य में उन्हें मदद देने की कोशिश करनी चाहिए।

13. शहरों और देहातों में इस क्रांति को समाजवादी-शिक्षा आंदोलन के साथ मिलाने की व्यवस्था करने का सवाल

बड़े-बड़े और मंझोले शहरों की सांस्कृतिक व शैक्षणिक इकाइयां तथा पार्टी व सरकार के नेतृत्वकारी संगठन वर्तमान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के प्रमुख केंद्र हैं।

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति ने शहरों और देहातों, दोनों में समाजवादी-शिक्षा आंदोलन को समृद्ध किया है तथा उसे पहले से ज्यादा ऊंचे स्तर पर पहुंचा दिया है। इस बात की कोशिश की जानी चाहिए कि इन दोनों आंदोलनों के बीच घनिष्ठ सहयोग कायम किया जाय। इस संबंध में विभिन्न प्रदेशों और विभागों को अपने यहां की ठोस स्थितियों को देखते हुए व्यवस्था करनी चाहिए।

देहातों और शहरी उद्योग-धंधों में चलने वाले समाजवादी-शिक्षा आंदोलन के दौरान उन स्थानों में फेरबदल नहीं करना चाहिए जहां पहले से ही समुचित व्यवस्था चली आ रही है और आंदोलन अच्छी तरह आगे बढ़ रहा है तथा उसे पहले से चली आई व्यवस्था के अनुसार चलने देना चाहिए। लेकिन जो सवाल वर्तमान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति में उठ रहे हैं उन्हें उचित समय आने पर आम जनता के सामने वाद-विवाद के लिए पेश करना चाहिए, ताकि सर्वहारा विचारधारा को जोरशोर से फैलाया जा सके तथा पूंजीवादी विचारधारा को नेस्तानाबूद किया जा सके।

कुछ स्थानों में महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति को, समाजवादी-शिक्षा आन्दोलन को प्रोत्साहन देने तथा राजनीति, विचारधारा, संगठन और अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में सफाई करने के लिए एक केंद्र बिंदु के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। यह उन स्थानों में किया जा सकता है, जहां की स्थानीय पार्टी-कमेटी इसे उचित समझती है।

14. क्रांति को दृढ़ता से चलाओ और उत्पादन-कार्य को बढ़ावा दो

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति का उद्देश्य है लोगों की विचारधारा का क्रांतिकारी रूपांतरण करना और इसके फलस्वरूप कार्य के हर क्षेत्र में ज्यादा से ज्यादा, जल्दी से जल्दी, अच्छे से अच्छा और कम से कम खर्च में नतीजे हासिल करना। अगर आम जनता को पूरे तौर से जागृत कर दिया जाय तथा यथोचित प्रबंध कर लिया जाय, तो सांस्कृतिक क्रांति तथा उत्पादन-कार्य दानों को ही, एक दूसरे को नुकसान पहुंचाए बगैर चलाया जा सकता है और साथ ही अपने तमाम कार्य में ऊंचे गुण की गारंटी की जा सकती है।

यह महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति हमारे देश की सामाजिक उत्पादन-शक्तियों को विकसित करने वाली एक जबरदस्त प्रेरक शक्ति है। इस महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति को उत्पादन के विकास के विरोध में ला खड़ा करने वाले सभी विचार गलत हैं।

15. सशस्त्र सेनाएं

सशस्त्र सेनाओं में सांस्कृतिक क्रांति और समाजवादी-शिक्षा आंदोलन को केंद्रीय कमेटी के फौजी कमीशन और जन-मुक्ति सेना के प्रधान राजनीतिक विभाग के निर्देशनों के अनुसार चलाया जाना चाहिए।

16. माओ त्से-तुङ के विचार, महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति में हमारे पथ प्रदर्शक हैं

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति में यह आवश्यक है कि माओ त्से-तुङ के विचारों का महान लाल झण्डा बुलंद रखा जाय तथा सर्वहारा राजनीति को सर्वोपरि रखा जाय। अध्यक्ष माओ त्से-तुङ की रचनाओं का सृजनात्मक ढंग से अध्ययन करने और उन्हें सृजनात्मक ढंग से लागू करने के आंदोलन को मजदूरों, किसानों, सैनिकों, कार्यकर्ताओं और बुद्धिजीवियों के जन-समुदाय में फैलाना चाहिए तथा माओ त्से-तुङ के विचारों को सांस्कृतिक क्रांति का पथ-प्रदर्शक समझना चाहिए।

इस जटिल व महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति में सभी स्तरों की पार्टी-कमेटियों को चाहिए कि वे अध्यक्ष माओ की रचनाओं का अधिकाधिक लगन के साथ और सृजनात्मक ढंग से अध्ययन करें और उन्हें लागू करें। विशेषकर, वे अध्यक्ष माओ द्वारा सांस्कृतिक क्रांति के बारे में और नेतृत्व करने के पार्टी के तरीकों के बारे में लिखी गयी रचनाओं का बार-बार अध्ययन करें, जैसे ''नई लोकशाही के बारे में'', ''येनान की कला साहित्य गोष्ठी में भाषण'', ''जनता के बीच के अंतरविरोधों को सही ढंग से हल करने के बारे में'', ''चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रचार-कार्य सम्बन्धित कुछ सवाल'', ''पार्टी कमेटियों के काम के तरीके''।

सभी स्तरों के पार्टी-कमेटियों को चाहिए कि वे अध्यक्ष माओ द्वारा पिछले अनेक वर्षों में दी गई हिदायतों का पालन करें। मिसाल के तौर पर वे ''जनता से लेकर जनता को ही लौटाने'' की जनदिशा को पूर्ण रूप से कार्यान्वित करें तथा शिक्षक बनने से पहले शिष्य बनें। उन्हें किसी भी मसले पर महज एकतरफा तौर से विचार करने या संकुचित दृष्टिकोण अपनाने से बचना चाहिए। उन्हें द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का पोषण करना चाहिए तथा अध्यात्मवाद और पाण्डित्य प्रदर्शनवाद का विरोध करना चाहिए।

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति पार्टी की केंद्रीय कमेटी के नेतृत्व में, जिसकी रहनुमाई कामरेड माओ त्से-तुङ करते हैं, अनिवार्य रूप से शानदार विजय प्राप्त करेगी।

लोगों की नजरों में रहने की मानसिकता को पूरी तरह खारिज करो!

(वेनहुई पाओ सर्वे ऑफ चाइना मेन लैंड प्रेस, 6 मार्च, 1967)

लोगों की नजरों में रहने की मानसिकता सर्वहारा क्रांतिकारियों के समक्ष मौजूद एक दूसरा दुश्मन है। कार्य इकाइयों, विभागों और व्यवस्थाओं के लिहाज से व्यापक संश्रय कायम करने के लिए मौजूदा नई परिस्थितियों में इस खतरनाक दुश्मन को मार गिराना है। नजरों में रहने की मानसिकता कई रूपों में अभिव्यक्त होती है। उदाहरण :

–जब तक मैं कार्यभार न संभालूं, शानदार गठबंधन कायम नहीं होगा और सत्ता पर कब्जा नहीं होगा।

–जहां भी प्रभाव डालने का मौका है, वहां हम अपना नाम डाल देंगे–जहां भी नजरों में रहने का मौका है वहां हम भी रहेंगे।

–हम तब तक मुंह नहीं खोलेंगे, जब तक हमारे पास कहने के लिए कोई सनसनीखेज बात न हो।

–किसी काम में जितने कम लोग शामिल हो उतना ज्यादा अच्छा रहेगा।

–यदि तुम एक पहाड़ी गढ़ पर कब्जा करते हो, तो मैं उससे बड़े गढ़ पर कब्जा करूंगा।

जो लोग नजरों में रहने की मानसिकता से ग्रस्त रहते हैं वे निरपवाद रूप से ''पहले मैं'' प्रवृत्ति और ''छोटा ग्रुप'' की प्रवृत्ति से अभिभूत होते हैं जो कि व्यक्तिवाद की ठेठ अभिव्यक्ति होती है। नजरों में रहने की प्रवृत्ति से ग्रस्त लोगों की तीखी आलोचना करते हुए अध्यक्ष माओ ने कहा था :

ये लोग किसके पीछे भागते हैं? ये लोग यश और पद के पीछे भागते हैं और नजरों में रहना चाहते हैं। जब कभी उन्हें किसी काम की शाखा का कार्यभार सौंपा जाता है, तो वे स्वावलंबन का दावा करने लगते हैं। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए वे कुछ लोगों को अंदर बुला लेते हैं, दूसरों को बाहर कर देते हैं और साथियों के बीच शेखीबाजी, चापलूसी और दलाली का सहारा लेने लगते हैं तथा इस प्रकार बुर्जुआ राजनीतिक दलों की भद्दी कार्यशैली को कम्युनिस्ट पार्टी के अंदर ले आते हैं।

जो लोग नजरों में रहने की मानसिकता से अभिभूत होते हैं, वे महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के बारे में कुछ नहीं जानते हैं। वे लोग ''निजी स्वार्थ'' के उद्देश्य से विद्रोह करते हैं क्योंकि वे बुर्जुआ विश्व दृष्टिकोण के पक्षधर होते हैं।

नजरों में रहने की मानसिकता सर्वहारा क्रांतिकारियों के शानदार गठबंधन पर सीधे प्रहार करती है। जब लोग बस अपने से छोटे ग्रुप को महत्व देने में दिलचस्पी दिखाने लगते हैं तब वे अपरिहार्यत: दूसरे क्रांतिकारी संगठनों को अस्वीकार करने लगते हैं। यदि वे ''पहले मैं'' के सिद्धांत का समर्थन करते हैं तो वे स्वभावत: दूसरों पर चोट करेंगे। वे केवल उन चीजों को करना चाहते हैं जो उन्हें ख्याति दिलायें और उसी काम को हाथ में लेने की जिद् करते हैं जो उन्हें लोगों की नजरों में चढ़ाये। इस प्रकार वे सर्वहारा के क्रांतिकारी हितों की अवहेलना करने तक सीमित हो जाते हैं और खुद को दूसरे क्रांतिकारी संगठनों के विरोध में खड़ा कर देते हैं। जब किसी क्रांतिकारी संगठन में नजरों में रहने की मानसिकता आ जाती है तो एक प्रकार से इसके सदस्यों की आंखों में धूल पड़ जाती है। यदि इसको ठीक न किया जाए तो आंखों में पड़ी धूल से जनता की आंखों की रोशनी गायब हो सकती है और अंतत: उनकी स्थिति उस अंधे व्यक्ति जैसी हो जायेगी, जो अंधे घोड़े पर सवार होकर आधी रात को गहरे तालाब की ओर जा रहा हो।

क्या हमें ऐसी नजीरें नहीं मिली हैं, जिनमें कुछ संगठन जो नजरों में रहने की मानसिकता से गंभीर रूप से ग्रस्त हैं, वे राजनीतिक अटकलबाजी में संलग्न रहने से हिचकिचाये नहीं? कुछ लोग क्षणिक आवेग में दूसरे लोगों को चौंकाने के लिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के सांस्कृतिक ग्रुप पर गोलाबारी और सर्वहारा सदर मुकामों पर गोलाबारी करने की हद तक पहुंच गये हैं और इस प्रकार उन्होंने गंभीर भूलें की हैं। इस पीड़ादायी सबक से सीख लेने के लिए क्या हमें गंभीर नहीं हो जाना चाहिए?

नजरों में रहने की मानसिकता के बचाव में कुछ लोग उसे क्रांतिकारी बहादुरी से उलझा देते हैं। वास्तव में इन दोनों के बीच कुछ भी समान नहीं है क्योंकि पूर्ववर्ती की सारवस्तु व्यक्तिवाद है जबकि परवर्ती की सारवस्तु सामूहिकता है। अपने व्यक्तिगत हित के लिए जो लोग नजरों में रहने की मानसिकता के वश में हो जाते हैं वे अपने हाथ जहां तक संभव हो सके फैला देते हैं। लेकिन जब क्रांति उनसे अपने व्यक्तिगत लाभ को त्याग देने की मांग करने लगती है, तो वे इससे भयभीत हो जाते हैं कि कभी–कभी वे भगोड़े तक बन जाते हैं।

दूसरी ओर क्रांतिकारी बहादुरी क्रांति के लिए दुश्मन के गढ़ों पर धावा बोलने और कब्जा कर लेने की भावना को आगे बढ़ाती है और जब पार्टी के हित दांव पर लगे हों तो अपना सबकुछ कुर्बान कर देने की सीमा तक हिम्मत पैदा कर देती है। जो लोग क्रांतिकारी बहादुरी का समर्थन करते हैं,

वे वास्तव में सर्वहारा क्रांतिकारी बन जाते हैं जबकि वे लोग जो नजरों में रहने की मानसिकता से ग्रस्त हैं, वे यह कभी नहीं समझ पायेंगे कि क्रांतिकारी बहादुरी का अर्थ क्या होता है।

उन कार्य इकाइयों, जिन्होंने सत्ता पर कब्जा जमाने के काम को पूरा कर लिया है, के उन क्रांतिकारियों को जो सत्ता का उपयोग करते हैं, नजरों में रहने की मानसिकता के खिलाफ सबसे ज्यादा सतर्क होना चाहिए। इसकी वजह यह है कि विजय के क्षणों में लोग हमारा अभिनंदन करेंगे, जो कि बुर्जुआ विचारों को हम पर प्रभाव डालने और भ्रष्ट करने का अच्छा मौका देता है। ऐसे क्षणों में हमें गौरवान्वित नहीं महसूस करना चाहिए और स्वहित को अपने मन में उभरने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। क्योंकि यदि हम नजरों में रहने की मानसिकता की गोली का निशाना बन जायेंगे, तो हम गलत उद्देश्य से की गयी प्रशंसा के बोझ से दबकर ढह जाएंगे या फिर हम बुर्जुआ सत्ताधारियों के कदमों का अचेतन (बिना समझे हुए) रूप से अनुसरण करने लगेंगे और गलत रास्ते पर चलने लगेंगे।

नजरों में रहने की मानसिकता को प्रोत्साहित करने का सामाजिक आधार निम्न बुर्जुआ वर्ग और बुर्जुआ वर्ग मुहैया कराते हैं। इसकी वजह यह है कि पुराने चीन में निम्न बुर्जुआ की बड़ी आबादी मौजूद थी और इस अर्थ में इनकी प्रधानता थी। इसलिए नजरों में रहने की मानसिकता को खत्म करने के लिए हमें कड़ा संघर्ष करना होगा। वर्तमान महान सांस्कृतिक क्रांति में हमारा अंतिम लक्ष्य सभी बुर्जुआ और निम्न बुर्जुआ ''वादों'' की पूरी सफाई करना है। चूंकि इस महान क्रांतिकारी अवधि के दौरान नजरों में रहने की मानसिकता ने सर उठा लिया है। इसलिए हमें इस मौके का लाभ उठाकर सभी सर्वहारा क्रांतिकारियों को एकजुट कर देना चाहिए और इसे कुचल देना चाहिए।

वर्तमान में शंघाई के कई क्रांतिकारी संगठन अपने शुद्धीकरण के लिए कदम उठा रहे हैं। साथियों की बड़ी संख्या नयी परिस्थितियों की जरूरतों के मुताबिक रास्ता खोजने पर ध्यान दे रहे हैं और सक्रियता से क्रांतिकारी संगठनों को सुव्यवस्थित कर रहे हैं। वे कार्य इकाइयों, विभागों और व्यवस्थाओं के अनुसार ऊपर से नीचे तक क्रांतिकारी संगठनों के पुनर्गठन के तरीकों का अध्ययन कर रहे हैं और इस प्रकार काम को केंद्र बनाते हुए शानदार गठबंधन को ज्यादा व्यापकता से गढ़ रहे हैं। चूंकि नगरीय चरित्र वाले संगठन अपने ऐतिहासिक कार्यभारों को जल्दी पूरा कर लेंगे इसलिए इन संगठनों के प्रभारी लोगों को इस नयी परिस्थिति को ध्यान में रखकर जल्दी और कर्मठता के साथ नये शानदार गठबंधन बनाने होंगे। इन लोगों के लिए यह बहुत खतरनाक होगा कि वे नजरों में रहने की मानसिकता से चिपके रहें और अपने पदों का परित्याग किये बिना अपने मूल ''पर्वतीय गढ़ों'' में अपनी स्थिति मजबूत बना लें। हम उम्मीद करते हैं कि हमारे सभी निकट सहयोगी जो सर्वहारा क्रांतिकारियों की कतार में मौजूद हैं, वे आत्मनिरीक्षण करके मालूम करें कि क्रांतिकारी संगठनों में नजरों में रहने की मानसिकता मौजूद है अथवा नहीं। यदि ऐसा है तो हमें इसे दृढ़तापूर्वक खारिज करना होगा।

निजी हित को जनहित से मिलाने का सिद्धांत पार्टी सदस्यों के मन को भ्रष्ट कर देने वाला जहर है।

(दूसरी तोपखाना कोर का सैनिक ची ली-कुङ, पीकिंङ रिव्यू, 20 दिसंबर, 1968)

एक कम्युनिस्ट का विश्व दृष्टिकोण किस किस्म का होना चाहिए? अपने एक भाषण में ल्यू शाओ–ची ने दंभपूर्वक कहा थाः ''समाजवाद की परिस्थितियों में यदि कोई सिर्फ व्यक्तिगत हित में काम करता है, तो वह उसे हासिल नहीं कर पायेगा। एकनिष्ठ होकर जनता की सेवा करने पर प्रतिफल के रूप में व्यक्तिगत हितों की पूर्ति हो जायेगी।''

''लाभ बाद में हासिल होते हैं और यह सवाल विश्व दृष्टिकोण का सवाल है।''

''लाभ बाद में प्राप्त होते हैं।'' हालांकि ये चंद शब्द ही हैं लेकिन वे पार्टी में पहले नंबर के पूंजीवादी पथगामी ल्यू शाओ–ची की सड़ी हुई आत्मा और कम्युनिस्टों को विषाक्त कर देने के दुर्भावनापूर्ण इरादे का सुस्पष्ट चित्रण करते हैं।

अध्यक्ष माओ हमें सिखाते हैं : ''विश्व दृष्टिकोण के मामले में आज बुनियादी तौर पर दो ही विश्व दृष्टिकोण मौजूद हैं, सर्वहारा और बुर्जुआ विश्व दृष्टिकोण। या तो सर्वहारा विश्व दृष्टिकोण होता है या तो बुर्जुआ।'' हममें से प्रत्येक कम्युनिस्ट का दृष्टिकोण पूर्णतया सर्वहारा विश्व दृष्टिकोण होना चाहिए।

''जनता की पूरे मन से सेवा करना'' ''स्व के बारे में सोचे बिना दूसरों के प्रति समर्पण, सर्वहारा विश्व दृष्टिकोण का सारतत्व है। व्यक्तिगत यश, लाभ और सत्ता यानी कि स्वहित के लिए संघर्ष करना बुर्जुआ विश्व दृष्टिकोण का सारतत्व है।'' ''लाभ बाद में प्राप्त होता है'' का सार ''निजी हित को जनहित से मिलाने के'' सिद्धांत में निहित है जिसकी ल्यू शाओ–ची ने वकालत की थी। यह स्व–हित में पूरी तरह काम करने वाला विश्व दृष्टिकोण है।

''लाभ'' क्या होते हैं? विभिन्न वर्गों के इस पर विचार भिन्न होते हैं।

''सभी मामलों में जनता के हितों से शुरूआत करना'' और ''जनता के लिए बहुत उपयोगी'' व्यक्ति बन जाने की सीख अध्यक्ष माओ ने हमें दी है। अध्यक्ष माओ के अजेय विचारों से लैस सर्वहारा हिरावल के लिए सबसे बड़ा लाभ चीनी जनता और विश्व की समस्त जनता की पूर्ण मुक्ति और कम्युनिज्म के महान आदर्श का कार्यान्वयन है। उस उदात्त लक्ष्य को हासिल करने के लिए आवश्यक कठिन संघर्ष और वीरोचित कुर्बानियों को वे अपना उच्चतम गौरव व सुख समझते हैं। ठीक यही वजह है कि कामरेड ली वेन–चुंग जो वामपंथियों की मदद करने वालों और जनता को आंख का तारा समझने वालों का मॉडल है, को अशांत काक्यांग नदी में नौजवान लाल गार्ड लड़ाकुओं को बचाते समय मृत्यु का भय नहीं सता रहा था। जीवन के अंतिम क्षण में उसके मन में केवल अध्यक्ष माओ और अध्यक्ष माओ के लाल गार्डों का ही ख्याल था और उसने ये चर्चित शब्द बोले थेः ''मेरे बारे में चिंता न करो।''

वे तथाकथित ''लाभ'' क्या हैं, जिनकी ल्यू शाओ–ची चर्चा किया करता था? वे ''व्यक्तिगत हित'' है, अर्थात् ''अपने जीवनपर्यंत पद और संपत्ति का उपयोग'' ''दूसरों से श्रेष्ठ बन जाना'' चीन का ''नंबर 1 या नंबर 2 व्यक्ति बन जाना'' इत्यादि। अपनी जिंदगी भर वह उन सब चीजों के पीछे लगा रहता था और उन्हीं के बारे में बातें करता रहता था। संक्षेप में वे व्यक्तिगत यश, लाभ और सत्ता है। साफ तौर पर यह शोषक वर्गों के जीवन दर्शन के लिए काम न करे तो वह बर्बाद हो जाएगा। क्या इसमें सर्वहारा विचार का रंचमात्र भी संकेत मौजूद है?

लेकिन कभी–कभी ल्यू शाओ–ची भी ''जनता की सेवा करने'' की चर्चा करने का ढोंग रचता था। ल्यू शाओ–ची जो कि अपने व्यक्तिगत हित के लिए समर्पित था क्यों ''जनता की सेवा करने की'' इतनी चर्चा करता था। इसका उत्तर उसने खुद दिया थाः ''एकनिष्ठ होकर जनता की सेवा करने पर प्रतिफल के रूप में व्यक्तिगत हित की पूर्त्ति हो जाएगी।'' यह दिखलाता है कि जनहित में काम करना एक झूठा चेहरा है और स्वहित में काम करना उसका असली चेहरा है। ''जनता की सेवा करना'' एक साधन है जबकि साध्य ''व्यक्तिगत हितों को हासिल करना'' है।

उसने ''व्यक्तिगत हित'' ''बाद की'' मंजिल पर क्यूं रखा? उसने कहा थाः ''समाजवाद की परिस्थिति में यदि कोई सिर्फ व्यक्तिगत हित के लिए काम करेगा तो वह उसे हासिल नहीं कर पायेगा।'' यह सिद्ध करता है कि ''व्यक्तिगत हित'' पहली मंजिल पर रखने से सारी चीजें सामने आ जायेंगी और किसी को कुछ नहीं मिलेगा। केवल जब व्यक्तिगत हित को बाद की मंजिल पर रखा जाता है तभी उन्हें पाया जा सकता है। खुद को छिपाने की अपनी सारी कोशिशों के बावजूद वह अति स्वार्थ का अपना असली चेहरा छुपा नहीं पाया। स्वहित को ''पहली'' मंजिल पर रखने का अर्थ स्व के लिए काम करना है। इसे ''बाद'' की मंजिल पर रखने का भी यही अर्थ है। बाद का तरीका अधिक घृणित और षडयंत्रकारी है।

महान नेता अध्यक्ष माओ की शिक्षा के अनुसार ''पूरे मन से जनता की सेवा करना'' को हम अपना एकमात्र उद्देश्य बनायेंगे। हमें अध्यक्ष माओ की रचनाओं का रचनात्मक तरीके से अध्ययन करना होगा। ल्यू शाओ–ची के घातक असर को पूरी तरह धो डालना होगा। अपने विश्व दृष्टिकोण के पूर्णगढ़न के लिए कठिन प्रयास करने होंगे। स्व–हित को जनहित के प्रति समर्पण में बदलना होगा। अपने जीवन भर क्रांति करने के लिए माओ का अनुसरण करना होगा और कर्मठ कम्युनिस्ट योद्धा का नाम दिये जाने के योग्य बनाना होगा।

''लाइन ही निर्णायक कड़ी है, एक बार यह पकड़ में आ जाये तो हर चीज अपनी-अपनी जगह पर आ जाती है।''

-कामरेड माओ

''पदाधिकारी बनने के लिए पार्टी का सदस्य बनने'' के सिद्धांत का पूर्णतया परित्याग करो!

(हेइलुङक्याङ प्रांत में लुइहो ''7 मई'' काडर स्कूल का संवाददाता समूह, पीकिङ रिव्यू, 20 दिसंबर, 1968)

पार्टी निर्माण पर माओ की दिशा और पार्टी निर्माण पर ल्यू शाओ-ची की संशोधनवादी दिशा की विभाजक रेखा यह है कि एक कम्युनिस्ट को सामान्य कार्यकर्त्ता और जनता का सेवक बने रहना चाहिए या एक पदाधिकारी और सरदार बन जाना चाहिए। ''हम कम्युनिस्ट औपचारिक पदों को हासिल करने के लिए नहीं बल्कि क्रांति करने की कोशिश करते हैं। हममें से प्रत्येक का रूख क्रांतिकारी होना चाहिए और एक क्षण के लिए भी अपने आपको जनता से अलग नहीं करना चाहिए।'' हमारी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हमेशा क्रांतिकारी ताजगी बनाये रख सकेंगे, यदि वे क्रांति के लिये पार्टी में शामिल होने की माओ की शिक्षा पर अमल करेंगे और हमेशा मजदूरों, किसानों और सैनिकों से अपने आपको जोड़कर रखेंगे।

फिर भी पूंजीवाद की पुनर्स्थापना के लिए ल्यू शाओ-ची ने ''पदाधिकारी बनने के लिए पार्टी सदस्य बनना'' के मत की सक्रियता से पैरवी की थी। उसने बेशर्मी से इस बकवास का प्रचार किया था कि ''पुराने जमाने में जब कोई क्षेत्रीय स्तर की शाही परीक्षा को पास कर लेता था, तब वह पदाधिकारी बन जाता था, अब जबकि कोई कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो जाता है तो वे पदाधिकारी बन सकता है। ऐसे पार्टी सदस्य को भावी काडर की सूची में शामिल कर लिया जाता है।''

पदाधिकारी बनने के लिए पार्टी का सदस्य बनने का सिद्धांत प्रभावशाली क्षयकारक है, जिसका उद्देश्य उन लोगों को विषाक्त करना है, जो दृढ़ इच्छा-शक्ति वाले नहीं होते हैं और इस प्रकार उन्हें संशोधनवादी मार्ग पर ले जाता है, जिस पर चलकर वे केवल औपचारिक पद हासिल करने की कोशिश करते हैं और क्रांति करने के बजाय वे केवल पदाधिकारी बने रह सकते हैं और सामान्य जन नहीं बने रह सकते हैं।

''7 मई'' काडर स्कूल का एक पुराना काडर जापान के विरूद्ध प्रतिरोध युद्ध के दौरान क्रांति में शामिल हुआ था। वह एक गड़ेरिया था। बचपन में वह एक जमींदार की भेड़ों की देखभाल करता था और उसने क्रांति के लिए बहुत से खतरों का सामना किया था लेकिन नेतृत्वकारी पदों को स्वीकार कर लेने के बाद वह कदम-ब-कदम आराम से ''क्रांति करने'' और एक पदाधिकारी और सरदार बनने के रास्ते पर चलने लगा था। उसने पाश्चाताप करते हुए कहा था ''पदाधिकारी बनने के लिए पार्टी सदस्य बनने के ल्यू शाओ-ची के सिद्धांत के कारण मैं एक बार पूंजीवादी पथगामी बनने के खतरे में फंस गया था। अध्यक्ष माओ द्वारा शुरू की गयी महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति द्वारा मुझे संशोधनवादी दलदल में गिरने से बचा लिया गया था।''

सांगठनिक दृष्टिकोण से सर्वहारा के अधिनायकत्व को नष्ट करने की तैयारी करने के लिए ल्यू शाओ-ची ने कुछ पार्टी सदस्यों के स्व-हित के रूख का इस्तेमाल किया और उनको औपचारिक पदों को हासिल करने की मनोवृत्ति वाले विशेषाधिकार प्राप्त संस्तर के सदस्य बन जाने के लिए दीक्षित करने के लिए ''पदाधिकारी बन जाने की संभावना'' को चारे की तरह इस्तेमाल करने की कोशिश की।

भिन्न लाइनें भिन्न प्रकार के लोगों को प्रशिक्षित कर तैयार करती हैं। सरकारी संगठनों के कुछ काडर जो ल्यू शाओ-ची की संशोधनवादी लाइन से विषाक्त हो चुके थे, वे बहुत पहले से जनता से, वास्तविकता से और शारीरिक श्रम से दूर हो चुके थे। अध्यक्ष माओ की शिक्षा के निर्देशन में वे शारीरिक श्रम करने के रास्ते पर चल पड़े हैं और वे पदाधिकारी की स्थिति से एक सामान्य मजदूर बन जाने की स्थिति तक पहुंच गये हैं। इसके फलस्वरूप उनके व्यक्तित्व में गहराई से मूलभूत परिवर्तन हो गया है।

पदाधिकारी बन जाने के लिए पार्टी सदस्य बनने के सिद्धांत की पूरी तरह आलोचना करने और उसका परित्याग करने और स्वेच्छा से जनता के सैनिक बन जाने के लिए हम कृत संकल्प हैं। हमें हरदम साधारण मजदूर और सर्वहारा क्रांतिकारी बने रहना चाहिए।

पार्टी में जारी बोल्शेवीकरण अभियान को तेज करें व अपने आपको गैर-सर्वहारा रूझान से मुक्त करें!

-सम्पादकमंडल, लाल चिनगारी

ताचाई पार्टी शाखा ने महिलाओं का प्रशिक्षण कैसे किया?

पीकिंग रिव्यू पत्रिका 30 मार्च, 1973

अपने अन्य कार्यों की तरह ही पूरे देश के लिए खेती-बाड़ी में गति निर्धारक का काम करने वाली शेन्सी प्रान्त की ताचाई उत्पादन ब्रिगेड ने महिला कैडर के प्रशिक्षण के काम में अच्छा काम किया है। ब्रिगेड की पार्टी शाखा ने हमेशा इस संबन्ध में काफी ध्यान दिया है। ताचाई पार्टी ब्रांच कमेटी के सात सदस्यों में से दो महिलाएं हैं। इस तरह नौजवान शाखा कमेटी के सदस्यों में से चार महिलाएं है। महिला कैडरों में कई सालों की अनुभवी महिलाओं के साथ-साथ नई कार्यकर्त्ता भी हैं। कुछ तो राज्य या रीजनल स्तर की पार्टी कमेटी सदस्य हैं, कुछ कम्यून और ब्रिगेड के नेतृत्वकारी ढांचे की सदस्य हैं। शुरु से ही ताचाई पार्टी शाखा ने समझा कि महिला कैडरों का प्रशिक्षण सामंती परम्पराओं को पूरी तरह छोड़ने की मांग करने वाली वैचारिक क्रांति की मांग करता है।

गहरी वैचारिक क्रांति

मुक्ति के कुछ ही समय बाद ही गांव की एक नौजवान महिला सुंग ली-यिंग राजनीतिक मामलों में सक्रिय हो गई थी। मुक्ति से पहले एक जमींदार के घर में गुलामी से रौंदी सुंग ली-यिंग को जमींदारों से बहुत ज्यदा घृणा थी और उनका तख्ता पलट देने व मुक्ति हासिल करने की प्रबल चाहत उनमें थी। वह क्रांति करने के लिए बहुत उत्साह के साथ अध्यक्ष माओ का अनुसरण करना चाहती थी। पार्टी शाखा ने देखा कि उसमें अच्छे कैडर के गुण हैं और उसे कुछ प्रशिक्षण देने का फैसला किया। महिलाओं को तुच्छ समझना अब भी कुछ गांव वालों के अन्दर गहरा बसा हुआ था।

''अरे भाई, महिला का काम तो चुल्हा-चौका व बच्चे पालना होता है....., यह कब से गांव को चलाने लग गई?''

इस तरह के पिछड़े विचारों को दूर करने के लिए पार्टी शाखा ने महिला और पुरुष समानता का प्रचार करने की मुहिम ली और एक खास चर्चा इस बात पर संगठित की। क्या महिलाएं ''गांव को चलाने'' में हिस्सा ले सकती है या नहीं? आम राय का झुकाव एक ही तरफ था, ''क्यों नहीं? क्या महिलाएं युद्ध के समय संतरी नहीं करती थीं? क्या वह मोर्चे को मदद करने के लिए उत्पादन को जारी नहीं रखी थीं? उन ऊपरी कमेटी वाली महिलाओं..... को याद करो, वह कितनी अच्छी तरह बात रखती थी और मोर्चे पर कितनी बहादुरी से लड़ी थी। महिलाओं के बिना कुछ भी नहीं किया जा सकता था।''

ताचाई के इतिहास में यह पहली बार था कि महिलाओं की अवमानना करने के सामंती विचार घोर आलोचना का निशाना बने थे। सुंग ली-यिंग अक्टूबर 1947 में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल की गई थी। कैडर के तौर पर सुंग ली-यिंग का अनुभवहीन होना एक बड़ी अक्षमता थी। शुरु में वह महिलाओं को बैठक में लाने में कामयाब नहीं हो सकी थी। अध्यक्षता करते समय शरमा जाती, रूक-रूक कर बोलती और जल्दी ही चुप हो जाती। तब पार्टी शाखा कमेटी के सचिव चेन युंग-कुयी को उसकी जगह लेनी पड़ती। फिर से शब्द उठने लगते, ''मैंने तुम्हें ऐसे बोलने के लिए बताया था।'' और जब उसका पहला बच्चा बीमार हो कर मर गया, मुट्ठी भर जमीन्दार, अमीर किसान और दूसरे वर्ग-दुश्मन बातें फैलाने लगे, ''ठीक हुआ, उसके साथ ऐसा होना ही था, इस तरह इधर-उधर घुमेगी.....बच्चा मरना तो स्वाभाविक है।''

पार्टी ने इन सभी चर्चाओं का विश्लेषण किया और यह निचोड़ निकाला कि कुछ बातें तो साफ-साफ सामंती विचारों को दर्शाती है। जबकि कुछ बातें वर्ग-दुश्मन की तरफ से आ रही है, जो समस्या खड़ी करना चाहते हैं और महिला मुक्ति को ध्वस्त करना चाहते हैं। पार्टी शाखा ने वर्ग दुश्मनों को करारा जवाब दिया। तब उसने जनता को शिक्षित करने के लिये एक बैठक बुलाई। पुराने समाज में उन्होंने जो दु:खद उत्पीड़न सहा था, उसे याद करने के लिए और कम्युनिस्ट पार्टी और अध्यक्ष माओ को धन्यवाद व्यक्त करने के लिए एक के बाद दूसरी महिला ने मंच संभाली। बैठक ने वहां उपस्थित सभी लोगों की गहरी सर्वहारा भावनाओं को जगाया और महिलाओं को उच्चस्तरीय चेतना के साथ महिला व पुरुष की बराबरी के लिए प्रयत्न करने के लिए हौसला आफजाई की।

व्यवहार से सीखो

ताचाई पार्टी शाखा का अपनी महिला कैडर को प्रशिक्षित करने का तरीका मुख्यत: महिलाओं को काम को करना

सिखाना और काम व संघर्ष के दौरान संघर्ष करना था। भले ही पहले-पहल सुंग ली-यिंग को महिलाओं को उत्पादन और राजनीतिक अध्ययन के लिए लामबंद करने में उसके नीतियों के संबंध में अपरिचित होने के कारण मुश्किल था। पार्टी शाखा ने भिन्न-भिन्न कार्यभार देने पर जोर दी ताकि वह सीख सके। उसने जल्दी ही कुछ ना कुछ अनुभव हासिल कर लिया। इससे पार्टी ने निष्कर्ष निकाला कि महिला कैडरों को केवल मुश्किलों से लड़ाकर ही उपर उठाया जा सकता है। उस वक्त जब कृषि उत्पादकों की सहकारिता सभा बनाई गई, पार्टी शाखा ने किसानों को 19 वर्ष की काउ-इ-लियन को सहकारिता सभा की उप-अध्यक्ष के तौर पर सिफारिश की। उसने एक दूसरी युवती का काउ फेंग-लियन को 'लौह कन्याओं के आक्रमण दल' को मार्ग-निर्देशन का महत्वपूर्ण कर्त्तव्य दिया और उसे स्थानीय नागरिक सेना (मिलिशिया) का राजनीतिक प्रशिक्षक बना दिया। पहले-पहल जब सहकारिता सभा बनाई गई, एक युवा कुंवारे लड़के ने महिलाओं पर हंसी उड़ायी, ''मैं बरबरी के पक्ष में हूं, इस बड़े पत्थर को उठाने के बारे में क्या ख्याल है?'' इसने महिलाओं की भावनाओं को ठेस पहुंचाई। कुछ समय बाद ही सभी सदस्य खेतों में खेती कर रहे थे और वहीं हंसी उड़ाने वाला अब अपने-आप को महिलाओं से पीछे पा रहा था, जिनकी कुछ उंगलियां बाजरे के पौधे की निराई में टिमटिमा रही थी। इस बार उसे असानी से नहीं छोड़ा गया। सुंग ली-यिंग और काउ इ-लियन द्वारा किये गये नेतृत्व में उसके पहले के रवैये के लिए आलोचना की गई। वह आदमी तुरंत बूरे बर्ताव के बारे में शिकायत करने पार्टी शाखा गया। उसे अपेक्षित समर्थन नहीं मिला, बदले में कामरेड चेन युंग-कुयी ने उसे बताया, ''महिलाएं एकदम सही थीं, पार्टी शाखा उनका समर्थन करती है। उन्हें पुराने समाज में बहुत सहना पड़ा है पर अब और नहीं चलेगा। वह भी नयी समाज की मालिक है और तुम यहां अभी भी उनकी हंसी उड़ा रहे हो और अकड़ रहे हो। तुम्हें अक्ल देने के लिए मैं उन्हें दोषी नहीं मानता।''

पार्टी शाखा ने महिलाओं की हर संभव तरीके से मदद की। जब कोई महिलाओं की बैठक बुलाई जाती, महिलाओं को हमेशा पहले बोलने के लिए कहा जाता और शाखा कमेटी के दूसरे सदस्य मुख्य बिन्दुओं को जोर देकर स्वीकार करने के लिए ही अतिरिक्त टिप्पणी करते। पार्टी शाखा समझती थी कि महिला कैडरों को अवश्य ही मार्क्सवाद-लेनिनवाद का गम्भीरता से अध्ययन करना चाहिए और व्यावहारिक काम के दौरान ही अपना सैद्धांतिक स्तर उपर उठाना चाहिए, ताकि वह लगातार राजनीतिक तौर पर प्रगति कर सके। भले ही सुंग ली-यिंग अब 45 की है और हमेशा राजनीतिक कामों में व्यस्त रहती है या खेतों में काम कर रही होती है। पर उसने कभी भी सिद्धांत के अपने अध्ययन को ढीला नहीं पड़ने दिया। पिछले साल से दो अन्य महिला कैडरों से मिलकर अन्तरविरोध के बारे में, व्यवहार के बारे में और कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र का अध्ययन किया, पैरा दर पैरा कृतियों की चर्चा कर और जहां उसे जरूरत थी, वहां स्पष्टीकरण लेकर उन्होंने धीरे-धीरे अपने सैद्धांतिक स्तर और चीजों को विश्लेषण करने की अपनी योग्यता बढ़ा ली।

चिन्ता और ध्यान देना

पार्टी शाखा समझती है कि महिलाओं को कुछ खास काम करने में पुरुषों से ज्यादा कठिनाई है। यह दो तरह से महिलाओं के प्रति उसके सरोकार को दिखाती है। शाखा शिशु सदन और बालगृह स्थापित कर उनके घरेलू काम-काज और बच्चों संबंधी उनकी समस्या को हल करती है। इस तरह उन्हें इनसे मुक्त करवाती है। काम देते समय, पार्टी शाखा प्रत्येक महिला कैडर की हालत का ध्यान रखती है और घर संभालने के लिए पर्याप्त समय देती है। उन्हें उत्पादन में अनुकरणीय (कठोर) काम करने के लिए प्रोत्साहित करती है, पर उनके शारीरिक विशिष्टताओं को भी ध्यान में रखती है और उन्हें भारी भरकम काम या अनुपयुक्त काम करने से रोकती है। महिला कैडरों को शादी, बच्चे संभालने और घरेलू काम की समस्याएं हल करने के लिए सही मदद होती है। जो पहले ही शादी-शुदा है, पार्टी शाखा अक्सर पति और सास-ससुर की मदद सुनिश्चित करने के लिए उन्हें मदद करती है।

1967 की सरदी की एक रात, जब कुआ इ-लियन कम्यून की बैठक में थी, घर पर उसका बच्चा देर तक रोया और उसका पति दुविधा में पड़ गया। सास भी बीमार थी। इ-लिन देर से घर आई तो पति आग-बबूला हो गया। जब पार्टी शाखा ने इसके बारे में सुना, तुरंत उसने चेन युंग-कुई को उसके पति से बात करने के लिए भेजा, ''जब हम काम पर होते हैं, महिलाएं घर पर मोर्चा संभालती है और लेट होने पर कभी शिकायत नहीं करती है।'' वह बोला ''जब वह बैठकों के लिए जाती है तो क्यों न हम बदले में बच्चे संभाले? महिलाएं ब्रिगेड का आधा हिस्सा है, जरा सोचो आधी

शेष पृष्ठ संख्या 38 पर

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च) पर विशेष लेख

स्त्री स्वतंत्रता और कम्युनिस्ट नैतिकता

(कामरेड लेनिन से कामरेड क्लारा जेटकिन की बातचीत पर आधारित ''स्त्री स्वतंत्रता और कम्युनिस्ट नैतिकता'' नामक लेख को दो भागों में बांटा जा सकता है। एक भाग में कामरेड लेनिन ने कम्युनिस्ट कार्यकर्त्ताओं के नैतिकता वाले पक्ष पर अपनी राय दी है, तो वहीं दूसरे भाग में महिला संगठन व महिला आंदोलन की आवश्यकता पर।

हम यहां इस लेख के दूसरे भाग यानी क्रांति में महिला आंदोलन की आवश्यकता पर कामरेड लेनिन के विचार को प्रकाशित कर रहे हैं। हमें पूरा विश्वास है कि हमारी पार्टी, पीएलजीए व तमाम कतार के तमाम नेता व कार्यकर्त्ता इसे पढ़ेंगे और व्यापक मेहनतकश महिलाओं को क्रांति की राह पर लाने की कोशिश में जी-जान से जुट जाएंगे, क्योंकि महिलाओं के बिना क्रांति असंभव है और क्रांति के बिना महिला मुक्ति भी असंभव है। - संपादकमंडल, लाल चिनगारी)

कामरेड लेनिन अक्सर मुझसे स्त्री-समस्या पर चर्चा करते थे। वे नारी आंदोलन को सामूहिक आंदोलन (जन आंदोलन) के एक अत्यावश्यक अंग के रूप में और कुछ परिस्थितियों में तो निर्णायक अंग के रूप में महत्व देते थे। उनके अनुसार कम्युनिस्टों के लिए स्त्रियों की सामाजिक समानता एक ऐसा सिद्धांत था, जिसमें विवाद की कहीं कोई गुंजाइश ही नहीं थी। इस विषय पर हमारा पहला और लम्बा वार्तालाप 1920 की पतझड़ में, क्रेमलिन में, लेनिन के विस्तृत अध्ययनकक्ष में हुआ था। लेनिन अपनी लिखने की मेज के आगे बैठे हुए थे, जो किताब और कागज से ढंकी हुई थी और यह प्रकट कर रही थी कि यहां अध्ययन और काम में अन्य बड़े आदमियों की सी 'प्रतिभा सम्पन्न अव्यवस्था' नहीं है।

अभिवादन के फौरन बाद ही लेनिन ने बातचीत शुरू करते हुए कहा - ''हमें स्पष्ट और सैद्धांतिक बुनियाद पर एक बलशाली अंतर्राष्ट्रीय महिला आंदोलन का निर्माण करना चाहिए और यह बिल्कुल स्पष्ट है कि मार्क्सवादी सिद्धांत के बिना कोई काम नहीं हो सकता। हम कम्युनिस्टों के लिए इस समस्या के संबंध में ज्यादा से ज्यादा सैद्धांतिक स्पष्टता की आवश्यकता है। दूसरी सभी पार्टियों से हमें भिन्न होना चाहिए। दुर्भाग्य से कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की दूसरी कांग्रेस में इस समस्या पर गौर नहीं किया गया। यह समस्या पेश तो की गयी थी, परंतु इस पर कोई फैसला नहीं हो सका था। अब भी एक समिति जांच-पड़ताल कर रही है, जो इन उद्देश्यों के अनुसार एक प्रस्ताव बनाएगी। लेकिन अभी तक वे कुछ अधिक नहीं कर पाए हैं। तुम्हें इनमें सहायता देनी पड़ेगी।''

लेनिन ने जो कुछ कहा उससे मैं पहले से ही परिचित थी। मैंने इस स्थिति पर आश्चर्य प्रगट किया। रूसी स्त्रियों ने क्रांति में जो काम किया था और उसकी रक्षा और विकास के सिलसिले में आज भी जो काम कर रही थीं, उसने मुझे उत्साह से भर दिया था और बोल्शेविक पार्टी में स्त्री साथियों के काम और स्थिति के संबंध में तो मैं उसे आदर्श पार्टी समझती थी। उपयोगी, शिक्षित और अनुभवी शक्तियों का वह एक अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट महिला आंदोलन था। वह एक ऐतिहासिक उदाहरण बन गया था।

''ठीक है, वह सब बिल्कुल सही और अच्छा है'' लेनिन ने एक शांत मुस्कराहट के साथ कहा, ''क्रांति के समय पेत्रोग्राद, यहां मास्को में और अन्य औद्योगिक केंद्रों में स्त्री मजदूरों ने बड़ा शानदार काम किया था। उनके बिना हमारी जीत होनी संभव नहीं थी और होती भी तो बड़ी मुश्किल से होती। यह मेरी राय है। वे कितनी बहादुर थीं और आज भी वे कितनी बहादुरी से काम कर रही हैं। जरा उन कष्टों और अभावों का तो ख्याल करो, जो उन्हें भुगतने पड़े हैं। उनके बावजूद वे अपना काम किये जा रही हैं, क्योंकि वे आजादी चाहती हैं, कम्युनिज्म चाहती हैं। हमारी मेहनतकश स्त्रियां वर्ग-युद्ध के लिए अवश्य ही उच्च कोटि की सैनिक हैं। वे प्रशंसा और स्नेह की अधिकारिणी हैं। इसके अलावा तुम्हें यह भी याद रखना चाहिए कि पेत्रोग्राद में 'वैधानिक गणंतत्र' वाली महिलाओं ने भी जमींदारों की अपेक्षा अधिक बहादुरी से हमारा सामना किया था। यह सच है। हमारी पार्टी में बहुत सी स्त्री साथी हैं, जो अत्यंत विश्वस्त, योग्य और अथक परिश्रमी हैं। हम उन्हें सोवियतों में, प्रबंध समितियों में, राज्य के अन्य जन विभागों में और हर तरह के सार्वजनिक सेवा कार्यों में महत्वपूर्ण पदों में नियुक्त कर सकते हैं। उनमें से बहुत सी साथी रात-दिन पार्टी या मेहनतकश जनता तथा किसानों और लाल सैनिकों के बीच काम कर रही हैं। यह हमारे लिए बहुत ही महत्व की चीज है। साथ ही यह सारे संसार की स्त्रियों के लिए भी महत्वपूर्ण है। यह स्त्रियों की काम करने की शक्ति और समाज में उनके काम के महत्व को प्रगट करता है। मेहनतकशों का पहला राज स्त्रियों की

सामाजिक समानता स्थापित करने के मामले में सच्चा और पहला पथ-प्रदर्शक है। यह उन तमाम गलत धारणाओं और पक्षपातों को खत्म कर दे रहा है, जिसे स्त्री साहित्य के पोथे के पोथे न मिटा पाते। लेकिन इतना सब होते हुए भी अभी तक कोई अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट महिला आंदोलन नहीं है। हमें उसे अवश्य शुरू करना चाहिए। इस दिशा में हमें अविलम्ब काम शुरू कर देना चाहिए। उसके बिना हमारे इंटरनेशनल और उसकी शाखाओं का काम अधूरा है, वह कभी पूरा नहीं हो सकता। लेकिन क्रांति का काम अवश्य ही पूरा किया जाना चाहिए। मुझे यह बतलाओ कि विदेशों में कम्युनिस्ट काम कैसे और क्या चल रहा है?''

मैंने उन्हें संक्षेप में अपनी योजना बताई। लेनिन बार-बार स्वीकृति में सिर हिलाते हुए चुपचाप सुनते रहे। जब मैंने समाप्त कर लिया तो उनकी ओर एक प्रश्नसूचक दृष्टि डाली।

''मंजूर है,'' लेनिन ने कहा, ''दूसरे साथियों के साथ मिलकर इन पर और विचार कर लेना। और भी अधिक अच्छा होगा, यदि तुम प्रमुख स्त्री-साथियों की भी एक सभा में इन्हें रखकर इन पर बहस कर लो। इस समय कामरेड इनेसा का यहां नहीं होना बहुत ही ज्यादा अखर रहा है। वह बीमार है और स्वास्थ्य सुधार के लिए काकेशस गई हैं। बहस के बाद इन प्रस्तावों को लिख डालना। इन पर विचार करने के लिए एक कमीशन नियुक्त किया जाएगा और अंत में कार्यकारिणी इन पर अपना फैसला लेगी। मैं तुमसे सिर्फ कुछ ऐसे खास मुद्दों के बारे में बातचीत करूंगा, जिनमें मेरी तुम्हारे साथ पूरी सहमति है और जो मुझे अपने चालू प्रचारकार्य को सफल लड़ाइयों में कार्यान्वित करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण मालूम पड़ते हैं। प्रस्ताव में यह बिल्कुल साफ-साफ दिखलाया जाए कि स्त्रियों की सच्ची आजादी केवल कम्युनिज्म के द्वारा ही संभव है। उत्पादन के साधनों में निजी संपत्ति के सामाजिक और व्यक्तिगत स्थान के साथ स्त्री की सामाजिक और व्यक्तिगत स्थिति का जो अविभेद्य संबंध है, उसे तीव्रता से प्रस्तुत किया जाना चाहिए। यह बातें हमारी नीति और अन्य नारीवादी (अर्थात् स्त्रियों को पुरूषों के बराबर अधिकार दिलाने के) आंदोलनों के बीच के अमिट फर्क को व्यक्त करेंगी। स्त्री-समस्या को सामाजिक समस्या - मजदूरों की आम समस्या - के ही अंतर्गत एक समस्या समझने का आधार प्रदान करेंगी और इस तरह स्त्री-समस्या का मेहनतकशों के वर्ग-संघर्ष और क्रांति के साथ दृढ़ता से बांध देगी। कम्युनिस्ट महिला-आंदोलन को व्यापक जन-आंदोलन के एक हिस्से के रूप में स्वयं एक जन-आंदोलन होना चाहिए और यह जन-आंदोलन केवल किसान मजदूर जनता का ही नहीं, उसे सभी शोषितों और दलितों का, पूंजीवादी तथा दूसरे प्रभुओं द्वारा सताए जाने वाले सभी लोगों का जन-आंदोलन होना चाहिए। सर्वहारा के वर्ग-संघर्ष और उनके ऐतिहासिक निर्माण कार्य अर्थात् कम्युनिस्ट समाज के लिए यही उसका महत्व है। हमें इस बात का उचित गर्व हो सकता है कि पार्टी में, कम्युनिस्ट इंटरनेशनल में, क्रांतिकारी नारीवाद का श्रेष्ठ अंश मौजूद है। लेकिन इतना काफी नहीं है। हमें शहरों और देहातों की करोड़ों मजदूर स्त्रियों को अपनी ओर लाना चाहिए। अपनी लड़ाइयों के लिए और खासतौर से समाज को कम्युनिस्ट समाज में परिवर्तित करने के लिए हमें उन्हें अपनी ओर लाना चाहिए। स्त्रियों के बिना कोई भी आंदोलन सच्चा जन-आंदोलन नहीं बन सकता।''

''हमारे संगठन-संबधी मतांतर हमारी विचारधारा द्वारा निश्चित होते हैं। स्त्रियों के लिए विशेष संगठनों की आवश्यकता नहीं। एक स्त्री-कम्युनिस्ट भी पुरूष-कम्युनिस्ट की ही तरह समान कर्त्तव्यों और समान अधिकारों सहित पार्टी की सदस्य है। इस बारे में दो राय नहीं हो सकती। तो भी हमें इस वास्तविकता की ओर से आंखें नहीं मूंद लेनी चाहिए कि मजदूर स्त्रियों में जागृति फैलाने, उन्हें पार्टी के संपर्क में लाने तथा उन्हें अपने प्रभाव में बनाए रखने के लिए पार्टी में अलग समितियां, ब्यूरो, कमीशन, गोष्ठियां या जो कुछ भी आवश्यक समझा जाए, बनाना चाहिए। इसके मानी है कि हम उनके अंदर बहुत ही व्यवस्थित ढंग से काम करें। जिन स्त्रियों को हम जागृत करें और अपनी ओर ले आएं, उन्हें हमें पार्टी के नेतृत्व में सर्वहारा के वर्ग-संघर्ष के लिए तैयार और शिक्षित करना चाहिए। मैं केवल कारखानों और घरों में काम करने वाली मजदूर स्त्रियों के बारे में सोच रहा हूं। गरीब किसान स्त्रियां और निम्न-मध्यम वर्ग की स्त्रियां भी पूंजीवाद के अत्याचारों की शिकार है और लड़ाई के बाद से तो और भी ज्यादा। इन स्त्रियों की सोच अराजनीतिक और असामाजिक तथा पिछड़ी हुई है। उनके काम के एक दूसरे से अलग-अलग क्षेत्र हैं और उनके जीवन का सारा तरीका पिछड़ा हुआ है। इसको नजरंदाज करना मूर्खता होगी। सरासर मूर्खता होगी। उनमें काम करने के लिए हमें खास तरह की समितियों, प्रचार के खास तरीकों तथा खास तरह के संगठनों की जरूरत है। यह नारीवाद नहीं है, बल्कि यही व्यावहारिक क्रांतिकारी आवश्यकता है।''

मैंने लेनिन को बताया कि उनके शब्दों ने मुझे बहुत ही ज्यादा प्रोत्साहित किया है। बहुत से साथियों ने और सो भी सामान्य नहीं, अच्छे साथियों ने इस विचार का कि स्त्रियों के बीच व्यवस्थित ढंग से काम करने के लिए पार्टी को विशेष समितियां बनानी चाहिए, जबरदस्त विरोध किया था। उसे वे 'नारीवादी' कहकर उस विचार तक का बहिष्कार करते थे। उनका आग्रह था कि स्त्री-पुरुषों के समान अधिकारों वाले

सिद्धांत के अनुसार कम्युनिस्ट पार्टियों को बिना किसी भेदभाव के मजदूर जनता में समान रूप से काम करना चाहिए। स्त्रियों के साथ भी पुरुषों के ही समान और एक ही तरह से बर्ताव करना चाहिए। लेनिन के द्वारा उल्लिखित परिस्थितियों में संगठन या प्रचार संबंधित मामलों पर विशेष ध्यान देने को विरोधी दृष्टिकोण वाले अवसरवादिता, पराजय और विश्वासघात के नाम से पुकारते थे।

''यह न तो कोई नई बात है और न कोई सबूत ही है'' लेनिन ने कहा, ''तुम्हें बहकावे में नहीं आना चाहिए। पार्टी में कभी भी स्त्रियों की संख्या आदमियों की संख्या के बराबर क्यों नहीं हुई? सोवियत रूस में भी कभी क्यों नहीं हुई? ट्रेड यूनियनों में संगठित की जाने वाले मजदूर स्त्रियों की संख्या भी इतनी कम क्यों हैं? - यह बातें विचारणीय है। स्त्रियों में हमारे काम के लिए विशेष समितियों की आवश्यकता को अस्वीकार करना कम्युनिस्ट लेबर पार्टी के हमारे चरम सिद्धांतवादी और अत्यंत बुद्धिवादी मित्रों की धारणा से मिलती-जुलती धारणा है। उनके विचार के अनुसार केवल एक तरह का संगठन होना चाहिए और वह है मजदूरों की यूनियनें। मैं उन्हें जानता हूं। बहुत से उलझे दिमाग वाले क्रांतिकारी 'विचारों की कमी' पड़ने पर यानी जब गंभीर वास्तविकता के आगे दिमाग ठप्प हो जाए, तो सिद्धांत का सहारा लेते हैं। शुद्ध सिद्धांत के ये रक्षक क्रांतिकारी नीति की आवश्यकताओं के साथ, जो इतिहास द्वारा हम पर डाल दी गई है, अपने विचारों का मेल किस तरह बैठाने की कोशिश करते हैं? न टाली जा सकने वाली आवश्यकता के आगे इस तरह की तमाम बातें हवा में उड़ जाती है। जब तक स्त्रियां लाखों की तादाद में हमारे साथ न आ जाएं, हम किसान-मजदूर राज्य को नहीं चला सकते और न कम्युनिस्ट तौर-तरीकों का निर्माण कार्य ही कर सकते हैं। हमें उन तक पहुंचने का तरीका ढूंढ़ना चाहिए, हमें परिश्रमपूर्वक वह तरीका ढूंढ़ना चाहिए।''

''और इसीलिए स्त्रियों के अनुकूल मांग रखना हमारे लिए उचित है। यह दूसरे इंटरनेशनल के सुधारवादियों के विचारों का स्वांत:सुखाय और सुधारवादी कार्यक्रम नहीं है। न यह इस बात की ही स्वीकृति है कि हम पूंजीवाद की अमरता और उसके राज्य के चिरकालीन शासन में विश्वास करते हैं। यह सुधारों के द्वारा स्त्रियों के आंसू पोंछने और उन्हें क्रांतिकारी लड़ाई के पथ से विचलित करने का प्रयत्न नहीं है। मतलब यह कि यह स्त्रियों को ठगने वाला कोई सुधारवादी छल-कपट नहीं है।''

''हमारी मांगें आज के दिन की प्रचंड आवश्यकताओं, पूंजीवादी समाज में स्त्री की अरक्षित और स्वत्वहीन दशा तथा उसके प्रति लज्जाजनक और अपमानपूर्ण व्यवहार से पैदा होने वाले अमली परिणाम हैं। इनके द्वारा हम यह सिद्ध करते हैं कि हम स्त्रियों की इन मांगों की वास्तविकता को स्वीकार करते हैं और आदमी को मिली सुविधाओं के रूप में स्त्री के प्रति जो निरादर की भावना प्रकट की गई है, उसके प्रति विवेकशील हैं। हम हरेक उस चीज से घृणा करते हैं, हां सचमुच घृणा करते हैं, जो मजदूर स्त्रियों को, गृहणियों को, किसान औरतों को, छोटे व्यापारियों की स्त्रियों को और बहुत से मामले में पूंजीपति वर्ग की स्त्रियों को सताती और उनका दमन करती है। हम ऐसी हरेक चीज से घृणा करते हैं और उसका विनाश करेंगे। पूंजीवादी समाज से हम स्त्रियों के लिए जिन अधिकारों और सामाजिक नियमों की मांग करते हैं, उनसे प्रगट होता है कि हम स्त्रियों की स्थिति और उनके हितों को समझते हैं और किसान-मजदूर राज्य में उनका पूरा ख्याल रखेंगे। उस तरह नहीं जैसे सुधारवादी करते हैं, अर्थात् उन्हें बेकार बनाकर और उनके गले में फंदा डालकर नहीं, कदापि नहीं! बल्कि सच्चे क्रांतिकारियों की तरह पुरानी अर्थनीति और विचार प्रणाली को बदलने के काम में उन्हें बराबरी का हिस्सा लेने के लिए उनका आह्वान करके।''

मैंने लेनिन को विश्वास दिलाया कि मैं उनके विचारों से सहमत हूं, परंतु दूसरे लोग उनका अवश्य ही विरोध करेंगे। अनिश्चित और भीरु विचारों वाले लोग इन विचारों को जोखिमपूर्ण अवसरवादिता समझेंगे। न हम इस बात से इंकार कर सकते हैं कि स्त्रियों की तात्कालिक मांगें गलत ढंग से तैयार और पेश की जा सकती हैं।

''बेकार की बात है!'' लेनिन ने किंचित् बिगड़ कर कहा, ''यह डर तो हमारे हरेक कथन में और काम में मौजूद है! इस डर की वजह से यदि हम उन कामों को न करें, जो सच्चे और आवश्यक हैं, तो हमारी दशा भारतीय वैरागियों की सी हो जाएगी। यानी अस्थिर मत हो, हिलने-डुलने की जरूरत नहीं। हम अपने सिद्धांतों पर दुनिया से अलग बैठकर विचार नहीं कर सकते हैं। हां, ठीक है, हमारे लिए अपनी मांगों का विषय ही नहीं, उन्हें प्रस्तुत करने का ढंग भी विचारणीय है। मेरे ख्याल से मैं उसे काफी स्पष्ट कर चुका हूं। स्त्रियों की मांगों को हम सुमिनरी के दानों की तरह एक के बाद एक यंत्रवत् उपस्थित नहीं करेंगे। कभी नहीं! प्रचलित परिस्थितियों के अनुसार और मेहनतकशों के आम हितों को दृष्टि में रखकर हमें कभी इस मांग के लिए कभी किसी दूसरी मांग के लिए लड़ना चाहिए।''

''इस तरह की हरेक लड़ाई में हमें स्थापित पूंजीवादी संबंधों और उनके उन सुधारवादी प्रशंसकों के विरोध में आना पड़ेगा, जिनके सामने अनिवार्य रूप से केवल दो ही रास्ते हैं। या तो वे हमारे साथ रह कर हमारे नेतृत्व में लड़ें - जो वे करना नहीं चाहते - या फिर अपनी असलियत प्रकट कर दें। मतलब यह कि इस तरह की लड़ाई हमारे और अन्य पार्टियों

के बीच जो भेद है, उसे अर्थात् हमारे कम्युनिज्म को स्पष्ट रूप से प्रकट कर देती है। इस संघर्ष से हम उस स्त्री समुदाय का विश्वास प्राप्त कर लेते हैं, जो आदमियों के प्रभुत्व, मालिकों की शक्ति और सारे पूंजीवादी समाज की व्यवस्था द्वारा आज लूटा-खसोटा तथा गुलाम और पद दलित बनाया जा रहा है। सब ओर से प्रवंचित और परित्यक्त मजदूर स्त्रियां इस सत्य को पहचानेंगी कि उन्हें हमारे साथ रह कर हमारे कंधे से कंधा भिड़ा कर लड़ना चाहिए। क्या मैं एक बार फिर तुम्हारे आगे सौगंध खाकर कहूं या तुमसे सौगंध खिलवाऊं कि स्त्रियों की मांगों के लिए हमारी लड़ाई राजसत्ता दखल के उद्देश्य तथा मजदूर राज्य स्थापना के कार्यक्रम के साथ संबद्ध होनी चाहिए? यह स्पष्ट है, बिल्कुल स्पष्ट है कि इस समय यही हमारा पहला और आखिरी काम है। लेकिन इतना याद रखना कि यदि हम इसी एक मांग को बार-बार आगे रखते रहें, फिर हम चाहे उसे ढोल बजाकर ही क्यों न रखें, तो मजदूर स्त्रियां कभी भी सत्ता दखल की हमारी लड़ाई में सम्मिलित होने के लिए बहुत उत्साह नहीं दिखलाएंगी। कभी नहीं। अगर हम चाहते हैं कि वे हमारे इस संघर्ष में हाथ बटाएं, तो उन्हें अपनी मागों के साथ उनके कष्टों और उनकी आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं के पारस्परिक राजनीतिक संबंध के प्रति सचेत करना होगा। उन्हें महसूस कराना होगा कि किसान-मजदूर राज्य का उनके लिए क्या महत्व है। किसान-मजदूर राज्य के अंतर्गत कानूनी तौर से और असली व्यवहार में भी परिवार, राज्य और समाज सब जगह में उन्हें आदमी के साथ पूरी समानता प्राप्त हो जाएगी और पूंजीपति वर्ग की शक्ति का खात्मा हो जाएगा।''

''सोवियत रूस इसका साक्षी है''- मैंने बीच में ही कहा।

''वह हमारी शिक्षाओं का एक ज्वलंत उदाहरण होगा,'' लेनिन कहते रहे, ''सोवियत रूस स्त्रियों के बारे में हमारी मांगों को नये रूप में पेश करता है। मजदूर राज्य में ये मांगें सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच लड़ाई-झगड़े के कारण नहीं हैं, बल्कि वे कम्युनिस्ट समाज व्यवस्था का एक अभिन्न अंग हैं। दूसरे देशों की स्त्रियों के लिए यह इस बात का प्रमाण है कि शासनसूत्र का मजदूरों के हाथ में आना उनके लिए निश्चित रूप से कितना महत्वपूर्ण है। स्त्रियों को मजदूरों के क्रांतिकारी वर्ग-संघर्ष में सम्मिलित करने के लिए इस चीज पर खूब जोर दिया जाना चाहिए। कम्युनिस्ट पार्टियों और उनकी विजय के लिए यह आवश्यक है कि स्त्रियों को एक स्पष्ट सैद्धांतिक समझ और संगठन की दृढ़ नींव पर एकत्रित किया जाए। लेकिन साथ ही हम अपने आपको भी कभी धोखा न दें। हमारे देश के विभिन्न जातीय खण्डों में अभी तक इस मामले की सही समझ की कमी है। कम्युनिस्ट नेतृत्व में मजदूर स्त्रियों के जन-आंदोलन के संगठन का काम पड़ा हुआ है और वे खड़े तमाशा देख रहे हैं। वे नहीं समझते कि इस तरह के जन-आंदोलन की उन्नति और व्यवस्था पार्टी के पूरे काम का एक महत्वपूर्ण, वास्तव में, उसके आम कार्य का आधा हिस्सा है। वे जो कभी-कभी एक सशक्त और स्पष्ट कम्युनिस्ट नारी-आंदोलन के मूल्य और आवश्यकता को मान लेते हैं तो पार्टी के प्रति अपनी निरंतर चिंता और कर्तव्यपरायणता को नहीं बल्कि इन चीजों के प्रति शाब्दिक और काल्पनिक स्वीकृति को व्यक्त करते हैं।''

''स्त्रियों में प्रचारकार्य, उनके अंदर जागृति और क्रांति की भावना फैलाना आदि को केवल एक आकस्मिक और केवल स्त्री साथियों से संबंधित मामला समझा जाता है। इस दिशा में काम यदि तेजी और जोश से नहीं होता है तो इसके लिए भी स्त्रियों की ही लानत-मलामत की जाती है। यह गलत है, बिल्कुल गलत है। यह तो सच्चे मानी में विलगतावाद और औंधा स्त्री-सुधार-आंदोलन है। हमारे जातीय क्षेत्रों में इस गलत व्यवहार के मूल में क्या है? विश्लेषण के बाद हम इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि इसका कारण है स्त्री और उसके काम का सही मूल्यांकन कर सकने की अक्षमता। हां, हां, सचमुच! दुर्भाग्य से हमारे बहुत से साथियों के बारे में अब भी यह कहावत चरितार्थ होती है कि भुलसे को रगड़ो तो तांबा दिखाई देगा। यानी कम्युनिस्ट का आवरण हटा दो तो तुम्हें फौरन मध्यवर्गीय मूर्ख के दर्शन हो जाएंगे। इसकी सत्यता जानने के लिए उनके कमजोर स्थल पर अर्थात् स्त्रियों के संबंध में उनकी मनोवृत्ति पर आघात करना होगा। आदमियों की शांत स्वीकृति का इससे अधिक घृणित और निंदनीय सबूत और क्या हो सकता है कि वे स्त्रियों को गृहस्थी के तुच्छ से तुच्छ और नीरस कामों में तिल-तिल कर गलते, उनकी शक्ति और समय को छीजते और नष्ट होते, उनके विचारों को संकुचित और बासी होते तथा उनके हृदयों की गति मंद और उनकी इच्छा शक्ति को क्षीण होते देखते हैं और फिर भी चुप रहते हैं? मैं पूंजीपति वर्ग की महिलाओं के बारे में कुछ नहीं कह रहा हूं, जो घर गृहस्थी की संपूर्ण जिम्मेदारियां, यहां तक कि बच्चों के पालन-पोषण को भी नौकरों के हवाले कर देती है। जो कुछ मैं कह रहा हूं वह अधिकांश स्त्रियों, मजदूरों की औरतों तथा सारा दिन कारखानों में खपने वाली मजदूर स्त्रियों के संबंध में बिल्कुल सही है।''

''बहुत थोड़े आदमी - सर्वहारा वर्ग में भी बहुत ही थोड़े आदमी इस बात को महसूस करते हैं कि यदि वे स्त्रियों के काम में थोड़ा बहुत भी हाथ बंटा लें, तो स्त्रियों को कितनी मुश्किलों और परेशानियों से वे बचा सकते हैं। यहां तक कि वे उन मुश्किलों और परेशानियों को हमेशा के लिए मिटा सकते हैं। लेकिन नहीं, वह 'आदमी की शान और प्रतिष्ठा' के खिलाफ है। वे अपनी शांति और आराम चाहते हैं। स्त्रियों

का घरेलू जीवन हजारों महत्वहीन व्यर्थताओं की बेदी पर एक दैनिक बलिदान है। आदमी में अब भी मालिक के अधिकार की भावना चोर की तरह दुबकी पड़ी है। गुलाम (स्त्री) भी अपना बदला चुपके से ही लेता है। स्त्रियों का पिछड़ापन और आदमी के क्रांतिकारी आदर्शों को समझने की अयोग्यता उसके आनंद को और लड़ने के निश्चय को कम कर देते हैं। मैं मजदूर के जीवन को जानता हूं और मेरा यह ज्ञान केवल किताबी नहीं है। स्त्रियों में हमारे कम्युनिस्ट काम के लिए, हमारे राजनीतिक काम के लिए आवश्यक है कि पुरुषों में भी काफी मात्रा में शिक्षण-कार्य किया जाए। पार्टी के अंदर तथा जनता के अंदर हमें इस पुरानी 'मालिक' वाली भावना को जड़मूल से उखाड़कर फेंक देना चाहिए। यह हमारा एक राजनीतिक कर्त्तव्य है। श्रमजीवी स्त्रियों के बीच काम करने के लिए जिस तरह सिद्धांतों और व्यवहार में कुशल पुरुष और स्त्री-साथियों की एक टोली तैयार करना आवश्यक है, उसी तरह पुरुषों के अंदर से इस 'मालिक' की भावना को खत्म करना भी अत्यंत आवश्यक है।''

इस संबंध में सोवियत रूस की स्थिति के बारे में मेरे प्रश्न का उत्तर देते हुए लेनिन ने कहा - ''किसानों-मजदूरों की सरकार कम्युनिस्ट पार्टी और ट्रेड यूनियनों की सहायता से स्त्रियों और पुरुषों के पिछड़े हुए विचारों पर विजय पाने और उनकी पुरानी गैर कम्युनिस्ट मनोवृत्ति को नष्ट करने का पूरा-पूरा प्रयत्न कर रही है। कानूनी तौर से स्त्रियों और पुरुषों के अधिकारों में पूरी समानता है और हर जगह इस समानता को व्यावहारिक रूप देने का पूरा-पूरा और ईमानदारी से प्रयत्न किया जाता है। हम स्त्रियों को समाज की आर्थिक व्यवस्था तथा शासन और प्रबंध के कामों में लगा रहे हैं। सभी शिक्षण-संस्थाएं उनके लिए खुली हैं ताकि वे अपनी पेशे-संबंधी तथा सामाजिक योग्यता बढ़ा सकें। हम सामूहिक रसोईघरों और भोजनालयों की, कपड़ा साफ करने और मरम्मत करने की दुकानों की, शिशु-गृहों (नर्सरियों), किंडर गार्डनों और बाल विहारों आदि हर तरह की शिक्षण संस्थाओं की स्थापना करते हैं। संक्षेप में, हम अलग-अलग घरों के आर्थिक और शिक्षण-प्रबंध को मिलाकर उसे सामूहिक रूप देने के कार्यक्रम को गंभीरतापूर्वक पूरा करने में संलग्न हैं। इससे औरतों को पुराने ढंग की घर की कमरतोड़ मेहनत और आदमी की गुलामी से छुटकारा मिल जाएगा। इससे उसे अपनी बुद्धि और इरादों का पूरा उपयोग करने का अवसर मिलता है। बच्चों की परवरिश घर की अपेक्षा कहीं ज्यादा अच्छी तरह की जाती है। स्त्री-मजदूरों के रक्षा के लिए हमने जो कानून बनाये हैं, वे दुनिया भर के स्त्री संबंधी कानूनों से अधिक प्रगतिशील हैं और संगठित मजदूरों के अपने नुमाइंदे ही उनको लागू करते हैं। हम जच्चाखानों की, जच्चा-बच्चा गृहों और जच्चा-बच्चा अस्पतालों की स्थापना कर रहे हैं और शिशुओं के देखभाल के विषयों पर व्याख्यानों का प्रबंध करते हैं तथा ऐसी प्रदर्शनियों का इंतजाम करते हैं जिनके द्वारा माताएं अपनी और अपने बच्चे की देख-रेख करना सीखें। हम इसी तरह के दूसरे बहुत से काम कर रहे हैं। बेकार और अरक्षित स्त्रियों के गुजारे के संबंध में भी हम काफी गंभीर प्रयत्न कर रहे हैं।''

''हम स्पष्ट रूप से यह महसूस करते हैं कि मजदूर स्त्रियों की आवश्यकता के मुकाबले में, उनकी सच्ची आजादी के लिए जितना कुछ आवश्यक है उसके मुकाबले में, यह सब बहुत ही नाकाफी है। तो भी जारशाही पूंजीवादी रूस के समय की दशाओं को देखते हुए यह एक जबरदस्त प्रगति है। उन देशों की दशा के मुकाबले में भी, जहां अभी पूंजीवाद का बोलबाला है, हमारा यह काम बहुत ही ज्यादा है। सही दिशा में एक बहुत ही अच्छा आरंभ है और तुम विश्वास मानो हम अपनी पूरी शक्ति से इसे और भी उन्नत करेंगे। सोवियत शासन का हरेक दिन इस बात को डंके की चोट से उजागर करता है कि स्त्रियों के बिना हम एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते। जरा इस पर विचार करो कि यह बात एक ऐसे देश में जहां की अस्सी प्रतिशत आबादी किसान हो, क्या मानी रखती है। देश में छोटे-छोटे खेतों वाली आर्थिक व्यवस्था का मतलब है अलग-अलग छोटी-छोटी गृहस्थियां और उनके साथ बंधी हुई गुलाम औरतें। अगर यह मान लिया जाए कि तुम्हारे यहां की मेहनतकश स्त्रियां क्रांति तथा सत्ता प्राप्ति की लड़ाई के ऐतिहासिक अवसर का उपयोग करेंगी, तो इस विषय में हमारी अपेक्षा तुम्हारे लिए काम अधिक आसान और अच्छा होगा। किन्तु इससे हम निराश नहीं होते। हमारी कठिनाइयों के साथ हमारी शक्ति भी बढ़ती है। वास्तविकताओं का दबाव हमें स्त्री समाज की मुक्ति के लिए नए तरीके को खोज निकालने को प्रेरित करेगा। सोवियत शासन के साथ-साथ सहयोग समितियों का आंदोलन भी इस दिशा में काफी सहायक सिद्ध होगा। लेकिन सहयोग सच्चे कम्युनिस्ट अर्थ में, सुधारवादियों द्वारा प्रचारित पूंजीवादी अर्थ में नहीं! उनका सस्ता, गैर-क्रांतिकारी जोश थोड़े ही समय में भाप की तरह उड़ जाता है। सहयोग-समितियों के आंदोलन के साथ-साथ वैयक्तिक प्रयत्न और पहल भी चलने चाहिए। ताकि यह पहल बढ़ते-बढ़ते सामूहिक काम के साथ मिलकर एकाकार हो जाए। मेहनतकश राज्य में देहातों में भी स्त्रियों की मुक्ति कम्युनिज्म की उन्नति के जोर से ही होगी। इस संबंध में मेरी बड़ी से बड़ी आशाएं देश के उद्योग-धंधों और खेती के विद्युतिकरण पर निर्भर करती हैं। बहुत बड़ा काम है वह। और उसको कार्यान्वित करने के रास्ते की कठिनाइयां भी बेशुमार है। उसे पूरा करने के लिए विशालतम जन-शक्ति को जागृत करना और उसमें लगाना होगा और लाखों करोड़ों स्त्रियों की शक्ति की भी मदद लेनी होगी।''

शहीद-ए-आजम भगत सिंह के शहादत दिवस (23 मार्च) पर विशेष लेख

अदालत एक ढकोसला है

(आज से 87 वर्ष पूर्व शहीद-ए-आजम भगत सिंह ने खुद सहित छह साथियों की ओर से 5 मई 1930 को यह पत्र कमिश्नर, विशेष ट्रिब्यूनल, लाहौर साजिश केस, लाहौर को लिखा था। इस पत्र में अदालत की जो व्याख्या की गई है, तथाकथित आजादी के बाद भी अदालत की व्याख्या समान ही है।

इस पत्र को हम इस उम्मीद व विश्वास के साथ यहां प्रकाशित कर रहे हैं, ताकि हमारी पार्टी व पीएलजीए समेत तमाम कतार इसे पढ़कर अदालत के ढकोसले के बारे में जानें। - संपादकमंडल, लाल चिनगारी)

कमिश्नर,

विशेष ट्रिब्यूनल,

लाहौर साजिश केस, लाहौर

जनाब,

अपने छह साथियों की ओर से, जिनमें कि मैं भी शामिल हूं, निम्नलिखित स्पष्टीकरण इस सुनवाई के शुरू में ही देना आवश्यक है। हम चाहते हैं कि यह दर्ज किया जाए।

हम मुकदमे की कार्रवाई में किसी भी प्रकार भाग नहीं लेना चाहते, क्योंकि हम इस सरकार को न तो न्याय पर आधारित समझते हैं और न ही कानूनी तौर पर स्थापित। हम अपने विश्वास से यह घोषणा करते हैं कि 'समस्त शक्ति का आधार मनुष्य है। कोई व्यक्ति या सरकार किसी भी ऐसी शक्ति की हकदार नहीं है जो जनता ने उसको न दी हो।' क्योंकि यह सरकार इन सिद्धांतों के विपरीत है, इसलिए इसका अस्तित्व ही उचित नहीं है। ऐसी सरकारें, जो राष्ट्रों को लूटने के लिए एकजुट हो जाती हैं, उनमें तलवार की शक्ति के अलावा कोई आधार कायम रहने के लिए नहीं होता। इसीलिए वे वहशी ताकत के साथ मुक्ति और आजादी के विचार और लोगों की उचित इच्छाओं को कुचलती हैं।

हमारा विश्वास है कि ऐसी सरकारें, विशेषकर अंग्रेज सरकार, जो असहाय और असहमत भारतीय राष्ट्र पर थोपी गई है, गुंडों, डाकुओं का गिरोह और लूटेरों का टोला है, जिसने कत्लेआम करने और लोगों को विस्थापित करने के लिए सब प्रकार की शक्तियां जुटाई हुई हैं। शांति-व्यवस्था के नाम पर यह अपने विरोधियों या रहस्य खोलने वाले को कुचल देती है।

हमारा यह भी विश्वास है कि साम्राज्यवाद एक बड़ी डाकेजनी की साजिश के अलावा कुछ नहीं। साम्राज्यवाद मनुष्य के हाथों मनुष्य के और राष्ट्र के हाथों राष्ट्र के शोषण का चरम है। साम्राज्यवादी अपने हितों और लूटने की योजनाओं को पूरा करने के लिए न सिर्फ न्यायालयों एवं कानून को कत्ल करते हैं, बल्कि भयंकर हत्याकांड भी आयोजित करते हैं। जहां कहीं लोग उनकी नादिरशाही शोषणकारी मांगों को स्वीकार न करें या चुपचाप उनकी ध्वस्त कर देने वाली और घृणा योग्य साजिशों को मानने से इनकार कर दें तो वह निरपराधियों का खून बहाने से संकोच नहीं करते। शांति-व्यवस्था की आड़ में वे शांति-व्यवस्था भंग करते हैं। भगदड़ मचाते हुए लोगों की हत्या, अर्थात् हर संभव दमन करते हैं।

हम मानते हैं कि स्वतंत्रता प्रत्येक मनुष्य का अमिट अधिकार है। हर मनुष्य को अपने श्रम का फल पाने जैसा सभी प्रकार का अधिकार है और प्रत्येक राष्ट्र अपने मूलभूत प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण स्वामी है। अगर कोई सरकार जनता को अपने इन मूलभूत अधिकारों से वंचित रखती है तो जनता का केवल यह अधिकार ही नहीं बल्कि आवश्यक कर्तव्य भी बन जाता है कि ऐसी सरकार को समाप्त कर दे। क्योंकि ब्रिटिश सरकार इन सिद्धांतों, जिनके लिए हम लड़ रहे हैं, के बिल्कुल विपरीत है, इसलिए हमारा दृढ़ विश्वास है कि जिस भी ढंग से देश में क्रांति लाई जा सके इसके लिए हर प्रयास और अपनाए गये सभी ढंग नैतिक स्तर पर उचित है। हम वर्तमान ढांचे के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के पक्ष में हैं। हम वर्तमान समाज को पूरे तौर पर एक नये सुगठित समाज में बदलना चाहते हैं। इस तरह मनुष्य के हाथों मनुष्य का शोषण असंभव बनाकर सभी के लिए सब क्षेत्रों में पूरी स्वतंत्रता विश्वसनीय बनाई जाए। जब तक सारा सामाजिक ढांचा बदला नहीं जाता और उसके स्थान पर समाजवादी समाज स्थापित नहीं होता, हम महसूस करते हैं कि सारी दुनिया एक तबाह कर देने वाले प्रलय-संकट में है।

जहां तक शांतिपूर्ण या अन्य तरीकों से क्रांतिकारी आदर्शों की स्थापना का संबंध है, हम घोषणा करते हैं कि इसका चुनाव तत्कालीन शासकों की मर्जी पर निर्भर है। क्रांतिकारी अपने मानवीय प्यार के गुणों के कारण मानवता के पुजारी हैं। हम शाश्वत और वास्तविक शांति चाहते हैं, जिसका आधार न्याय और समानता है। हम झूठी और दिखावटी शांति के

समर्थक नहीं, जो बुजदिली से पैदा होती है और भालों और बंदूकों के सहारे जीवित रहती है। क्रांतिकारी अगर बम और पिस्तौल का सहारा लेता है तो यह उसकी चरम आवश्यकता में से पैदा होता है और आखिरी दांव के तौर पर होता है। हमारा विश्वास है कि अमन और कानून मनुष्य के लिए है, न कि मनुष्य अमन और कानून के लिए।

फ्रांस के उच्च न्यायाधीश का यह कहना उचित है कि कानून की आंतरिक भावना स्वतंत्रता समाप्त करना या प्रतिबंध लगाना नहीं, वरन् स्वतंत्रता को सुरक्षित रखना और उसे आगे बढ़ाना है। सरकार को कानूनी शक्ति उन उचित कानूनों से मिलेगी जो केवल सामूहिक हितों के लिए बनाए गए हैं और जो जनता की इच्छाओं पर आधारित हों, जिनके लिए यह बनाए गए हैं। इससे विधायकों समेत कोई भी बाहर नहीं हो सकता।

कानून की पवित्रता तभी तक रखी जा सकती है जब तक वह जनता के दिलों यानी भावनाओं को प्रकट करता है। जब यह शोषणकारी समूह के हाथों में एक पुर्जा बन जाता है, तब अपनी पवित्रता और महत्व खो बैठता है। न्याय प्रदान करने के लिए मूल बात यह है कि हर तरह के लाभ या हित का खात्मा होना चाहिए। ज्यों ही कानून सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करना बंद कर देता है, त्यों ही जुल्म और अन्याय को बढ़ाने का हथियार बन जाता है। ऐसे कानूनों को जारी रखना सामूहिक हितों पर विशेष हितों की दम्भपूर्ण जबरदस्ती के सिवाय कुछ नहीं है।

वर्तमान सरकार के कानून विदेशी शासन के हितों के लिए चलते हैं और हम लोगों के हितों के विपरीत हैं। इसलिए इनकी हमारे ऊपर किसी भी प्रकार की सदाचारिता लागू नहीं होती।

अत: हर भारतीय की यह जिम्मेदारी बनती है कि इन कानूनों को चुनौती दे और इनका उल्लंघन करे। अंग्रेज न्यायालय, जो शोषण के पुर्जे हैं, न्याय नहीं दे सकते। विशेषकर राजनीतिक क्षेत्रों में जहां सरकार और लोगों के हितों का टकराव है। हम जानते हैं कि ये न्यायालय सिवाय न्याय के ढकोसले के और कुछ नहीं हैं।

इन्हीं कारणों से हम इसमें भागीदारी करने से इनकार करते हैं और इस मुकदमे की कार्रवाई में भाग नहीं लेंगे।

(जज ने नोट किया - यह रिकॉर्ड में तो रखा जाए लेकिन इसकी कॉपी न दी जाए, क्योंकि इसमें कुछ अनचाही बातें लिखी हैं।)

पृष्ठ संख्या 31 का शेष

ब्रिगेड को घर पर जंजीर से बांध दिया जाए, तो उत्पादन और क्रांति आगे कैसे बढ़ेगी?'' उसी समय, सुंग ली-यिंग सास से बात कर रही थी, ''पुरानी समय में हम महिलाएं मनुष्यों जैसी नहीं थीं। हमारी कहीं कोई अधिकार नहीं थी। अब जब अध्यक्ष माओ और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने हमें मुक्ति दिला दी है, हमें जनता के मामले संचालन करने में महिलाओं की मदद करनी चाहिए।''

विशाल भूमिका

महिला कैडर क्रांति और उत्पादन में अत्यधिक भूमिका अदा करती हैं। संपूर्ण ब्रिगेड के हितों का प्रतिनिधित्व करते हुए वह पार्टी संगठन और महिलाओं के जनसमूहों के बीच कड़ी बन गई हैं। जबकि सुंग ली-यिंग व्यस्त रहती है, वह खेत में उपयोगी मेहनत करना कभी नहीं भूलती। काउ फेंग-लियन भी हर मौसम में खेतों में आगे होकर काम करती है। घर पर तीन बच्चे होने के बावजूद काउ इ-लियन खेत में एक साल के 365 काम के दिनों में से औसतन 300 दिन काम पर रहती है। इनके उदहारण से सबक लेकर ताचाई की महिलाएं परुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर बोने, काटने और जमीन संवारने का काम करती है। क्रांति के लिए खेती के प्रति उनका उत्साह लगातार बढ़ रहा है।

महिला कैडर अपने बच्चों के लिए आदर्श हैं। वह समझती है कि नये समाज में पले-बढ़े उनके बच्चे पुरानी गरीबी के बारे में नहीं जानते, इसलिए वह असानी से श्रेष्ठ भाव में आ सकते है क्योंकि वह कैडरों के बच्चे हैं और पूरे देश में जानी-पहचानी उन्नत यूनिट से संबंध रखते हैं, इसलिए महिला कैडर बच्चों के लालन-पालन पर खास ध्यान देती है। उनके प्रयासों के कारण पूर्व के गरीब और निम्न-मध्यम वर्ग के किसानों के बच्चे ध्यान से पढ़ते हैं, आलसीपन को त्यागते हैं और मेहनत को प्यार करते हैं तथा समूहिक हितों को ही सीने में समाए रखते हैं।

सुरक्षाबलों द्वारा बस्तर में सामूहिक बलात्कार

(यह लेख एक हिन्दी मासिक पत्रिका से लिया गया है। यह लेख यह साबित करता है कि किस तरह भारतीय राजसत्ता के मुख्य अंग यानी कि सुरक्षा बलों द्वारा छत्तीसगढ़ में नए समाज के लिए संघर्षरत आदिवासी महिलाओं पर जुल्म ढाये जा रहे हैं। लेकिन यह सिर्फ बस्तर की महिलाओं की ही कहानी नहीं है बल्कि पूरे देश के संघर्षरत महिलाओं की भी यही कहानी है। - संपादकमंडल, लाल चिनगारी)

एक बार फिर : एक नहीं, दो नहीं, चालीस की चालीस मादरे हिंद की ही आदिवासी बेटियों के साथ बलात्कार, सामूहिक बलात्कार, यौन हिंसा और अन्य तरीके से शारीरिक हिंसा की गई। इनमें कई औरतों के साथ कई बार सामूहिक बलात्कार हुआ। चार महीने की एक गर्भवती महिला को पानी में डुबा-डुबा कर सामूहिक बलात्कार किया गया। बलात्कार की शिकार इन महिलाओं में, वह किशोरी 14 वर्ष की मासूम नाबालिग लड़की भी शामिल है, जिसकी आंखों में पट्टी बांध कर सामूहिक बलात्कार किया गया। उस समय 'भारत मां' की ये बेटी अपनी मवेशी चरा रही थी।

मादरे हिंद की इन आदिवासी बेटियों की मानवीय गरिमा को रौंदने वाले और उनकी अस्मिता को तार-तार कर देने वाले लोग कोई घोषित यौन मनोरोगी या अपराधी नहीं थे, बल्कि छत्तीसगढ़ के सुरक्षा बल के 'रण बांकुरे' थे। मानवता को शर्मसार कर देने वाली यह कोई पहली घटना नहीं है, दुर्भाग्य है लेकिन यह घिनौना सच है कि इस देश की, जो हालात हैं, और देश जिस दिशा में जा रहा है, यह अंतिम घटना भी नहीं मानी जा सकती। छत्तीसगढ़ के बस्तर इलाके में ये घटनाएं आए दिन होती रहती हैं, औरतों को निर्वस्त्र करना, उनके साथ यौन हिंसा करना और प्रताड़ित करने के अन्य तरीके अपनाना, इस इलाके में सुरक्षा बलों की नियमित कार्रवाई का हिस्सा है। अधिकांश मामलों में आदिवासी महिलाओं के साथ होने वाले कुकृत्यों की सूचना तक देश के शेष हिस्सों में नहीं पहुंचती। पहला कारण तो यह है कि यह अपराध वे लोग करते हैं जिनके जिम्मे इन अपराधों के खिलाफ प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफआईआर) दर्ज करने का अधिकार है। दूसरी बात, यह कि केंद्र से लेकर राज्य के सत्ताधारियों के बीच इस बात को लेकर आम सहमति है कि सुरक्षा बलों को 'बदनाम' करने वाली कोई भी सूचना सार्वजनिक न होने पाये और यदि ऐसा हो जाए तो उस पर पूरी तरह लीपा-पोती कर दी जाए या जांच प्रक्रिया में मामले को रफा-दफा कर दिया जाए। क्योंकि अक्सर जांच भी उन्हीं के जिम्मे होती है, जो अपराध को अंजाम देते हैं। तीसरी बात यह कि बस्तर क्षेत्र दुनिया के सबसे सैन्यीकृत इलाकों में से एक है, यहां के सात जिलों में एक लाख कर्मी लगे हुए है, जिनमें स्थानीय पुलिस, सीआरपीएफ और अन्य केंद्रीय सैन्य बल शामिल है, जिसमें कुख्यात स्पेशल फोर्स कोबरा (कमांडो बटालियन फॉर रिजोल्यूट एक्शन) भी शामिल है। साथ ही साथ समय-समय पर सेना की मदद की भी सूचना मिलती है। इसके अलावा राज्य सरकार, कॉरपोरेट घरानों और राजनीतिक दलों के गठजोड़ से खड़ी की गई लंपटों माफियाओं-अपराधियों और दलों की निजी सेना भी हैं, जो कभी सलवा जुडुम के नाम से काम करती थी, फिर इसे सामाजिक एकता मंच (एसईएम) नाम दिया गया। आजकल इसका नाम एक्शन ग्रुप ऑफ नेशनल इंट्रीगेशन (अग्नि) रख दिया गया है। सुरक्षा बलों द्वारा इस इलाके की इस तरह घेरा बंदी की गई है कि उनकी अनुमति के बिना पंछी भी पर नहीं मार सकता है, ऐसे में इन जघन्य अपराधों की कभी कभार ही सूचना बाहर आ पाती है। स्थानीय सामाजिक संगठन, स्वयं सेवी संस्थाएं, कानूनी सहायता समूह, पत्रकार और अन्य अकादमिक दायरे के व्यक्ति जब इन अपराधों पर से पर्दा उठाने की कोशिश करते हैं, तो उन्हें देशद्रोही और माओवादी-नक्सली ठहराने की कोशिश की जाती है और कईयों को इस नाम पर जेलों में ठूंसा जाता रहा है। सुरक्षा एजेंसियां ऐसे लोगों के पीछे पड़ जाती हैं और उनका जीना हराम कर देती है। ऐसी घेराबंदी के बीच से राज्यसत्ता द्वारा पोषित और संरक्षित मानवता को शर्मसार करने वाले इन अपराधों की सूचना आए, तो कैसे? ध्यान रखने की बात यह है कि इस राज्य में पिछले 13 वर्षों से रमन सिंह के नेतृत्व में भाजपा राज कर रही है।

भारतीय सुरक्षा बलों द्वारा अंजाम दिये गये ऐसे ही जघन्य अपराधों के एक छोटे से अंश की पुष्टि राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (नेशनल ह्यूमैन राइट्स कमीशन- एनएचआरसी) ने की है, शायद यह स्वीकृति गिनी-चुनी महिलाओं को ही सही न्याय दिलाने की दिशा में एक छोटा कदम साबित हो। भारतीय राजसत्ता की एक स्वायत्त संस्था-एनएचआरसी ने सात जनवरी 2017 की अपनी रिपोर्ट में माना है कि ''प्रथम दृष्टया यह पाया गया कि 16 महिलाओं के साथ बलात्कार, यौन हिंसा और शारीरिक प्रताड़ना हुई है और इसे छत्तीसगढ़ राज्य पुलिस बल के जवानों ने अंजाम दिया है।'' साथ ही आयोग ने यह भी कहा कि 20 अन्य महिलाओं के बयान एक महीने

के अंदर दर्ज किये जाएं, जिनका बयान आयोग नहीं ले पाया है और जिन्होंने पुलिस बलों पर बलात्कार का आरोप दर्ज कराया है। आयोग ने यह माना कि उसने जिन 16 महिलाओं के बयान दर्ज किए उनमें से कम से कम आठ के साथ बलात्कार, छह के साथ यौन हिंसा की गई है और दो को शारीरिक प्रताड़ना का शिकार होना पड़ा है। आयोग ने सख्त लहजे में कहा, ''प्रथम दृष्टया यह पाया गया कि पीड़िताओं के मानवाधिकारों का बुरी तरह हनन किया गया और इसके लिए राज्य सरकार उत्तरदायी है।'' इसके साथ ही आयोग ने छत्तीसगढ़ के मुख्य सचिव को नोटिस भेजकर यह पूछा कि क्यों नहीं इन महिलाओं को 37 लाख की अंतरिम आर्थिक सहायता दी जानी चाहिए। इस जांच के दौरान ही आयोग के सामने 21 जनवरी 2016 के उन आरोपों को भी सामने लाया गया, जिसमें छत्तीसगढ़ में 11 जनवरी से 14 जनवरी 2016 के बीच बीजापुर जिले के बेल्लाम लेंद्रा (नेंद्रा) गांव की 13, सुकमा जिले के कुन्ना गांव की छह और दांतेवाड़ा जिले के चोटेगड़म गांव की महिलाओं के साथ सुरक्षा बलों ने सामूहिक बलात्कार किया था। केवल तीन महीने के अंदर ही ऐसी 46 घटनाएं हुई। आयोग ने इस संदर्भ में राज्य सरकार से रिपोर्ट मांगी है।

इसके पहले 11 और 16 मार्च 2011 की उस घटना की जांच, जिसमें दांतेवाड़ा जिले के 250 आदिवासी घरों को केंद्रीय और राज्य सुरक्षा बलों द्वारा फूंक दिया गया था, सीबीआई द्वारा कराने का आदेश सुप्रीम कोर्ट ने दिया था। इस जांच में जहां यह पाया गया कि घरों को जलाने का काम सुरक्षा बलों ने ही किया था, वहीं इसी जांच के दौरान इस बात की भी पुष्टि हुई थी कि तीन महिलाओं के साथ सुरक्षा बलों ने बलात्कार किया था।

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग द्वारा संज्ञान में ली गई और उसके द्वारा जांच की गई, 40 महिलाओं के साथ यौन हिंसा की इस घटना को 14 महीनों से अधिक हो गये हैं। इस 14 महीनों में जनपक्षधर संस्थाओं और व्यक्तियों के अथक प्रयास के बाद सिर्फ इतना ही हुआ कि भारतीय राज्यसत्ता की एक संस्था ने यह मान लिया कि, ''प्रथम दृष्टया लगता है कि यौन हिंसा या हिंसा हुई है।'' ये घटनाएं 19 से 24 अक्टूबर के बीच बीजापुर जिले के चार गांवों – पेगडापल्ली, चिन्नागेल्लुर, गुड़ाम और बरमीचेरू- की हैं। जब इन महिलाओं ने अपने साथ हुए नृशंस अत्याचारों की रिपोर्ट दर्ज कराने की कोशिश की तो पुलिस ने उन्हें दुत्कार कर भगा दिया। फिर किसी तरह स्वयंसेवी संस्थाओं वीमैन एगेंस्ट सेक्सुअल वॉयलेंस एंड स्टेट रिप्रेशन (महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा और राजकीय दमन – डब्ल्यूएसएस) और जगदलपुर लीगल एड ग्रुप के दबाव डालने पर प्रथम सूचना रिपोर्ट तो दर्ज हो गई, लेकिन न कोई कार्रवाई हुई और न ही किसी की गिरफ्तारी। यहां तक कि हिंसा की शिकार सभी महिलाओं के आदिवासी होने के बावजूद अनुसूचित जाति और जनजाति (अत्याचार से बचाव) अधिनियम के तहत मुकदमा भी दर्ज नहीं किया गया। अंततः दो नवंबर 2015 को प्रमुख अंग्रेजी दैनिक *इंडियन एक्सप्रेस* में यह खबर प्रकाशित हुई। उसका स्वतः संज्ञान लेते हुए राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने जांच शुरू की। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग में इन महिलाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले किशोर नारायण ने अंतर्राष्ट्रीय समाचार एजेंसी एएफपी (एजेंसी फ्रांस प्रेस) को बताया कि ''पीड़ित महिलाओं ने इस बर्बरता में शामिल पुलिस वालों का नाम बताया है, इसके बावजूद कुछ नहीं हुआ। उन्होंने यह भी कहा कि वे (सरकारी विभाग) फिर से जांच का ढोंग करेंगे और मामले को रफा-दफा कर देंगे।'' पीड़िताओं की वकील ईशा खंडेलवाल ने द *हिंदू* अखबार से कहा कि मजिस्ट्रेट की उपस्थिति में पुलिस के सामने आठ महिलाओं ने यह बाताया कि सुरक्षा बलों द्वारा उनके साथ सामूहिक बलात्कार किया गया। पुलिस की जघन्य क्रूरता की भुक्तभोगी सोनी सोरी द्वारा आयोजित प्रेस कांफ्रेंस में महिलाओं ने आपबीती बताते हुए कहा कि उनके साथ सामूहिक बलात्कार किया गया। एक वर्ष से अधिक के इस दौर में बस्तर क्षेत्र, सुरक्षा बलों द्वारा बलात्कार की सैकड़ों घटनाओं का साक्षी बना। ऑल इंडिया पीपुल्स फोरम ने अपनी जांच में पाया कि आठ जनवरी 2016 को दांतेवाड़ा थाने के पोड़म गांव की 14 वर्ष की लड़की, जब अपनी किराये की दुकान बंद कर रही थी, उसी समय एक सीआरपीएफ का जवान आया, जिसने उसके साथ पूरी रात बलात्कार किया। थाने में शिकायत करने के तीन दिन बाद उसे चिकित्सकीय जांच के लिए भेजा गया। आज तक कोई गिरफ्तारी नहीं हुई है। एमनेस्टी इंटरनेशनल ने महिलाओं के खिलाफ हिंसा की इन घटनाओं का संज्ञान लेते हुए चिंता जाहिर करते हुए कहा कि ''आदिवासी महिलाओं के साथ बलात्कार और यौन हिंसा की रिपोर्ट तुरंत दर्ज की जाए।''

बस्तर क्षेत्र में पहले तो सुरक्षा बलों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराना ही आदिवासी महिलाओं के लिए नामुमकिन सा काम है, अगर किसी तरह एफआईआर दर्ज कराने में सफलता मिल भी गई, तो फिर मजिस्ट्रेट के सामने बयान दर्ज कराने की कठिन अग्नि परीक्षा शुरू होती है। यह काम कितना दुसाध्य है, इसका अंदाज बीजापुर में बलात्कार की शिकार चार गांवों की महिलाओं की इन कहानी से समझा जा सकता है। इन गांवों से बीजापुर अदालत परिसर की दूरी 71 किलोमीटर है। गांव से उस जगह में पहुंचने में जहां से बीजापुर की बस मिलती है, 19 किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है। पहाड़ों-जंगलों के इन दुर्गम रास्ते को पार कर

महिलाएं बस अड्डे तक पहुंचती है, उसे रात में किसी गांव में रूकना पड़ता है, ताकि वे सुबह-सुबह बस पकड़ सके। क्योंकि पूरे दिन में मात्र एक बस बीजापुर के लिए जाती है। फिर महिलाएं अदालत परिसर पहुंचती हैं। इस प्रकार हर बार अपना बयान दर्ज कराने के लिए महिलाएं 19 किलोमीटर पैदल जाती हैं और आती हैं। फिर उन्हें शाम को लौटने वाली एकमात्र बस को किसी भी हालत में पकड़ना होता है। यदि बयान दर्ज कराने की प्रक्रिया में देरी हो गई, तो बस छूट जाती है और उन्हें रात वहीं-कहीं सड़क के किनारे बितानी पड़ती हैं। इस संदर्भ में ध्यान देने वाली बात एक और है कि महिलाएं समूह में बयान दर्ज कराने जाती हैं, ऐसे में उन्हें दो तीन दिनों तक रूकने का कोई ठौर-ठिकाना ढूंढना पड़ता है। बीजापुर शहर में यह काम उनके लिए कितना मुश्किल भरा होता है, इसका अंदाजा वस्तुस्थिति से अवगत व्यक्ति ही लगा सकता है। पहली बात तो यह कि 19 किलोमीटर की पैदल बीहड़ यात्रा अकेले पूरी करना संभव नहीं लगता, क्योंकि जंगली जानवरों के डर के अलावा मानव रूपी दरिंदों का भय भी उनके जेहन में रहता है। इसके अलावा साथ में होने से उनका आत्मविश्वास भी बना रहता है और वे सही बयान दे पाती हैं क्योंकि पुलिस से लेकर सरकारी वकील आदि सभी, उनके बयानों को बदलने के लिए सारे हथकंडे अपनाते हैं। इतना ही नहीं, कई बार तो पुलिस उन्हें अदालत परिसर में ही घुसने नहीं देती। बलात्कार की शिकार एक पीड़िता ने इंडियन एक्सप्रेस संवाददाता को बताया कि ''वह अदालत गई। अदालत के दरवाजे पर खड़े पुलिस वाले ने उसे अंदर ही नहीं जाने दिया, लोग आते-जाते रहे हम वापस आ गये।'' इन हालातों में पेडागेल्लुर की कुछ महिलाएं मजिस्ट्रेट के सामने बयान दर्ज कराने उपस्थित नहीं हो पाई तो उन बलात्कार पीड़ितों के खिलाफ ही बीजापुर के अदालत ने गैर जमानती वारंट जारी कर दिया।

ये जिन गांवों की महिलाएं है, उनकी जीवन स्थितियों से कोई भी यह अंदाजा लगा सकता है कि उनके लिए तीन-चार दिन खाली वक्त निकालना कितना कठिन है। सिर्फ एक गांव पेडागेल्लुर की थोड़ी सी सच्चाई देखें: यहां कुल 137 घर है, घर क्या है झोपड़ियां हैं। यहां न कोई स्कूल है, न ही प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र। यहां तक कि न बिजली है और न ही कोई शौचालय। स्त्री-पुरूष सभी रात दिन खटते हैं। तो किसी तरह पेट की आग बुझा पाते हैं। पानी का केवल एक ही स्रोत है, बारिश का पानी। थोड़े से खेत हैं, वर्ष में एक फसल होती है। साल में एक महीने के लिए लोग बगल में आंध्रप्रदेश में मिर्च तोड़ने जाते हैं, प्रतिदिन 12 घंटा खटने के बाद लगभग 150 रूपये मिल जाते हैं। यही इस गांव की सबसे बड़ी वार्षिक कमाई है। जहां रोज के खाने के लाले पड़ें हों, बच्चों का पेट भरने और खुद की क्षुधा की आग बुझाना ही मुश्किल हो रहा हो, ऐसी परिस्थिति में एफआईआर दर्ज कराने और अदालत का चक्कर लगाने की हिम्मत का टूट जाना सामान्य बात है। हालात कितने कठिन हैं, इसका अंदाजा मात्र इस बात से भी लगाया जा सकता है कि जब इंडियन एक्सप्रेस संवाददाता पेडागेल्लूर गांव में बलात्कार पीड़ितों से मिलने पहुंचा तो एक बलात्कार पीड़ित तीन दिन के बाद जंगल से लौटी थी। इन हालातों के संदर्भ में पीड़िताओं की वकील ईशा खंडेलवाल कहती है कि ''कितनी व्यावहारिक दिक्कतों से गुजर कर ये महिलाएं न्याय के लिए संघर्ष कर रही हैं। इनकी परिस्थितियों से अनभिज्ञ किसी आदमी के लिए अंदाज लगाना मुश्किल है।''

यह तो मादरे हिंद की अभागी बेटियों की व्यथा-कथा, किसी के मन में सहज ही यह प्रश्न उठेगा कि आखिर भारतीय राजसत्ता और उसके सुरक्षा बल इन मासूम आदिवासी महिलाओं और बच्चियों के प्रति इतने आक्रामक, निष्ठुर और निर्मम, इतने जालिम क्यों हो गये हैं! क्यों क्रूर से क्रूरतम तरीके अपनाकर मानवीय गरीमा और अस्मिता को रौंद रहे हैं? क्यों प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तरीके से राजसत्ता के शीर्ष पर बैठे राजनेता, नौकरशाह ओर वरिष्ठ पुलिस अधिकारी नाना प्रकार के मनगढ़ंत तर्क देकर इन स्थितियों को न्यायसंगत और जायज ठहराने की कोशिश कर रहे हैं?

इसी के साथ दूसरा प्रश्न उठता है कि सुरक्षा बलों की, मानवता को शर्मसार करने वाले इतने जघन्य अपराधों पर देश की मुख्य धारा में चुप्पी क्यों छाई हुई है, विशेषकर उस मीडिया में जो बेंगलुरू और दिल्ली के यौन उत्पीड़न की घटनाओं पर गला फाड़-फाड़ कर हफ्तों चिल्लाता रहा, लेकिन एक नहीं, चालीस, पच्चास, साठ महिलाओं के साथ कुछ महीनों कें अंदर ही 'मादरे हिंद के रक्षक' सामूहिक बलात्कार करते हैं और कोई आवाज उठाने वाला नहीं मिलता? इन प्रश्नों के जवाब में बहुत कुछ कहा-सुना जा चुका है, तब भी स्मृतिभ्रंश और स्मृति लोप के इस दौर में उस कहे-सुने को पुनः दोहराना जरूरी है।

हम सभी अच्छी तरह जानते हैं कि बस्तर क्षेत्र में देश-दुनिया के सभी कॉरपोरेशनों की नजर लगी हुई है। वह इसलिए कि इस क्षेत्र में 70 प्रतिशत आदिवासी है, जिस भूमि पर वे रहते हैं, खेती करते हैं, मवेशी चराते हैं और जिन जगलों से अपने जीवन जीने के साधन जुटाते हैं, जिन जल स्रोंतो से पानी पीते हैं, उस सब के नीचे अमूल्य खनिज पदार्थ दबे पड़े हैं, जिसमें बॉक्साइट, डोलोमाइट, लौह अयस्क, चूना पत्थर, गार्नेट, संगमरमर, ग्रेनाइट, टिन कोरूनडम, कोयला आदि शामिल है। टाटा और एस्सार के हित इस क्षेत्र से बड़े पैमाने पर जुड़े हुए हैं। यहां टाटा का ग्रीनफील्ड स्टील प्लांट

है और खदानें हैं। इस इलाके में दो हजार हेक्टेयर भूमि टाटा को दी गई है। जिसमें से 104 हेक्टेयर वन क्षेत्र हैं। दांतेवाड़ा में एस्सार के प्लांट को भी भूमि दी गई है। यह सारा कुछ संविधान की पांचवी अनुसूची और वन अधिकार अधिनियम का उल्लंघन करके किया गया है। ग्राम सभाओं से आवश्यक सहमति भी नहीं ली गई है। अब यह जग जाहिर हो चुका है कि आदिवासियों को उजाड़े बिना दैत्याकार कॉरपोरेशन अपनी मंशा को पूरी नहीं कर सकते हैं और आदिवासी इन ताकतवर कंपनियों द्वारा अपनी जमीन और जंगल पर कब्जा करने का प्रतिरोध कर रहे हैं। कोई यह कह सकता है कि यह प्रतिरोध आदिवासियों का नहीं, माओवादियों का है, तो इसका बहुत सीधा जवाब यह है कि जहां माओवादियों की उपस्थिति नहीं है, वहां भी आदिवासी जल, जंगल व जमीन पर कब्जे की कार्रवाईयों का तीखा विरोध कर रहे हैं और करते रहे हैं, साथ ही यह बात भी नहीं भूलनी चाहिए कि जब माओवादी, नक्सलवादी, वामपंथी का जन्म भी नहीं हुआ था, उस समय भी आदिवासी बाहरी (दिकुओं) लोगों के उनके क्षेत्र में प्रवेश या कब्जा की कोशिश का विरोध करते ही रहे हैं। उन्हें कभी हार मिली, तो कभी जीत। इतिहास इस साक्ष्यों से भरा पड़ा है। रही बात माओवादियों या नक्सलवादियों की तो जो भी पर्यवेक्षक (अरूंधति राय, बेला भाटिया, नंदिनी सुंदर से लेकर हिमांशु कुमार आदि) राजसत्ता तथा कॉरपोरेशनों से नाभिनालबद्ध नहीं हैं, वह इस बात की ताकीद करता है कि माओवादी आदिवासयों के संघर्षों में उनका सहयोग और समर्थन ही करते हैं।

राजसत्ता और कॉरपोरेशन का गठजोड़ एक तीर से दो निशाने साध रहा है, पहला तो यह कि आदिवासियों को माओवादी ठहरा कर उनके उपर आक्रमण करना ताकि उनके जंगल और जमीन बचाने के प्रतिरोध को तोड़ा जा सके। इसके लिए सरकारी सुरक्षा बलों के साथ लंपटों, माफियाओं, अपराधियों और दलालों के निजी सुरक्षा बल (आजकल इन्हें 'अग्नि' नाम दिया गया है) भी खड़े किए गये हैं। दूसरा माओवादियों और नक्सलियों को नेस्तनाबूद करके इस देश के भीतर जन विरोधी सत्ताओं और कॉरपोरेशनों के गठजोड़ की निर्णायक मुखालफत करने वाली शक्तियों को पूरी तरह से कुचल देने की कोशिश है। इसी काम को अंजाम देने के लिए बस्तर जैसे छोटे से इलाके में एक लाख के आसपास सुरक्षा बल लगाए गए हैं। वे संवैधानिक-कानूनी और गैर-कानूनी, सारे हथकंडे अपनाकर इस पूरे क्षेत्र को हर प्रकार के प्रतिरोध से मुक्त करके कॉरपोरेशनों को सौंपना चाहते हैं। इसके लिए बड़े पैमाने पर हिंसा का सहारा लिया जा रहा है। इसका सबसे बड़ा सबूत यह है कि 2016 में पुलिस फायरिंग में देश भर में मारे गए तथाकथित 185 माओवादियों में 134 बस्तर क्षेत्र में मारे गए। इस क्षेत्र में माओवादियों के सफाये के नाम पर बड़े पैमाने पर आदिवासियों के साथ हिंसा की जा रही है। बलात्कार और हिंसा इसी हमले का एक हिस्सा है।

जहां तक सवाल आदिवासी महिलाओं के साथ बलात्कार जैसे जघन्य अपराध पर देश की मुख्यधारा और मुख्यधारा के मीडिया के चुप्पी का है, जो अन्यथा यौन उत्पीड़न की घटनाओं को इतना तवज्जो देता है (याद कीजिए निर्भया कांड) और किसी भी सभ्य समाज के सचेत मीडिया को यह करना भी चाहिए। तो इसका पहला कारण यह है कि ये घटनाएं केवल पितृसत्तात्मक मूल्यों के चलते होनेवाले यौन उत्पीड़न की घटनाएं नहीं हैं। बल्कि कॉरपोरेशनों के हितों के लिए काम करने वाली राजसत्ता के सुरक्षा बलों और आदिवासियों के बीच चल रहे अघोषित युद्ध का एक हिस्सा है और इस युद्ध में कॉरपोरेट पोषित और संचालित मुख्यधारा का मीडिया राजसत्ता के साथ खड़ा है। दूसरी बात यह है कि वैसे भी इस देश में हजारों साल से दलित-आदिवासी औरतों की गरिमा और अस्मिता के सवाल हमारे कथित सुसंस्कृत समाज के लिए कोई बहुत संवेदित करने वाला मुद्दा नहीं रहे हैं। इसलिए खासकर ऐसे समय में जब इन आदिवासी (जंगली?) लोगों को देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा घोषित किया जा चुका हो, मुख्यधारा के वर्चस्वशाली ओर नियंत्रक वर्गों और समुदायों के लिए ये घटनाऐं कोई खास मायने नहीं रखती हैं। इसके साथ एक और संवेदनशील बात जुड़ी है चूंकि ये कारनामे देश के लिए समर्पित सुरक्षा बलों ने अंजाम दिए हैं, इसलिए इनपर कोई बात करना देश को बदनाम करना घोषित कर दिया गया है।

जो भी आदिवासी महिलाएं न्याय पाने के लिए संघर्ष कर रही हैं। उन्हें न्याय का इंतजार है। शायद वे यह भी उम्मीद कर रहीं हों कि देश भर के न्याय के पक्षधर लोग इस संघर्ष में उनका साथ देंगे।

''कम्युनिस्ट पार्टी के प्रत्येक सदस्य को सर्वहारा की तानाशाही के अन्तर्गत बिना रुके लगातार क्रांति को जारी रखना चाहिए और धरती के चेहरे से साम्राज्यवाद, पूंजीवाद तथा शोषण को खत्म करने के लिए संघर्ष करना चाहिए।''

साभार

-कम्युनिस्ट पार्टी की बुनियादी समझदारी

नोटबंदी का राजनीतिक अर्थशास्त्र

(यह लेख नोटबंदी के पीछे के राजनीतिक अर्थशास्त्र को बखूबी उजागर करता है, इसीलिए इस लेख को यहां प्रकाशित किया जा रहा है। यह लेख एक हिन्दी पत्रिका से लिया गया है। - संपादकमंडल, लाल चिनगारी)

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 8 नवंबर की शाम अपने टीवी संबोधन में 500 और हजार के नोट के वैध नहीं रह जाने की घोषणा करके पूरे देश को अचंभे में डाल दिया। उनका कहना था कि यह राष्ट्रहित में काले धन और नकली नोटों पर हमले के उद्देश्य से उठाया गया कदम है। इसके जरिए उन्होंने 'आतंकवादियों' और 'माओवादियों' की भी कमर तोड़ देने की बात की। इससे होने वाली दिक्कतों के बारे में उन्होंने कहा कि 3-4 दिनों में सबकुछ सामान्य हो जाएगा। बाद में उन्होंने इसे बढ़ाकर 50 दिन किया। पुराने नोटों के बदलने की समय सीमा 30 दिसंबर को नोटबंदी के 50 दिन पूरे हो गए। लेकिन अभी भी हालात सामान्य नहीं हुए हैं। रिजर्व बैंक की तैयारी का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि रिजर्व बैंक की सभी अधिसूचनाओं की घोषणा वित्त मंत्रालय करता रहा और 50 दिनों में 74 अधिसूचना जारी किए गए। दो महीने से अधिक बीत जाने के बाद भी अभी लोगों के अपने पैसे नहीं दिए जा रहे। अपनी ही कमाई के पैसे बैंकों से लेने की जद्दोजहद में 120 से अधिक लोगों की जानें चली गयी। इसके बावजूद अब भी अपनी ही कमाई के पैसे के लिए लोग बैंकों में गिड़गिड़ा रहे हैं। 14 जनवरी को प्रकाशित इकोनॉमिक टाइम्स की एक खबर के अनुसार 15.5 लाख करोड़ पुराने नोट में से लगभग 15 लाख करोड़ नोट वापस रिजर्व बैंक में आ चुके हैं। इसका मतलब है कि सरकार द्वारा बहुप्रचारित नकली नोट और काले धान पर हमले के दावे की हवा निकल गयी है। ऐसे में सरकार ने पूरी तरह से एजेंडे को काले धन और नकली नोट से कैशलेस इकोनॉमी पर शिफ्ट कर दिया। नोटबंदी की पूरी परिघटना को समझने के लिए इसकी पृष्ठभूमि को समझना जरूरी है। देश और दुनिया के स्तर पर जारी कोशिशों को निरंतरता में समझकर ही हम नोटबंदी के पूरे आयाम को समझ सकते हैं। इसकी पृष्ठभूमि पर गौर करने पर यह मालूम होता है कि यह कहीं बड़ी साजिश थी। इस बीच तमाम संस्थाओं ने नोटबंदी के बाद देश के आर्थिक वार्षिक दर में गिरावट की घोषणा कर दी है। रिजर्व बैंक ने इसमें 0.5 फीसदी जबकि आइएमएफ ने इसमें 1 फीसदी के गिरावट की आशंका जतायी है। फोर्ब्स पत्रिका के अधिकारी स्टीव फोर्ब्स ने भारतीय नोटबंदी पर अपनी राय व्यक्त करते हुए कहा, '' संपत्ति की चोरी और इसके जरिए अपने सबसे दीन-हीन लोगों को और बुरे हालत में धकेलकर, सामाजिक विश्वास को कमजोर करके राजनीति में जहर भरकर और भविष्य के निवेश को नुकसान पहुंचाकर भारत ने अनैतिक और अनावश्यक रुप से अपनी जनता का नुकसान किया है। इस तरह बाकी के दुनिया के लिए एक डरावना उदाहरण पेश किया है।''

नव उदारवाद का नया दौर

1990 के दशक में उपभोक्ताओं की सर्वोच्चता और देश के अविकास के लिए लाल फीताशाही को जिम्मेवार बताकर नव उदारवाद सामने आया। इसने सरकार और संसद की भूमिका महज बाजार को संचालित करने तक सिमट देने के दर्शन को भी अपना आदर्श बनाया। दो दशक से अधिक बीत जाने के बाद यही नव उदारवाद अब खुद अपने फायदे के लिए लाल फीताशाही का खुलेआम इस्तेमाल कर रहा है और उपभोक्ताओं को जबरदस्ती सेवाओं के इस्तेमाल के लिए बाध्य कर रहा है। आज यह समझना मुश्किल नहीं है कि बाजार में केवल और केवल पूंजी ही सर्वोच्च है। बाजार में मुनाफे की संकट से जूझ रही कंपनियां जनता के खून-पसीने की कमाई लूटने के लिए किसी भी हद तक जा रही हैं। हमें इस नए दौर के चरित्र को भी बखूबी समझने की जरुरत है जिसकी वजह से पूरी दुनिया में नव उदारवाद अपने ही पुराने प्रस्थापना को तोड़कर अब अपने लिए लाल फीताशाही को खुलेआम अपना रही हैं और उपभोक्ताओं को जबरदस्ती सेवाओं के इस्तेमाल के लिए बाध्य कर रही है। भारत देश खुद को एक संघीय गणराज्य घोषित करता है जो एक संविधान के आधार पर निर्देशित होता है। इसके आधार पर कई स्वायत्त संस्थाएं बनायी गयीं। इन संस्थाओं को सरकार के सीधे हस्तक्षेप से बाहर रखा गया और इनके संचालन के लिए कुछ विशेष नियम बनाए गए। इन संस्थाओं को सरकार के सीधे हस्तक्षेप के बजाए सांविधानिक दायरे में काम की आजादी दी गयी। काफी पहले से ही संसद के पर काटते हुए अध्यादेशों ने बिल की जगह ले ली है और सांविधानिक संस्थाओं का स्वरुप वास्तविक से ज्यादा से ज्यादा छद्म होता गया है। यूपीए सरकार के दौरान ही सरकार के हाथ में तमाम आपातकालीन हथियार शासन के आम औजार के रुप में इस्तेमाल होने लगे थे। संविधान और संसद को सीमाबद्ध

करने की जो परंपरा यूपीए सरकार में शुरु हुयी थी, वह अब राजग सरकार में एकदम खुले रुप में सामने आ गयी है। नोटबंदी के मामले में यह और ज्यादा स्पष्ट हुआ है। नोटबंदी के पूरे दौर में लगातार नयी अधिसूचना के साथ वित्त विभाग के सचिव ही आते रहे जबकि वे रिजर्व बैंक के केंद्रीय बोर्ड के महज एक सदस्य हैं। हम जानते हैं कि तमाम बैंकिंग गतिविधियों और मुद्रा के परिचालन संबंधी अधिकार रिजर्व बैंक के हाथ में है। इस पूरे मामले में रिजर्व बैंक के अधिकारी कभी सामने नहीं आए। बाद में रिजर्व बैंक के कर्मचारियों ने अपने काम में सरकार द्वारा हस्तक्षेप का आरोप लगाया तब सरकार के वित्त सचिव ने एक सफाई जारी की। रिजर्व बैंक के केंद्रीय बोर्ड में 21 सदस्यों में से महज 10 सदस्य ही मौजूद हैं। बाकि के पद खाली हैं। इन 10 सदस्यों में से भी चार लोग निजी कंपनियों के अधिकारी हैं। देश को बताया गया कि सरकार ने रिजर्व बैंक के अनुशंसा पर नोटबंदी की। लेकिन रिजर्व बैंक ने एक आरटीआई के जवाब में कहा कि उसने सरकार द्वारा 7 नवंबर को भेजे एक अनुशंसा के आधार पर नोटबंदी का अनुमोदन किया। यह केवल रिजर्व बैंक के मामले में नहीं है बल्कि देश के तमाम सांविधानिक संस्थाओं के साथ ऐसा ही किया जा रहा है और यह ज्यादा खतरनाक परिघटना है। यह महज एक घटना नहीं बल्कि रुझान है जिसके जरिए यह समझा जा सकता है कि सरकारें किस तरह तमाम सांविधानिक संस्थाओं को नष्ट करके चारों तरफ अपना एकाधिकार स्थापित कर रही हैं। यह बुनियादी रूप से इस बात के भी संकेत हैं कि भारतीय राजव्यवस्था गहरे संकट के दौर से गुजर रही है और वह एक ऐसे दौर में है जब वह अपने ही बनाये कायदों के जरिए संचालित होने में अक्षम हो रही हैं और अपने ही कायदे का उल्लंघन कर रही है। यहां बुनियादी सवाल यह है कि आखिर इन स्वायत्त संस्थाओं के साथ ऐसा क्यों हो रहा है? इसे व्यापक परिप्रेक्ष्य में समझने के बाद हम इसे ज्यादा स्पष्ट तरीके से इसे समझ सकते हैं। भारत सरकार का कैशलेस प्रोजेक्ट इसी बड़े साजिश का एक हिस्सा है। बहुतेरे उत्साही लोगों नें बैंकों में लगी लंबी लाइनों की तुलना सोवियत संघ में बोल्शेविकों के दौर के राशनिंग से की। दरअसल उनका यह आकलन उनके बोल्शेविकों और गरीबों की सत्ता के प्रति घृणा ही अधिक प्रदर्शित करता है बनिस्पत की वर्तमान स्थिति का आकलन। वे असल में यह भूल जाते हैं कि सोवियत संघ में कतार में अमीरों को खड़ा होना होता था और उसमें असमानता के खात्मे का भाव था जबकि यहां अमीरों और निगमों को मुनाफे के लिए केवल गरीबों को ही खड़ा किया जा रहा था जो कि उनके उत्पीड़न के भाव को ही मजबूत कर रहा था।

कैशलेस प्रोजेक्ट की भू-राजनीति

नोटबंदी पर तमाम तर्कों के विफल होने के बाद सरकार ने अपना लक्ष्य कैशलेस प्रोजेक्ट का होना बताया। इसके बाद यह कहा जाने लगा कि प्रधानमंत्री अपने घोषित लक्ष्य से अब भाग रहे हैं। लेकिन यदि अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रमों पर नजर डालें तब मालूम होता है कि यह सच में कैशलेस प्रोजेक्ट ही था जिसमें दुनिया की बड़े निगम, ऑनलाइन पेमेंट एजेंसियां और सरकारें शामिल हैं। सितंबर, 2012 में दुनिया के स्तर पर नकद लेनदेन से कैशलेस इलेक्ट्रॉनिक पेमेंट की तरफ लोगों को ले जाने के लिए 'बेटर दैन कैश' नामक एक प्रोग्राम लांच किया गया। इस प्रोजेक्ट को बिल एंड गेट्स फाउंडेशन, मास्टरकार्ड, विसा इंक, ओमिद्यार नेटवर्क (ईबे) और यूनाइटेड स्टेट्स एजेन्सी फॉर इंटरनेशनल डेवेलपमेंट, यूएसएआईडी, द्वारा फंड मुहैया कराया गया। ज्ञातव्य है कि ये तमाम कंपनियां ऑनलाइन पेमेंट या फिर ऑनलाइन तकनीक के व्यापार में शामिल हैं। इसका सचिवालय यूनाइटेड नेशन कैपिटल डेवलपमेंट फंड के कार्यालय को बनाया गया। इसके ठीक एक साल बाद आइएमएफ के पूर्व अर्थशास्त्री और शिकागो स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के रघुराम राजन ने भारतीय रिजर्व बैंक में गवर्नर की कुर्सी संभाली। उनका सबसे पहला निर्णय छोटे व्यवसायियों और कम आय वाले परिवारों के 'वित्तीय समावेशन' के लिए एक कमिटी बनाना था। उन्होंने एक पूर्व बैंकर और रिजर्व बैंक के केंद्रीय बोर्ड के सदस्य नचिकेता मोर को इसका इंचार्ज बनाया। रघुराम राजन द्वारा गठित इस कमिटी के सदस्यों में सिटी ग्रुप के पूर्व सीइओ और आइएफएमआर (इंस्टीट्युट फॉर फिनान्सियल मैनेजमेंट एंड रिसर्च) के प्रेसिडेंट शामिल हैं। आइएफएमआर एक रिसर्च संस्था है जिसके फंडिंग एजेंसियों में यूएसएआईडी, गेट्स फाउंडेशन, सिटी ग्रुप, और फोर्ड फाउंडेशन, शिकागो स्कूल सहित कई अमेरिकी एजेंसियां शामिल हैं। मार्च, 2016 में गेट्स फाउंडेशन ने नचिकेता मोर को अपने भारतीय कामकाज का मुखिया बनाया। यह वही गेट्स फाउंडेशन है जो इस अमेरिकी कैशलेस प्रोजेक्ट का एक प्रमुख भागीदार और फंड मुहैया करवानेवाली संस्था है। 2014 में प्रधानमंत्री मोदी ने अमेरिका के अपनी पहली यात्रा पर वहां के राष्ट्रपति ओबामा के साथ एक रणनीतिक साझेदारी शुरु की। इस साझेदारी का उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों को बैंकिग नेट में लाना था। इसी साझेदारी को आगे बढ़ाने के एक कदम के रुप में जन-धन योजना सामने आया, जिसमें लोगों के बैंक खाते खुलवाये गए। इस साझेदारी के तहत नवंबर, 2015 में भारत के वित्त मंत्रालय और अमरीकी संस्था यूएसएआइडी के बीच एक एमओयू किया गया जिसका लक्ष्य डिजीटल पेमेंट के लिए तकनीक और मॉडल का विकास करना था। इसके बाद

यूएसएआइडी ने एक अध्ययन कराया जिसे 'बियोन्ड कैश' के नाम से 20 जनवरी, 2016 को जारी किया गया। यूएसएआइडी ने इसे जारी करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'वित्तीय समावेशन' को पूरा करने की दिशा में एक कदम बताया। यह रिपोर्ट कहती है, 'भारत में 97 फीसदी खुदरा व्यापार नकद या फिर चेक के जरिए किया जाता है। केवल 29 फीसदी लोगों ने पिछले तीन महीने में अपने बैंक खाते का इस्तेमाल किया है। केवल 6 फीसदी व्यापारी ही डिजीटल पेमेंट स्वीकार करते हैं और पिछले साल महज 10 फीसदी लोगों ने अपने एटीएम कार्ड के जरिए भुगतान किया है।' यह रिपोर्ट आगे कहती है, 'आधार से जुड़े हुए प्रधानमंत्री जन-धन योजना और एक अरब मोबाइल कनेक्शन के साथ भारत ने वित्तीय समावेशन' की तरफ एक बड़ी छलांग लगायी है।' ज्ञातव्य हो कि अमेरिकी राजदूत जोनाथन एडलेटन भारत में यूएसएआइडी के मिशन डायरेक्टर हैं।

इसके महज 9 महीने बाद अक्टूबर 2016 में भारत में कैटलिस्ट नामक एक प्रोजेक्ट लॉन्च किया गया। यूएसएआइडी ने दिल्ली में इस प्रोजेक्ट को लॉन्च करते हुए इसका उद्देश्य भारत में कैशलेस पेमेंट को बढ़ावा देना बताया। इस कैटलिस्ट प्रोजेक्ट को 'कैटलिस्ट : इनक्लुसिव कैशलेस पेमेंट पार्टनरशिप' नाम दिया गया। इस प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाने के लिए आलोक गुप्ता को निदेशक बनाया गया। आलोक गुप्ता वाशिंगटन में वर्ल्ड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट के मुख्य कार्यकारी अधिकारी रहे है, जो यूएसएआइडी का एक प्रमुख स्पॉन्सर है। वे भारत में आधार को विकसित करने वाली टीम के एक प्रमुख सदस्य रहे हैं। कैटलिस्ट का सीइओ बादल मल्लिक को बनाया गया है जो इससे पहले ऑनलाइन मार्केटप्लेस स्नैपडील के उपाध्यक्ष रहे हैं। कैटलिस्ट प्रोजेक्ट की घोषणा करते हुए बादल मल्लिक नें कहा, 'इसका लक्ष्य एक शहर को केन्द्रित कर डिजीटल पेमेंट को 12 महीने में 10 गुणा तक बढ़ाना है। इस अमेरिकी कैटलिस्ट प्रोजेक्ट के सहभागियों में मूलत: वित्तीय व्यवसाय में लगी अमेरिकी कंपनियां विसा इंक, मास्टरकार्ड, सिटी ग्रुप, बिल एंड मिलिंडा गेट्स फाउंडेशन (माइक्रोसॉफ्ट), बेटर दैन कैश अलायंस, ईबे, के अलावा टीसीएस और खुद को ट्रेड यूनियन कहने वाली 'सेवा' (सेल्फ इंप्लायड वीमन एसोसिएशन) जैसी एनजीओ, कई पेमेंट बैंक और वैलेट कंपनियां भी शामिल हैं। इसके सहभागियों में मास्टरकार्ड के सीइओ और अध्यक्ष अजय पाल सिंह बग्गा वाइब्रेंट गुजरात के समन्वयक हैं और अप्रैल, 2016 में अमेरिकी राष्ट्रपति ओबामा नें उन्हें साइबर सुरक्षा की टीम में एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक पद दिया। इसके अलावा विसा, पेटीएम के अलावा कई पेमेंट कंपनियां इसके पार्टनर्स में शामिल हैं। इसके सहभागी संस्था बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन के सीइओ और टीसीएस के सीइओ वर्तमान में रिजर्व बैंक के केंद्रीय बोर्ड के सदस्य भी हैं। अब यह समझना मुश्किल नहीं है कि भारत में कैशलेस प्रोजेक्ट अमेरिकी निगमों और पेमेंट गेट-वे प्रदान करने वाली तकनीकी कंपनियों के लिए एक ड्रीम प्रोजेक्ट रही है जिसपर भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने काले धन और नकली नोटों पर हमला नामक देशभक्ति और राष्ट्रवादी मुल्लमा चढ़ाया। अब यह भी समझना मुश्किल नहीं है कि बाजार के युग में राष्ट्रवाद किस तरह बड़े निगमों और लूटेरों का एक आजमाया हुआ खेल बन गया है। कैटलिस्ट प्रोजेक्ट के डायरेक्टर महज एक शहर को कैशलेस बनाकर अपने प्रोजेक्ट का परीक्षण करना चाहते थे। भारतीय प्रधानमंत्री ने तो पूरे देश को ही उनके प्रोजेक्ट के परीक्षण के लिए कैशलेस कर दिया। रघुराम राजन ने रिजर्व बैंक के गवर्नर के रूप में काफी तारीफें बटोरी हैं लेकिन हमें नहीं भूलना चाहिए कि इस कैशलेस किए जाने के अभियान का लगभग पूरा खेल उन्हीं के कार्यकाल के दौरान खेला गया। इतना ही नहीं, अप्रैल, 2016 में कैशलेस पेमेंट को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने एक यूपीआई मोबाइल एप्प भी जारी किया था। यह बताना मुश्किल है कि कैशलेस पेमेंट को बढ़ावा देने के लिए आम लोगों को बलपूर्वक कैशलेस कर देने की रणनीति से वे कितना सहमत थे। अब यह समझना मुश्किल नहीं है कि इस सरकारी नोटबंदी के समर्थन में सबसे पहले अमेरिकी सरकार, विसा इंक और मास्टरकार्ड क्यों आगे आए।

कैशलेस पेमेंट का बोझ

नोटबंदी करके जबरदस्ती कैशलेस करने की रणनीति की प्रवक्ता अमेरिका के पूर्व ट्रेजरी सचिव और हावर्ड प्रेसिडेंट लैरी समर्स थी, जिन्होंने अमेरिका में 50 डॉलर और 100 डॉलर के नोटों को खत्म करने की वकालत की थी। इस दौर में कैश पर हमले की रणनीति को प्रोमोट किया जाने लगा। जब तमाम लोगों को जबरदस्ती कैशलेस बनाया जा रहा है, तब सवाल यह उठता है कि ऑनलाइन लेन-देन पर लगाये जाने वाले शुल्क का बोझ कौन उठाएगा। शुरु में सरकार ने कहा कि 2000 से नीचे के तमाम लेन-देन पर किसी तरह का कोई शुल्क नहीं लगेगा। लेकिन यह सरकार के एक अधिकारी द्वारा ऐसी घोषणा थी जो उनके अधिकार क्षेत्र में थी ही नहीं। बाद में जब बैंक इसके लिए तैयार नहीं हुए तब रिजर्व बैंक एक नयी अधिसूचना के साथ आया। 17 दिसंबर, 2016 को अपनी अधिसूचना में रिजर्व बैंक ने कहा कि 1000 से कम के लेन-देन पर 0.25 फीसदी जबकि 2000 तक के लेन-देन पर 0.5 फीसदी का शुल्क लगाया जाएगा। 2000 से उपर के लेन-देन के लिए 0.75 फीसदी का शुल्क निर्धारित किया गया। अब बुनियादी सवाल यह बनता है कि

आम लोगों को वह शुल्क क्यों चुकाना चाहिए, जिसकी सुविधा वे लेना ही नहीं चाहते हैं। इस बात के भी अब कयास लगाये जा रहे हैं कि अगले बजट में नकदी लेन-देन पर भी कर लगाया जा सकता है। मतलब साफ है कि जनता को सरकार या फिर निगमों को हर हाल में शुल्क देना ही होगा। हाल ही में पेट्रोल पंपों पर तेल कंपनियों ने बिना शुल्क लिए ऑनलाइन पेमेंट लेने से इंकार किया तब तुरंत पेट्रोलियम मंत्रालय सामने आया और सफाई दी कि इसका खर्चा पेट्रोलियम कंपनियां और बैंक उठायेंगे। इसका मतलब साफ है कि अब कैशलेस पेमेंट का खर्चा तेल के दाम में ही वसूला जाएगा और उन तमाम लोगों को भी उठाना होगा, जो नकद खरीदारी कर रहे हैं। इसके अलावा यह कैशलेस पेमेंट आम जनता के प्राइवेसी पर भी हमला होगा। सरकारें जनता की तमाम गतिविधियों पर नजर रखेगी और जनता पर अपने नियंत्रण को और मजबूत बनायेगी।

नकली नोट और काला धन

नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेन्सी (एनआइए) और भारतीय सांख्यिकी संस्थान (आइएसआइ) के एक संयुक्त अध्ययन का कहना है कि भारत में लगभग 400 करोड़ रुपए के नकली नोट परिचालन में हैं। यह कुल नोट का महज 0.022 फीसदी है। अध्ययन के लिए यह प्रोजेक्ट गृह मंत्रालय द्वारा गठित किया गया था। इस अध्ययन का आकलन था कि हरेक साल लगभग 70 करोड़ रुपए नकली नोट परिचालन में शामिल होते हैं। इंडिया स्पेन्ड ने रिजर्व बैंक के आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर कहा है कि 2015-16 में परिचालन में 90.26 अरब भारतीय नोटों में से 6 लाख 30 हजार नोट नकली निकले। यह कुल नोटों का 0.0007 फीसदी है। 2015-16 में इन नकली नोटों का मूल्य 29.64 करोड़ रुपया था जो परिचालन के 16.41 लाख करोड़ रुपए का महज 0. 0018 फीसदी है।

जहां तक काले धन का सवाल है तो यूपीए सरकार द्वारा कराए गए लोक वित्त और नीति राष्ट्रीय संस्थान द्वारा एक अध्ययन में बताया गया कि भारत में काले धन की मात्रा जीडीपी के 5 फीसदी तक हो सकती है। यह रिपोर्ट तत्कालीन वित्त मंत्री पी. चिदंबरम को दिसंबर, 2013 को ही सौंपी गयी थी। लेकिन न तो तत्कालीन वित्त मंत्री पी. चिदंबरम और न ही अरुण जेटली ने इस रिपोर्ट को संसद के पटल पर रखा। (अगस्त 4, 2014-द हिन्दू) इस रिपोर्ट को यदि ध्यान में रखें तो हरेक साल लगभग 120 लाख करोड़ काले धन की उत्पत्ति हो रही है। ग्लोबल फाइनेंशियल इंटिग्रिटी के अनुसार, 2004 और 2013 के बीच हर साल 3.3 लाख करोड़ देश से बाहर चला जाता था। इसका मतलब है कि एक विशाल काला धन का भंडार करीब 40 लाख करोड़ रुपये के बराबर, इन बारह सालों में बाहर भेजा जा चुका है। अनौपचारिक अनुमान है कि 75 लाख करोड़ अवैध रुपये विदेशों में है। इसका मतलब है कि काले धन का सबसे बड़ा हिस्सा देश से बाहर है। देश में मौजूद काले धन का भी महज 6-7 फीसदी ही नकद के रुप में है। इस काले धन का ज्यादा बड़ा हिस्सा रियल स्टेट, शेयर, बॉन्ड और कीमती धातुओं के रुप में है। बैंकिग नेट में 15 लाख करोड़ के वापस आ जाने के बाद तो नकद के रुप में मौजूद काले धन पर हमले की सरकार के दावे की और ज्यादा ही हवा निकल गयी।

नोटबंदी के शिकार

सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी द्वारा जारी एक अध्ययन के अनुसार 8 नवंबर से 30 दिसंबर के बीच के नोटबंदी से हुए नुकसान का आंकड़ा 1.28 लाख करोड़ रुपये के बराबर हो सकता है। इसमें मजदूरी में कमी और नौकरी चले जाने के परिणामस्वरूप करीब 150 अरब रुपए के नुकसान के अलावा नए नोट छापने, एटीएम बदलने, बैंकों का नुकसान और अन्य व्यवसाय का नुकसान शामिल है। ऑल इंडिया मैन्युफैक्चरर्स ऑर्गेनाइजेशन द्वारा जारी 9 जनवरी, 2017 के एक अध्ययन के अनुसार नोटबंदी के दो महीनों में लघु और मंझोले उद्योगों के क्षेत्र में तकरीबन 15 लाख नौकरियां चली गयीं। इस संस्था से करीब 13,000 उद्योग धंधे जुड़े हुए हैं और इसमें परोक्ष रुप से करीब तीन लाख सदस्य जुड़े हुए हैं। इसने अपने अध्ययन को अपने 14 राज्य इकाइयों के आंकडों के आधार पर किया। इसके अध्यक्ष के. ई. रघुनाथन का कहना था कि केवल माइक्रो और लघु क्षेत्र के उत्पादन उद्योगों में करीब 35 फीसदी नौकरियां खत्म हो गयी। सेवा क्षेत्र में भी करीब तीन से चार लाख लोगों को नौकरी से निकाल दिया गया है। मंझोले उद्योगों के भी 20-25 हजार लोगों को नौकरी से हाथ धोना पड़ा है हालांकि इस क्षेत्र को अभी और झेलना बाकी है क्योंकि मंझोले उद्योगों को थोड़े समय तक धक्का बर्दाश्त करने की क्षमता होती है। इस तरह से तथ्य यह बताते है कि नोटबंदी की वजह से लाखों लोगों की रोजी-रोटी चली गयी। इसके अलावा बाजार में नकदी के अभाव का भारी नुकसान अपने उपज के कम दाम के रुप में किसानों को भी चुकाना पड़ा है।

बेकार पड़े पैसे को बैंकिंग नेट में लाना

नोटबंदी के बाद केन्द्र सरकार के कई मंत्रियों ने कहना शुरु किया कि अब बैंकों के पास उधार देने के लिए पर्याप्त धन है। उन्होंने आम जनता में यह खुशफहमी भी फैलाने की कोशिश की कि इससे ब्याज दर में गिरावट होगी। अगर सैद्धांतिक रुप से बात करें तो यह सच ही है कि बैंकिंग नेट में पर्याप्त धन आने से कर्ज का विस्तार होगा और धन की

ज्यादा उपलब्धता होने से ब्याज दर में गिरावट हो सकती है। लेकिन यहां बुनियादी सवाल यह है कि क्या भारत के वर्तमान हालात में यह संभव है? इंडिया स्पेन्ड ने रिजर्व बैंक के पिछले 6 सालों के आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि एनपीए में वृद्धि और आर्थिक वृद्धि में गिरावट की वजह से पिछले 6 सालों में कॉरपोरेट उधारी में 60 फीसदी तक की गिरावट हुयी है। नोटबंदी के बाद आर्थिक वृद्धि में और गिरावट के बाद इस बात की कम ही संभावना है कि कर्जों की मांग में कोई वृद्धि होगी बल्कि इसके और अधिक सिकुड़ जाने के आसार हैं। ऐसे में जब पहले से ही कर्जे की मांग सिकुड़ रही हो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि बैंकिंग नेट में और अधिक धन आ जाये। बल्कि कर्जे की मांग में विस्तार नहीं होने की हालत में इसका और अधिक उल्टा प्रभाव अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा चूंकि बैंकों में पड़े इस धन पर सरकार को ब्याज भी देना होगा। ऐसे में यह तर्क भी बेमानी है कि बैंकिंग नेट में ज्यादा धन के आने से कर्जे का विस्तार होगा।

नोम चोम्सकी ने जब मैन्यूफैक्चरिंग कंसेंट नामक किताब लिखी तब बहुत कम ही लोग इसे इतने नजदीक से देख पाये होंगे। लेकिन इसके मर्म को भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बहुत ही सूक्ष्म तरीके से समझा और प्रचार के औजारों की ताकत का हरसंभव इस्तेमाल किया और इसमें महारत हासिल की। नोटबंदी को जिस तरह से पेश किया गया, मानो यह देश को उस काल्पनिक स्वर्ण युग में ले जाने की कवायद हो। तमाम गरीब लोगों को विश्वास दिलाया गया कि असल में यह नोटों पर सोने वाले थैलीशाहों पर हमला है। जबकि सच सबके सामने है कि इसके पीछे किस तरह गरीबों की जिंदगी तबाह हो गयी जबकि नोटों पर सोने वाले थैलीशाहों ने अपने तमाम पैसों को ठिकाने लगा दिया और इसमें सरकारी मुलाजिमों ने ही उनकी मदद की। यही तो इस नए उदारवादी दौर का विरोधाभास है जहां हम सूचनाओं के अंबार के बीच भी बिना किसी सूचना के हैं। जहां सूचना तंत्र सूचनाओं को फैलाने से ज्यादा उसे छिपाने में भूमिका निभाते हैं। हम एक ऐसे दौर में जी रहे हैं, जहां हम अपने सामने घट रही चीजों से अधिक अपने भावना और आस्था से निर्देशित होते हैं। बुनियादी सवाल केवल नोटबंदी का नहीं बल्कि इस नए दौर का है, जो हमें अपने ही मौत के जश्न में शामिल होने को तैयार कर रहा है। सवाल इस अंधेरे दौर का है, जिसमें सबकुछ दिखते हुए भी महज आभासी है। लेकिन इस अंधेरे दौर के विरोधाभास में से ही प्रकाश के बीज अंकुरित हो रहे हैं।

विमुद्रीकरणः संपत्ति के अधिकार कानून का उल्लंघन

नरेन्द्र मोदी सरकार द्वारा 8 नवम्बर, 2016 को तानाशाही फरमान जारी कर 500 और 1000 रुपये की नोटों की वैधता समाप्त किये जाने के एक माह बाद से ही यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया है कि यह गरीबों के आर्थिक तंत्र पर अभूतपूर्व हमला है। क्योंकि, विमुद्रीकरण के बाद देश में जिस तरह का आर्थिक संकट उत्पन्न हुआ, ऐसा देश के इतिहास में पहले कभी नहीं देखा गया था। इस संकट का सबसे अधिक खामियाजा देश के मजदूर-किसान और मेहनतकश गरीब जनता को भुगतना पड़ रहा है। देश के विभिन्न हिस्सों में इस संकट से अब तक 100 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है।

विदित हो कि भारतीय संविधान के ''अनुच्छेद 300 A'' संपत्ति के अधिकार की गारंटी करता है। यह अनुच्छेद कहता है कि विधि-प्राधिकार के द्वारा देश के किसी भी नागरिक को उसकी अपनी संपत्ति से वंचित नहीं किया जायेगा। जबकि, 8 नवम्बर, 2016 को विमुद्रीकरण की अधिसूचना (RBI Act) की धारा 26 (2)का हवाला देकर किया गया है। यह धारा कहता है कि केन्द्रीय बोर्ड के अनुमोदन पर भरत सरकार के द्वारा भारत के राज्यपत्र (Gazette) में सूचित करते हुए अनुमोदन में एक खास तिथि का उल्लेख करके वैद्य-मुद्रा का विमुद्रीकरण किया जायेगा, जबकि मोदी सरकार (RBI Act) की धारा 26 (2)में निहित प्रकियाओं का पालन करना उचित नहीं समझी और मनमाने ढंग से विमुद्रीकरण की अचानक घोषणा कर दी। ताकि रुपये की कमी से जूझ रही बैंकों को देश के नागरिकों की गाढ़ी-कमायी रुपयों से भरा जा सके और धनाढ्य लोगों को फिर से कर्ज दिया जा सके। 1978 में भी विमुद्रीकरण हुआ था, उस समय उक्त कानून में निहित प्रकियाओं पालन किया गया था।

मालूम हो कि भारतीय किसान पहले से ही भारी मुसीबत झेल रहे हैं, विमुद्रीकरण ने उनकी तकलीफें और भी बढ़ा दी है। नोटबंदी की घोषणा के बाद मोदी गला फाड़-फाड़ कर

चिल्ला रहा है कि इससे देश की नागरिकों को कुछ दिनों तक समस्या का सामना करना पड़ेगा, फिर स्थिति सामान्य हो जायेगी। जबकि यह समस्या नहीं देश के नागरिकों के लिए घोर संकट है। अधिकांश किसानों का कहना है कि यदि जीविकोपार्जन का कोई दूसरा विकल्प हो तो वे कृषि करना छोड़ देंगे। चूंकि, कृषि से कोई लाभ नहीं है। डीजल, खाद और बीज आदि की कीमतों में भारी वृद्धि हो रही है। फलत: किसान आज आत्महत्या करने पर विवश हैं। क्योंकि, कृषि-कार्य काफी नुकसानदेह साबित हो रही है। हालात ये है कि किसान के बच्चे कृषि करना नहीं चाहते हैं। विमुद्रीकरण के बाद तो किसानों के तैयार फसल यूं ही नष्ट हो गए, क्योंकि रुपये के अभाव में कोई खरीदने वाला ही नहीं मिला। यदि किसानों को नहीं बचाया गया तो देश कैसे बचेंगे? आज भी देश में 70 प्रतिशत लोगों की जीविका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रुप से कृषि पर निर्भर है और 50 प्रतिशत लोगों का रोजगार अब भी कृषि कार्यों से ही होती है। तथाकथित आजादी के बाद से आज तक कृषि क्षेत्र में कोई ध्यान नहीं दिया गया है।

कैशलेस अर्थव्यवस्था आम जनता के लिए धोखा

8 नवंबर, 2016 की रात को नरेन्द्र मोदी कालाधन, भ्रष्टाचार को समाप्त करने तथा आतंकवादियों व उग्रवादियों के आर्थिक स्रोत को बंद करने के लिए जब विमुद्रीकरण की घोषणा कर रहे थे, उस समय ''कैशलेस इकोनॉमी'' के बारे में एक शब्द भी नहीं बोले थे। मोदी सरकार के एजेंडे में कुछ दिन के बाद से ही विमुद्रीकरण गौण होती चली गई और कैशलेस इकोनॉमी मुख्य मुद्दा बन गयी। कैशलेस इकोनॉमी मे क्या-क्या फायदा है उसका विज्ञापन दूरर्दशन, रेडियो से लेकर तमाम तरह के पत्र-पत्रिकाओं द्वारा जाने लगा। कैशलेस खरीदारी आप अपने मोबाइल से कर सकते हैं, इसका भी विज्ञापन सरकार द्वारा सभी प्रचार माध्यमों से किया जाने लगा। प्रत्येक दिन सरकार दावा करने लगी कि फलाना पंचायत, ब्लॉक कैशलेस हो गया है। लेकिन दूसरे दिन ही अखबारों में खबर आती है कि उस पंचायत में इंटरनेट सुविधा नहीं है, कैशलस पंचायत कहां से हो गया? देश में 73 फीसदी आबादी यानी 95 करोड़ लोगों के पास इंटरनेट कनेक्शन नहीं है। उद्योग संगठन एसोचैम और मार्केट एनालिसिस और कंसल्टिंग फर्म डेलॉम ने यह दावा अपनी एक अध्ययन में किया है। ऐसी स्थिति में हमारे देश में कैशलेस इकोनॉमी की कल्पना कहां से कर सकते हैं? कैशलेस इकोनॉमी से किसका फायदा होगा? आम जनता को या पूंजीपतियों को, इस पर एक नजर डाला जाय। कैशलेश मार्केटिंग के लिए अपको एक स्मार्ट फोन की आवश्यकता होगी, जिसकी न्यूनतम कीमत 6-7 हजार रुपये है। इसके बाद आपको इंटरनेट कनेक्शन लेना होगा, उसके लिए महीने में आपको लगभग 200-300 रुपये खर्च करना होगा। हमलोग जानते हैं कि एक गरीब परिवार 300 रु. से पूरे महीने की दाल की जरुरत को पूरा कर लेता है। इस कैशलेस इकोनॉमी से मोबाईल निर्माता कंपनियों को ही फायदा होने जा रहा है। फिर हमारे जैसे पिछड़े हुए देश में जहां शिक्षा का स्तर काफी नीचे है, वहां मोबाइल के द्वारा खरीद-बिक्री करना क्या संभव है? एक जरा सा गलती हो जाने से या उल्टा-पुल्टा बटन दब जाने से आपका सारा रुपया किसी दूसरे के खाते में चला जायेगा। राहुल गांधी व गृह मंत्रालय का ट्वीटर एकाउंट जब हैक हो सकता है, तो आम आदमी का क्या होगा, कल्पना नहीं किया जा सकता है।

अभी हाल ही में पूरे विश्व में दादागिरी करने वाला देश अमेरीका में हुए राष्ट्रपति चुनाव में भी चुनाव परिणाम को रुस द्वारा हैक कर लिया गया, तो भारत जैसे पिछड़े देश का क्या होगा? आप सोच सकते हैं।

कैशलेस इकोनॉमी करने के पीछे सरकार की मंशा है कि भारत के अधिकांश लोगों को टैक्स के दायरे में लाया जाय। आप जैसै ही मोबाइल से किसी समान की कीमत अदा करेंगे, 16 प्रतिशत का सर्विस टैक्स आपसे वसूल लिया जायेगा। कहने का मतलब है कि गरीब व मध्यम वर्ग के लोगों को भी टैक्स के दायरे में लाया जायेगा। एक तरफ यह सरकार आम जनता को टैक्स के दायरे में ला रही है, तो दूसरी तरफ कॉर्पोरेट घरानों के लिए प्रत्येक साल 5-6 लाख करोड़ रुपये का टैक्स माफ कर रही है। सरकार के कैशलेस इकोनॉमी से किसको फायदा होने वाला है, इसे समझना होगा। इसके पीछे मूल करण यह है कि आम जनता को टैक्स के दायरे में लाना और दलाल पूंजीपतियों व कॉर्पोरेट घरानों को टैक्स अदा करने में भारी छूट देना है।

दो कहानियां

1. कामरेड मरते नहीं

अंधकार के कारण कुछ नजर नहीं आ रहा था। चारों ओर घोर सन्नाटा और उस बीच दूर-दूर तक अगर गूंज रही थी, तो बस गोलियों की धांय-धांय की आवाज। इसके अलावा पूरे गांव में खतरनाक सन्नाटा था और उन पत्तों के बीच एक हल्की सरसराहट थी, दो आंखें चीते की आंखों की तरह उन फसलों के बीच से झांक रही थी और अपनी बंदूक की नोंक सीधी कर रही थी। उसके पॉच में महज कुछ कारतूस बचे हुए थे और बंदूक की गोलियां भी खत्म हो रही थी। उसने पॉच में हाथ डाली एक ग्रेनेड और मात्र छः गोलियां।

उफ्फ्! महज छः गोलियां! - वह बुदबुदायी।

चारों ओर जूतों की खटखट की आवाज सुनाई पड़ रही थी।

एक ही है, एक ही है। - शायद किसी को आभास हो गया था। उस खेत में महज एक ही इंसान छुपा बैठा है, जिसे उसके दो सौ सैनिक आराम से ढूंढ़कर मार सकते हैं।

पर इस अंधेरे में उन्हें ढूंढ़े कैसे? - हाथ में टॉर्च लिए उस शख्स ने कहा। शायद वह इस बटालियन का कमांडर था। -''चारों ओर से खेत को घेर लो और गोलियां दागना शुरु करो।''

''सर, अगर अंदर पूरा टीम होगा तो।''- एक सैनिक ने डरी हुई आवाज में कहा।

''बेवकूफ हम इतने हैं, उन्हें मार देगें।''

अभी उनके बीच बहस ही चल रही थी कि हवा में लहराती हुई एक गोली चली और इतनी बात कहता हुआ वह कमांडर वहीं जमीन पर गिर पड़ा। बाकी के कदम, दो कदम पीछे खिसक गए। लड़खड़ाता हुआ एक सैनिक बोल पड़ा-''सर! सर! लगता है, इस खेत में ही है।''

इतने में दूसरी गोली चली और वह सैनिक भी जमीन पर गिर पड़ा।

लगता है पूरी टीम है। पीछे हटो।।''-सैनिकों का पूरा बटालियन कुछ कदम पीछे खिसक गया।

वे इतने घबड़ा गये थे कि अंदर जाने की हिम्मत नहीं बन रही थी। इतने में एक धमाका हुआ और दूसरे छोर पर तैनात सैनिकों के बीच भगदड़ मच गई।

''वहां बम फटा है। दूर हटो, पीछे हटो।''-एक चीख रहा था। कुछ डर कर पीछे हट गये। कुछ हठधर्मी के साथ आगे बढ़ रहे थे।

''सुबह तक का इंतजार करना होगा। हम और चार बटालियन बुला रहे हैं। सरकार और फौज भेज रही है। हमपर वार करने वाले गुरिल्ला का कमांडर भी डसके साथ है। उसे पकड़ना है।'' - एक सैनिक अपने साथियों को संगठित करके बोल रहा था। पर उनके बीच दहशत फैली हुई थी, आधे सैनिक तो भाग खड़े हुए थे। बम-धमाके में जाने कितने मारे गये थे। कुछ देर माहौल में शांति बनी रही। जैसे सब कुछ शांत हो गया हो।

''वो भाग गए होंगे!'' एक सिपाही ने कहा।

''नहीं चारों ओर से खेत को घेरा जा चुका है। वो भाग नहीं सकते। कितने होंगे चार-पांच से ज्यादा नहीं होंगे। सबको पकड़ लेंगे, मार देंगे हम।''- दूसरा सिपाही अपनी शेखी बघाड़ता हुआ बोला।

इस शांत माहौल में बस थोड़ी सी सरसराहट सुनाई पड़ रही थी कभी-कभी और जहां भी आवाज हो रही थी, पुलिस द्वारा गोली दाग दी जा रही थी। कुछ पल गुजरा और फिर खेत से एक गोली चली और एक पुलिस वाले की छाती में जा लगी और वह वहीं ढ़ेर हो गया। बदले में पुलिस वालों की ओर से गोलियों की बरसात कर दी, जैसे पूरे खेत को श्मसान बना देना चाहता हो। खेत की ओर से फिर दो गोलियां चली और दो पुलिस वाले और ढ़ेर हुए और बदले में धांय-धांय गोलियां बरसाई जा रही थी। अब तक दस पुलिस वाले मर चुके थे और उसके कमांडर की लाश के पास से हथियार और गोलियां गायब थी। यह इस बात का प्रमाण था कि गुरिल्ले यहां आकर हथियार लेकर गए हैं, मगर किस तरफ आगे या पीछे, इस खेत में या उस खेत में, वो समझ नहीं पा रहे थे।

उस रात गांव में कोई नहीं सोया। गांव वालों की नींद तो उसी वक्त उड़ गई थी, जब गांव का लड़का माधव को पुलिस दोपहर में पकड़ ले गयी थी। उसने उन्हें क्या बताया होगा? मालूम नहीं, 16 साल का लड़का था। उसके माता-पिता का डर कर बुरा हाल था। उसी वक्त गांव के कुछ सचेत लोग समझ गये थे कि कुछ घटना घटने वाली है। मगर इतनी नजदीक में खेत में ही यह भयंकर युद्ध होगा, उन्होंने सोचा नहीं था। 15 वर्षीय बुधिया की आंखें आसू से भरी हुई थी, वह बिस्तर पर लेटी हुई थी। वह दोपहर की बात याद कर रही थी, जब उनके सामने माला दीदी बैठी उनसे बातें कर

रही थी। उसके भाई गोया और वे बैठकर माला दीदी की बातें सुन रहे थे, जो अपनी बचपन की बात उन्हें बता रही थी।

''वह 14 वर्ष की थी, जब उनकी शादी कर दी गई थी। घर गांव में होने के कारण और स्कूल वगैरह नहीं होने के कारण वह पढ़ना नहीं जानती थी। उनकी जिससे शादी हुई थी, वह एक शराबी इंसान था। जो लगभग रोज शराब पीता और उन्हें पीटा करता था। उसकी सास अच्छी थी, मगर वह अपने किस्मत का रोना रोती रहती थी और हमेशा कहती थी, औरत हो तो सहना ही पड़ेगा। मैंने सोची बात शायद उनकी भी सही है। हमारे पास जब कुछ नहीं है, न पढ़ाई है, न लिखाई है, न कमाई है। हम अपने गांव मोहल्ले को अच्छे से नहीं जानते हैं, एक रास्ते से दूसरे रास्ते में भटक जाएंगे। खुद से खुद का भरण-पोषण के लिए भी कुछ नहीं कर पाएंगे। इतना भी नहीं कि चाहें तो ऐसे शराबी को छोड़कर अपना गुजर-बसर कर सकें। तो ऐसे में शायद हमको सहना ही पड़ेगा। हम इनपर ही निर्भर हैं।'' माला दीदी एक पल को रूकी, फिर बोली - ''मगर फिर एक दिन मैंने सोची, बचपन से ही हमपर ये नियम, ये धर्म, ये तरीके लाद दिया जाता है कि हम उसमें बंध कर रह जाते हैं। हमें स्वतंत्र छोड़ा कब जाता है कि हम खुद को मजबूत कर सकें। बेड़ियां तो बचपन से हमारे पैर में और हमारे माता पिता के दिमाग में डाल दी जाती है। किसी लड़की का क्या कसूर, जब उसे पढ़ाया ही नहीं जाता? वह पढ़ना तो चाहती है, वह अपना गुजर बसर के लिए आत्मनिर्भर रहना तो चाहती है, पर उसे वैसे माहौल में जीने नहीं दिया जाता। कौन औरत चाहती है कि उसका शराबी पति उसे पीटे, कौन औरत चाहती है कि उसके लिए 'काला अक्षर भैंस बराबर' रहे। नहीं, ये ठीक नहीं है। यह जबरन थोपा हुआ नियम है। हमको ऐसे नहीं जीना। कुछ दिनों बाद हमारे गांव में महिला मुक्ति के लिए, मुझे याद नहीं वह संगठन कौन सी थी, कुछ महिला लोग आई और वो महिला लोग खुद से सब कुछ कर रही थी और महिलाओं के लिए अभियान चला रही थी। उन्हें देखकर मुझे बड़ी प्रेरणा मिली। मैंने अपनी सास से उनके साथ जाने की बात कही, तो वे बिगड़ पड़ी। पति को पता चला, तो वह मेरी पिटाई के लिए डंडा लेकर आया। जाने मुझे उस वक्त क्या हुआ मैंने उसका वही डंडा छीनकर उसे ही दना-दन दे मारा और भाग गई। तब से मैं इस संगठन से जुड़ी हूं और चाहती हूं, तुम जैसी बच्चियां भी इस संगठन से जुड़ो, पढ़ो-लिखो, देश दुनिया को समझो, अपने बलबूते खड़े हो।''

''पर दीदी तब आपको इस बंदूक की जरूरत क्यों पड़ी? आप अपने साथ हमेशा बंदूक क्यों रखती हैं?'' - 12 साल की दीपा सवाल पूछ बैठा था।

उसकी बात पर दीदी बिल्कुल ही न बिगड़ी बल्कि मुस्कुराई, जैसे वह यही बताना चाह रही थी। उन्होंने अपने उसी शांत लहजे में कहना शुरु की - ''चलो यह भी बता देती हूं। वहां से भागने के बाद ही तो मुझे पता चला, बिना इस बंदूक के काम नहीं होने वाला। हम गरीबों, औरतों, गांव-देहात में रहने वाले लोगों को जो लोग दबाना चाहते हैं, उन्हीं का बिछाया हुआ ये जाल है, जिसमें हम औरतें घर की चारदिवारी में फंसी रहती हैं और घर के पुरुष शराब और नशा में फंसे रहते हैं। घर के पुरूष हाड़-तोड़ मेहनत करते हैं, फिर भी गरीबी के दिन ही काटते हैं। ऐसे में छटपटाहट होने के बजाय इन्हें शराब, ताड़ी, महुआ आदि पीने सीखा दिया जाता है। यह इनका अपना शौक नहीं है। यह उनलोगों का, जो हमारा हक छीनकर रखना चाहते हैं, सोच समझकर बनाया हुआ नियम है, जिसमें हम गरीब घरों के पुरूष फंसे रहें और औरतों को यदि समाज में हीन भावना से नहीं देखा जाएगा, तो वे विरोध कर देगी, इसलिए औरतों को चारदिवारी में नियम-धर्म के बहाने बांध दिया गया है। औरत चूल्हा-चौकी में झुलसती रहें और पुरूष नशे में। ताकि हम जागें नहीं, समझें नहीं कि हमारा हक छीना जा रहा है। हमारे गांव में स्कूल नहीं होते, होते भी तो नाम मात्र के, बिजली नहीं होती, होती भी तो नाम मात्र की। स्वच्छ पानी नहीं मिलता, गंदा पानी पीना पड़ता है। और इन सब से बड़ी बात रोजगार नहीं होता, कुछ नहीं होता। उपर से हमारी जमीनों पर सरकार और पूंजीपति लोग कब्जा कर अपना बिजनस करते है। हमारे खेत-खलिहान की जमीन छीनकर उसे खोदते हैं क्योंकि उसके अंदर महंगे खनिज पदार्थ छुपे होते हैं, जिससे उसका बिजनस चले। अब इससे लड़ने के लिए व अपनी जमीन बचाने के लिए हमें तो हथियार ही उठाना होगा न! बिना हथियार का यह काम होगा! नहीं! देखते हो, वो कितनी फौज खड़ा करती है हमसे लड़ने के लिए व हमें दबाने के लिए ताकि हम लोग अपनी जमीन की रक्षा न कर सकें। अपने हक के लिए लड़ने के लिए खड़ा न हो सकें। इसीलिए हमें बंदूक की जरूरत है। वो हथियार के बल पर हमें दबाना चाहते हैं, तो हम भी हथियार का इस्तेमाल करके उनका मुकाबला कर सकते हैं।''- माला दीदी जब बोल रही थी, तो उनके चेहरे पर से तेज टपक रहा था। ऐसा लग रहा था कि उनका चेहरा खिला जा रहा है, चमकता जा रहा है और ऐसा महसूस हो रहा था कि वह तेज, वह बल, वह हिम्मत, वह जज्बा बाकियों में भी भरा जा रहा हो। माला दीदी और उनके संगठन ने ही इस गांव में स्कूल की व्यवस्था कराई थी। आज गांव का हर बच्चा वहां पढ़ने जाता था। उनके संगठन का ही असर था कि गांव की हर लड़की स्कूल जाने के साथ-साथ बाकी बातों में भी भाग लेती थी।

दीदी बातें करते हुए धारा प्रवाह बताती जा रही थी

–''दरअसल ये लड़ाई सिर्फ जमीन तक ही नहीं है। यह तो जमीन से शुरु हुई है। आगे हमारे हर हक तक जाएगी। आज दमन ज्यादा है, हम अपनी जमीन बचा रहे हैं। कल आगे बढ़ेंगे और उनके कल-कारखानों पर धावा बोलेंगे, क्योंकि वह 99 प्रतिशत जनता की गाढ़ी कमाई है, जिसे उन्होंने अपना बनाकर रख लिया है। तुम अभी सारी बात नहीं समझोगी। मगर जान लो, यह लड़ाई अपने हक की है, जिसे हर इंसान को लड़ना चाहिए। यह लड़ाई सिर्फ यही इसी गांव में ही नहीं हो रही। हर जगह हो रही है, जहां भी जिस भी प्रदेश की जनता पर दमन हो रहा है, जिस भी प्रदेश की जनता का हक छीना जा रहा है, वहां की जनता अपने हक के लिए आवाज उठा रही है, हथियारबंद होकर लड़ रही है। ...हमें लड़ाई लड़नी है ताकि हमारी आने वाली पीढ़ी अच्छे माहौल में जी सके।''

''दीदी क्या तुम्हें डर नहीं लगता।''-जया ने पूछा था।

''डर! डर कैसा, मरने का? तुम्हें मालूम है कामरेड मरते नहीं, वे गौरवपूर्ण शहादत प्राप्त करते हैं। हम यदि डरेंगे तो दुश्मन हमें डरा कर ही मार डालेगा। उसे बंदूक की भी जरूरत नहीं होगी। मगर देखते हो, हमारे निर्भिकता का असर देखो, दुश्मन बटालियन पर बटालियन बनाती जाती है, फिर भी सर पीटती रहती है। हमारे डर से वो एक से एक तरीका इजाद करते रहते हैं। अफसोस यदि होता है तो बस इस बात का कि ये सेना भी वे हमारे अपनों के बीच से ही निकाल लेते है, हमें अपनों से ही लड़ना पड़ता है। खैर, यह लड़ाई जरूरी है। बहुत जरूरी। डर तो दूर हमारा हौसला तो इतना बुलंद होता है कि सौ सैनिकों को हम अकेले संभालते हैं। मेरी तो बस एक ही चाहत है, जब भी मौत आए कम से कम दस दुश्मनों को मार कर मरूं।'' - दीदी की बातें याद आ रही थी और आंखें भिंगी जा रही थी। पता नहीं बाहर क्या हो रहा था? गोलियों की आवाज व धमाकों की आवाज तेजी से सुनाई पड़ रही थी। भोर का बेसब्री से इंतजार था।

.....

सुबह तक सब कुछ शांत हो गया था। पुलिस जीप की आवाज तेज सुनाई पड़ रही थी। बुधिया दौड़ती हुई घटना स्थल की ओर भागी, जहां पहले से ही भीड़ उमड़ी हुई थी। उससे काफी दूरी पर पुलिस का जत्था काम कर रहा था। पुलिस वालों की लाश गाड़ी में रखी जा रही थी।

''क्या खबर है?'' - किसी ने पूछा।

''बीस पुलिस वाले मारे गये हैं और...''

''और कह रहें हैं एक कामरेड महिला कामरेड।''

किसी ने दोहराया। बुधिया यह जानने को बेचैन थी, आखिर क्या हुआ? कितने मरे? कौन मरा, किसने मारा? उस दोपहर को माला दीदी के साथ एक कामरेड साथी चिराग भी था। क्या हुआ दोनों का? उस दोपहर वे लोग जैसे ही रवाना हुए थे, जाने कहां से पुलिस का दस्ता वहां आ गया था और उसने उसके भाई माधव को ढूंढ़कर पकड़ लिया था। बुधिया को मालूम था कि उसका भाई उन्हें कुछ नहीं बताएगा। शायद इसीलिए वे अंदेशा लगा रहे थे कि वहां कामरेडों की पूरी टीम है जबकि सिर्फ दो कामरेड थे माला दीदी और चिराग दा। खेत में क्या हुआ? कौन था खेत में? इतने सारे पुलिस वालों को किसने मारा? क्या उन दो कामरेडों ने? मगर वे तो कह रहे थे कि एक कामरेड मारा गया है। बुधिया का मन बिल्कुल अशांत था। वह घटना जानने को बेताब थी।

.....

दूसरे दिन अखबार में खबर छपी थी।

नक्सलियों और सीआरपीएफ के जवानों के बीच मुड़भेड़ हुई। 20 पुलिसकर्मी मारे गये। नक्सली कमांडर माला मारी गई, उसके साथ पांच नक्सली ढ़ेर।

यह अखबार की खबर थी। असली खबर भी गांव में पहुंच चुकी थी। एक महिला कामरेड, बहादुर कामरेड सच में उन्हें छोड़कर जा चुकी थी। चिराग दा को भगाकर अकेले उन्होंने मोर्चे को संभाली थी। क्या दृश्य रहा होगा, क्या बहादुराना प्रदर्शन होगा? एक अकेली कामरेड पूरी फौज पर भारी पड़ गई। हां! वे चार सौ की तादाद में थे और वे अकेली, फिर भी उनके हौसले को परास्त करती हुई 20 को मार डाली उन्होंने।

बुधिया को माला दीदी की बातें याद आ गई, ''कम से कम दस दुश्मनों को मार कर मरूं।''

पूरे गांव का माहौल दहशत भरा था। लोग घरों में दुबके बैठे थे। बाहर पुलिस की पूरी छावनी बिछी हुई थी। उनके बीच शायद इस बात की चर्चा थी कि गांव वाले इतने डरे हुए हैं कि अब किसी गुरिल्ले को पनाह न देंगे। गांव की लड़कियां तालाब किनारे भी न जा रही थी। चारों तरफ पुलिस के आदमी तैनात थे। गांव वालों को डराने धमकाने का सिलसिला जारी था।

कुछ दिन बाद सीआरपीएफ की पूरी फौज गांव में गस्त को आई और पूरी गांव में एक पर्ची का वितरण हुआ। बुधिया, दुमरी, जया, लाली, जिसने माला दीदी के खोले गए स्कूल से पढ़ना सीखा था। उस पर्चे को उठाया, क्या लिखा था उसमें। बुधिया ने पढ़ना शुरू किया - ''इसमें लिखा है कि नक्सलियों का खात्मा हो रहा है। हाल ही के दिनों में उनकी एक कमांडर को हमारे जवानों ने मार दिया है और जगह-जगह छापामारी करके ढुंढ़- ढूंढ़कर उन्हें मारा जा रहा है। कुछ ही दिनों में उनका सफाया हो जाएगा, इसीलिए आपलोगों के पास

उनकी जो भी जानकारी हो, उसे हमारे हवाले कर दें। सरकार की मदद करें, आपको इसका अच्छा इनाम भी मिलेगा।''

''इनाम की राशि क्या है?'' - लाली ने पूछा।

''इनाम में लाखों रूपये, हमारे लिए पक्के घर और हमारे घर के किसी एक सदस्य को 25 हजार का काम मिलेगा।''-बुधिया ने पढ़कर सुनायी।

''पूरे गांव में ये पर्चा बंटा है। लोग उत्सुक होकर पढ़ रहे हैं।''-पीछे से आवाज आई। यह आवाज जीतू की थी, लाली का 15 वर्षीय भाई।

''मुझे माला दीदी की बात याद आ रही है। वो बोली थीं, ये लोग गरीब लोगों की, किसानों की व हम गांव वालों की पूरी जिंदगी की कीमत भी बैठाते रहते हैं। लालच देते हैं, कामरेडों को पकड़वाने के लिए। पर यह चंद रूपये हमारी आजादी नहीं तय कर सकती। आज यदि हम इस लालच में अपनी जिंदगी बेच दें, तो भविष्य में हमारे बच्चों से फिर यह आजादी छीन ली जाएगी और सदियों तक हम इसी तरह दमन झेलते रहेंगे। आज यदि हम लड़ेंगे, तो कल आजादी जरूर मिलेगी, इसीलिए ऐसे लालाच से बचकर रहना चाहिए। यह लालच मंहगा पड़ता है।''-बुधिया बोलती हुई रूक गई।

जब से गांव में वो घटना घटी और पुलिस वालों की छावनी वहां लगी, गांव वाले अपने-अपने बच्चों को संभालना शुरू कर दिये थे। लड़कियों का कहीं दूर तक घूमना-फिरना बंद कर दिया गया था। जिस दिन पर्चा बंटा, उस रात बुधिया सोने को गई तो बुधिया के पिता ने बुधिया को सावधान करते हुए कहा - ''देखो बुधिया, जो हुआ सो हुआ। अब मुसीबत सर पर आ गई है, इसलिए अब सब कुछ बंद कर दे। हम इस भंवर में नहीं फंसना चाहते। यह दलदल है, इसमें पैर रखेगी, तो धंसती ही जाएगी।''

पिता समझाकर अपने बिस्तर पर जा लेटे और बुधिया अपनी नम आंखों से शून्य को निहार रही थी। जहां उसे उसकी माला दीदी नजर आ रही थी, उनकी बातें याद आ रही थी और पर्चे के शब्द कि सब खत्म होता जा रहा है और जल्द ही सारे नेता पकड़े जाएंगे। ओह! क्या माला दीदी के साथ उनके सपने भी मर जाएंगे? क्या इस गांव का जगना यहीं पर बंद हो जाएगा? उसका किसी से कोई संपर्क भी नहीं है। वह पूरे पार्टी को, पूरे संगठन को जानती भी नहीं है सिवाय माला दीदी के। गांव में एक दो लोग ही थे, जो उसकी तरह ही इन बातों से इतने ही जितना वह वाकिफ थी, वाकिफ है। और क्या है, इस गांव में सारे लोग अपने बेरंग जिंदगी में व्यस्त। इन बातों से अनजान। क्या होगा पता नहीं! उसने आह भरी और आंखें बंद कर ली।

दूसरी सुबह बुधिया अपने बिस्तर पर न थी। तड़के सुबह वह कहां जा सकती है? रात की बात से नाराज होकर कहीं खेत पर तो नहीं चली गई। पिता ने खेत में जाकर देखा। पर वह वहां भी नहीं थी, वापस घर आए तो बुधिया के बिस्तर पर एक कागज पड़ा था, जिसपर कुछ लिखा था। अक्षर ज्ञान होने के कारण वो उसे पढ़ सकते थे। पत्र में लिखा था ''आप कहते हैं, यह दलदल है, इस दलदल में न फंसो। मैं कहती हूं, इस दलदल से बचने के बजाय क्यों नहीं हम इस दलदल को साफ करने के लिए कदम बढ़ाएं। माला दीदी की तरह एक कामरेड की तरह। वे कहते हैं, वे सारे कामरेड को मार देंगे और लड़ाई खत्म हो जाएगी। पर वे नहीं जानते, कामरेड कभी मरते नहीं। एक जाते हैं, तो कई आते हैं। मैं भी वहीं जा रही हूं। उस संघर्ष में रास्ता बनाने, रास्ता तलाशने।'' उसके पिता घबड़ाते हुए घर से बाहर निकले, लोगों को यह बताने कि उनकी बेटी किसी खतरनाक काम के लिए भाग चुकी है। पर बाहर निकलकर वो स्तब्ध रह गए, क्योंकि बाहर आने के बाद उन्हें मालूम चला गांव से 16 लड़के और लड़कियां गायब हो चुकी हैं, अपने-अपने बिस्तर पर वैसी ही एक-एक चिट्ठी छोड़कर और उन्होंने बेटी की चिट्ठी पर फिर से नजर डाली - एक लाइन ऐसा लगा कि काफी गहरे स्याह से लिखी गई है और उभरती जा रही है, ''एक जाएंगे, तो कई आएंगे।''

2. हिम्मत

नन्हा बच्चा दरवाजे से सटकर बैठा खेल रहा था। माहौल में खामोशी थी। उसी वक्त दो सीआरपीएफ के जवान झोपड़ी के अंदर घुसे।

''चल साले!''- उसने रमेश की गरदन पर हाथ मारते हुए उसे बाहर की ओर खींचा।

''मैंने क्या किया है!''-रमेश घबड़ाई सी आवाज में बोला।

''साले! घर में पनाह देता है दुश्मनों को और कहता है मैने क्या किया? अब तो तेरा हम करेंगे।''-उस बड़े और नशीले आंखों वाले सीआरपीएफ के जवान ने अपनी बंदूक के बट से रमेश की पीठ पर वार किया। वह वहीं जमीन पर धम्म् से गिर गया।

''ये ठीक नहीं कर रहे हैं साहब!''-रमेश ने कराहते हुए मगर तल्ख आवाज में कहा। अब तक मोहल्ले के बाकी लोग

भी जमा हो गये थे। कोई छुपकर तो कोई दूर से उस तमाशे को देख रहा था। रमेश का दस साल का बेटा, जो अभी-अभी अपनी बकरियों को हांककर घर पहुंचा था, बाबा को इन दो दुश्मनों के हाथों पीटते देख दौड़कर उस जवान के पैर से जा लिपटा। ''छोड़ दो, मेरे बाबा को छोड़ दो।''

''चल हट! अपने पैर को झटककर उसने बच्चे को दूर फेंक दिया। जमीन पर गिरते ही और बाबा को जख्मी होते देख वह इधर-उधर नजर दौड़ाने लगा। उसकी नजर एक ईंट पर पड़ी, उसने दौड़कर वह ईंट उठाया और बाबा को बचाते हुए जैसे चिड़ियों पर निशाना साधता था, उस सीआरपीएफ के जवान के सर पर फेंक मारा।

''आह!''- उसने सर पर हाथ डाला-''खून! कुत्ते के पिल्ले! रूक बताता हूं।''- वह उस बच्चे की ओर लपका ही था कि वातावरण को भांप कर बच्चा सामने वाली गली में रफूचक्कर हो गया। बच्चे के वार के बाद उन दोनों के स्पीड में अचानक से कमी आई। दोनों ने अब रमेश को पीटना बंद कर दिया था।

''इसे थाने ही ले चलो। साले की वहीं मरम्मत करेंगे। पनाह देता है दुश्मनों को। ऐसी हालत करूंगा कि भूल जाएगा।''-दोनों उसे घसीटते हुए अपनी जीप पर लादे और चले गए। उनके जाने के बाद वह बच्चा दौड़कर आया। ''बाबा! बाबा!'' वह फफक-फफक कर रोने लगा। मोहल्ले की औरतें भी जुट गईं। लोग भी जुट गये। अब क्या होगा? कोई नहीं जानता था।

दो साल बीत गए रमेश अभी तक वापस नहीं आया था। वह जेल में था। पुलिस वाले चाहते थे कि वह इस बात को स्वीकार करें कि उसने नक्सलियों को पनाह दी है और वह उन्हें पहचानता है। वह चाहते थे कि रमेश उन नक्सलियों को पकड़वाने में उनकी मदद करे। मगर रमेश ने अभी तक मुंह नहीं खोला था। पुलिस वाले इस बात से हैरान थे कि एक इंसान जिसका जीवन गरीबी में कट रहा है, जिसे इनाम में अच्छी खासी रकम दी जाएगी, वह नक्सलियों के खिलाफ मुंह क्यों नहीं खोल रहा। उसे उस दिन से लेकर आज तक हर दिन प्रताड़ित किया जाता था, मगर उसके मुंह से आह की बजाय कोई और आवाज नहीं निकली थी।

''ऐसा क्यों हैं?''-आज जो पुलिस वाले को उसे टोर्चर करने की ड्यूटी मिली थी, उसने सोचा। दण्ड ने काम न किया है। मैं प्यार और लालच से उससे सारी बातें उगलवा लूंगा।

मगर अपने प्रयास में असफल हो जाने के बाद वह खिन्न हो गया और उसने एक आखिरी सवाल जो लीक से हटकर थी, उसके सामने रखी। उसने खिन्न होकर कहा-''मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि ऐसी कौन सी बात है, जिसके कारण तुम अपना मुंह नहीं खोल रहे हो?''

रमेश मुस्कराया-''अभी आपने सही सवाल किया है, सर!''

''हां, तो कहो न! अभी तुम्हारे बीबी-बच्चे सभी परेशान हैं, घर में खाने के लिए लाले पड़े होगें। तुम्हें उनके बारे में भी सोचना चाहिए और फिर यह सरकार तुम्हें उसके बदले में लाखों रूपये भी दे रही है। तुम्हें ज्यादा कुछ करना भी नहीं है, उनकी पहचान करा दो और.....।''

रमेश ने फिर मुंह फेर लिया।

''तुम्हें अपना बच्चा याद नहीं आता, वह भूख से मर जाएगा। तुम्हारी बीबी बेचारी कैसे पालेगी उन्हें।''

''मुझे वे बच्चे याद है, जो भूख से नहीं आपकी गोलियों से मरते हैं। मुझे वे बच्चे याद हैं, जो हम जैसी आम जनता के हक की लड़ाई के लिए लड़ते हुए दुश्मन के साजिश के शिकार हो जाते हैं। मेरा बेटा तो अभी बहुत छोटा है।''-रमेश ने कहा।

'ओह! अच्छा यह बात है। बहुत घमंड है, तुम्हें अपने आप पर।''

''नहीं सर, गर्व अपनी हिम्मत पर है कि मैं इतना साहसी हूं और अपनी जबान पर गर्व है, जो इतने असहनीय स्थिति में भी काबू में है।''

रमेश के इस बात से ऑफिसर का चेहरा तमतमा उठा। उसने सामने रखी लाइट रमेश के चेहरे पर दे मारी। रमेश का कुछ न कहना, उन्हें इस बात की शंका दिला रही थी कि रमेश के पास जरूर कोई बड़ी खबर छुपी है। वह कोई साधारण ग्रामीण नहीं है, जिसने सिर्फ नक्सलियों को पनाह दी है बल्कि जरूर वह कोई बड़ा नक्सली है। -इस बात को लेकर उन्होंने उसकी गहरी छान बीन की, उसके घर पर चौकसी भी रखा, मगर कोई सुराग या कोई भी प्रमाण उन्हें न मिला, जिससे वे उसे नक्सली साबित कर सकते थे। बस शक की सुई गहरी हो रही थी और रमेश के निर्दोष होने के प्रमाण पुख्ते थे। लाख कोशिश के बाद भी जब कोई प्रमाण न मिला, तब पुलिस वालों ने एक नयी चाल चली। उन्होंने रमेश को रिहा कर दिया और अब उसे नजरबंद रखने के गुप्त आदेश जारी किये।

आज ही रमेश रिहा हुआ। पूरे तीन साल बाद। उसे वापस लौटा देख बीबी-बच्चे खुशी से फूले न समा रहे थे। गांव के लोग भी उत्साहित होकर उससे मिलने आ रहे थे। सबसे पहले जब किसी की नजर उस पर पड़ती थी, तो वह हक्का-बक्का रह जाता था। सांवला सा रंग थोड़ा सफेद हो

गया था और चेहरे और हाथ-पैर में गहरे घाव के निशान थे। आंखें फूली-फूली सी लग रही थी, जैसे उसके साथ बहुत अत्याचार किया गया हो। मगर इस उपरी शारीरिक कष्ट पर रमेश की साहस भरी बातें लोगों का उत्साह बढ़ा देती थी। कैसे उसे भयंकर गर्म लोहे से दागा गया, फिर भी उसने अपना मुंह न खोला। कैसे उसे मोटे छड़ से पीट-पीट कर अधमरा किया गया, फिर भी उसने मुंह न खोला। कैसे टॉर्चर के सारे हथियार इस्तेमाल कर लेने के बाद भी उसके मुंह न खोलने पर सारे पुलिस कैसे पस्त हो जाते थे। कैसे उसने अपनी चुप्पी से व अपने हौसले से सभी को पस्त कर दिया। इस किस्सा को सभी बड़े चाव से सुन रहे थे।

''चाचा, क्या एक बात पुछूं? हम सब जानते हैं कि तुम्हारे घर में दादा और दीदी लोग कभी-कभी, वह भी रात भर ठहरने मात्र के लिए आते हैं। तुम तो उतना बड़ा काम भी नहीं करते हो, जैसे साहित्य बांटना, हथियार ढोना, कहो तो, तुम चरवाहे ही हो और कुछ नहीं। तुम तो उनकी टीम में शामिल भी नहीं हो, फिर भी तुमने इतनी-सी बात के लिए इतनी बड़ी सजा कैसे सह ली? मतलब उसकी हिम्मत कहां से लाई?''

मुकेश की बात सुनकर, रमेश मुस्कराया।

''कैसी फालतू बातें करते हो बेवकूफ।''- राजू ने डपटा।

''नहीं, नहीं! उसने सही बातें कही है। सही है, कुछ तो हमारी सोच होती है, जो हमें इतना साहस करने की हिम्मत देती है। बिना मजबूत विचार के हम इतना साहस नहीं दिखा पाएंगे। सही बात है और मेरे साथ भी यही बात है। हां, मैं संगठन के साथ घूमता नहीं हूं, वहां के लोगों को जानता भी नहीं हूं। शिक्षा भी लेने नहीं जाता, बस कभी-कभी उन्हें अपने घर में पनाह देता हूं, मगर भाई जब मैं सोचता हूं कि हमारा यह संगठन किन लोगों के लिए काम कर रहा है, इसकी लड़ाई किन लोगों की है, तो मुझे हिम्मत मिलती है। ये लड़ाई हमारे जैसे लोगों को हक दिलाने के लिए है। जब इसको मजबूत बनाया जाएगा, तभी तो यह तख्ता पलटेगा, ये जुल्म अत्याचार का राज समाप्त होगा और इसे मजबूत आखिर कौन करेगा, हम सारे लोग ही तो मिलकर। जिसे भी जो भी काम मिला है, उसे ईमानदारी व जिम्मेवारी से निभाकर। हम सब इस संगठन की कड़ी हैं, एक छोटी सी कड़ी हों या बड़ी सी कड़ी। हमारे ईमानदारी से जुड़े रहने से ही यह बना रहेगा। कहते हैं न बूंद-बूंद से घड़ा भरता है। हम एक-एक व्यक्ति की शक्ति संगठन को मजबूत बनाती है। दुश्मन लोग तो इसे दबाने के लिए हमें लोभ लालच तो देंगे ही। सोचना तो हमें है कि हम दुश्मनों का साथ न दें। अगर ये सत्ता ढह गया, तो उनको अरबों-खरबों का व्यापार खत्म हो जाएगा। इनकी पूरी शासन वाली दुनिया ही लूट जाएगी, मगर उससे हमारे जैसे करोड़ों-करोड़ लोग आजाद हो जाएंगे, इस गरीबी व भूखमरी वाली व्यवस्था से। तब की सत्ता हमारी होगी। पर उसमें समय तो लगेगा न! फिर हिम्मत की भी जरूरत है। हमारे दीदी और दादा लोग कैसे हिम्मत दिखाते हैं। वो किसी दूसरे ग्रह के तो है नहीं हैं न और लड़ भी रहे हैं हमारे ही जल जंगल जमीन को बचाने के लिए। इन दुश्मनों का क्या है? आज मुझे लालच देकर तुम्हें मरवाएंगे। कल तुम्हें लालच देकर मुझे मरवाएंगे। हमें लालच देकर हमारे दीदी व दादा को मरवाएंगे ताकि हम जो अपने हक के लिए उनके साथ खड़े हो रहे हैं, सर उठाने की हिम्मत कर रहे हैं, उसे वह रौंद सके। इसलिए हमें अपनी पार्टी से ईमानदारी से जुड़े रहना चाहिए। जो नही जुड़ा है, दुश्मनों के बहकावे में आ जाता है, वह गद्दार है। ऐसे गद्दार न इधर के होते हैं, न उधर के। ऐसे दुश्मनों के साथ मिलने से मौत अच्छी है। यही वो विचार है, जो मुझे सब कुछ सहने की शक्ति देता है। मैं अपना पूरा जीवन जेल में सड़ा सकता हूं, मगर गद्दार नहीं बन सकता। मुझे गर्व होगा कि मैंने अपनी पार्टी के लिए अपना जीवन गंवाया है।''

रमेश के कहते-कहते उसके आंखों में तेज आ गये थे। उसकी बातों से सबके चेहरे पर चमक बिखर गई थी, जैसे एक दृढ़ इच्छा शक्ति उनके अंदर आकर घुस गयी हो, जो ललकार रही हो कि हमें भी कैद करो जंजीरों में, मगर तुम्हें हर बार हार ही मिलेगी।

23 मार्च को शहीद-ए-आजम भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरू के शहादत दिवस पर जेल में बंद लाखों राजनीतिक बन्दियों के लिए पुरजोर आवाज उठावें!

-सम्पादकमंडल, लाल चिनगारी

कविताएं

विश्वविद्यालय में पढ़नेवाले छात्र की एक कविता मलकानगिरी में शहीद हुए साथियों को समर्पित

शहादत कभी बेकार नहीं जाती

हाँ, कामरेड हाँ
हम जलाये रखेंगे
क्रांति की मशाल
कभी नहीं भूलेंगे
तुम सब का ये
आखिरी पैगाम
जब भी हमारे
कदम लड़खड़ायेंगे
तो तुम सब की
शहादत को याद कर
संभल जायेंगे
कैसे तुम सब
दुश्मन के सामने नहीं झुके
असहनीय यातना झेलते हुए
इंकलाब-जिंदाबाद के
नारे बोलते हुए
हम सब से विदा हुए।

तुम सब हमारे
सूरज थे, चांद थे
तुम सब की याद
जब-जब आयेगी
हमारे साथ ये
जंगल-पहाड़ भी रो पड़ेंगे।

तुम सब ने एक बार फिर
साबित किया कि हम कामरेड
सिर्फ शरीर नहीं विचार हैं
जलती हुई मशाल हैं
जिसे दमन की कोई भी आंधी
नहीं बुझा सकती है
जिसकी जड़ें इस धरती पर जारी
शोषण और उत्पीड़न में है
जो तुम सब की शहादत के बाद
और लाल हो गई है
और लाल हो गया है
भारतीय क्रांति का इतिहास
जो लगा रहा है आवाज
कि इसके अलावा
मुक्ति का और कोई रास्ता
नहीं है देश के पास।

जिसे सुन रहे हैं
मजदूर-किसान, छात्र-नौजवान
हम सब को है पूरा विश्वास
शहादत कभी बेकार नहीं जाती
लाहौर सेंट्रल जेल की तरह
मलकानगिरी की शहादत भी
रंग लायेगी
पूरे देश में क्रांति की
ज्वाला भड़कायेगी
जिसका हो रहा है हम सब को एहसास
आखिर यह लड़ाई
कब तक जंगलों में रहेगी
अब तो शहरों में आयेगी
लाल किले पर क्रांति का
परचम फहरायेगी
इसी संकल्प के साथ
तुम सब की शहादत को लाल सलाम!

(लाहौर सेन्ट्रल जेल में 23 मार्च, 1931 को शहीद-ए-आजम भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरु को अंग्रेजों ने फांसी दिया था, लाहौर अभी पाकिस्तान में है। -सम्पादकमंडल, लाल चिनगारी)

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च) के अवसर पर कॉलेज में पढ़नेवाली छात्रा की दो कविताएं हमारी पीएलजीए में शामिल महिला साथियों को समर्पित

1.

नारी के उस रूप को लाल सलाम

लाल सलाम उस स्वरूप को
जिसने जीती है
समाज में उपस्थित पुरुषवादी व्यवस्था को
जिसने खींची है तस्वीर
एक योद्धा रूपी महिला की
जो उठाती है बंदूक
और अपने निशाने से
मार गिराती है उन सारे विचारों को
जो कहता है नारी तुम कमजोर हो
नारी तुम कमजोर हो कि
तुम्हें रहना है किसी न किसी
पुरूष के अधीन ही
किसी न किसी
पुरूष के संरक्षण में ही
तुम्हें रहना है अपनी आवाज दबाकर
सहना है सारे जुल्म अत्याचार
जो तेरे उपर ढाये जाते हैं
जन्म से मृत्यु तक
जो तुम्हें लड़की होना
दुखद घटना सा कराती है एहसास
कि तुम पढ़ नहीं सकती
स्वतंत्र सपने गढ़ नहीं सकती
अपने हक के लिए लड़ नहीं सकती
पति मारता रहे या
घर में होता रहे तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार
अपने आत्मसम्मान के खातिर
अपनी आवाज बुलंद कर नहीं सकती
तुम्हें निभाना है समाज के
बने अपने शोषणयुक्त दायित्व को
तुम्हें निभाना है समाज में
बने तुम्हारे छवि को
कमजोर, संकोची, चुप, शांत
शोषण सहने वाली व रोने वाली
जो बताता है कि नारी तुम कमजोर हो
यदि तुमने लिया है जन्म
किसी गरीब घर में, पिछड़े समुदाय में
तब पुरूष अपनी पुरूषार्थ के लिए
करेगा तेरा बलात्कार
और तब तेरी इज्जत चली गई
सोचकर तुम रोती रहोगी, रोती रहोगी
इसलिए,
नारी के उस रूप को लाल सलाम
जिसने तोड़ी है नारी के इस स्वरूप को
जिसने बदली है नारी के इस पहचान को
जो जब गरजती है
उठाती है बंदूक
तो अपने हौसले से, निशाने से
अपनी हिम्मत से, जज्बे से
ठोस इरादे से, सही विचार से
अपने पूरे आत्मविश्वास से
छुड़ा देती है पसीने उन सैकड़ों सरकारी फौजों का
जिनकी मानसिकता में भी नारी का एक सूक्ष्म रूप है
जिस सोच के साथ वे करते है बलात्कार की कोशिश
पर नारी की यह बहादुर रूप
संघर्ष के इस रूप में भी
नहीं खोता अपना हौसला
और कमजोर होने के बजाय
प्रेरित करती है और नारियों को
डरो नहीं, आओ संघर्ष के लिए मुक्ति के राह पर
संघर्ष के मैदान में पूरी ताकत से उतरती है ये
इनकी ताकत, इनकी हिम्मत
पछाड़ देती है समाज के अवधारणाओं को
कर देती है चकनाचूर नारी के कमजोर तस्वीर को
ये संगठन बनाती है पुरूषवादी मानसिकता से लड़कर

संघर्ष के लिए करती है तैयार
मुक्ति के सपने गढ़कर
और एक संतरी के रूप में
अकेले सौ को संभालने का जज्बा दिखाती है।
शादी बच्चे साज श्रृंगार के
मोह से उपर, इनके सोच इनके विचार
पूरी तरह समर्पित संघर्ष की राह पर।
नारी के इस रूप को लाल सलाम
हां, नारी के इस रूप को लाल सलाम
जिसने खींच दी है इतिहास के पन्नों पर
अपने खून से नारी की यह तस्वीर
युद्ध के मैदान में लड़कर शहीद होने की
सालों साल बंदी जीवन जीने की
अकेले सीआरपीएफ के जवानों से
लड़कर, उन्हें डराकर शहीद होने की
नारी के इस रूप को लाल सलाम!

2.

समझते थे वो
एक महिला,
सिवाय देह के
और कुछ नहीं ।
नहीं कर सकती वो मुकाबला
पुरूषवादी मानसिकता का ।
नहीं झेल सकती अपने
देह पर हुए हमले को।
वो नहीं समझते थे
एक महिला
देह के चोट को
वैसे ही समझ सकती हैं,
जैसे एक पुरूष
अपने देह के चोट को समझता है।
क्योंकि उन्होंने तो बनाया था पैमाना
देह पर हमला यानी पवित्रता पर दाग।
और,
कैसे भला जी सकेंगी
एक महिला इस दाग को लेकर।
लेकिन,
हमारी बहनों ने साबित कर दिया
और,
अब पुरूषवादी मानसिकता के पोषक भी
समझ चुके हैं कि
महिला एक देह नहीं
एक विचार है, एक मजबूत विचार ।
इतनी मजबूत कि,
रोके रख सकती है वो रास्ता,
अकेले ही सैकड़ों की संख्या में
आए अपने हथियारबंद दुश्मनों का ।
बिल्कुल एक 'मंजे हुए योद्धा की तरह'
दमन के नये-नये तरीकों के,
बावजूद भी रख सकती है
हां, रख सकती हैं
इतनी हिम्मत कि
लड़े अपनी आखरी सांस तक।
नहीं करती है चिंता पवित्रता की।
लड़ती है अपनी लड़ाई
मजबूत विचार के साथ
क्योंकि जान चुकी है महिला
अपनी सारी परेशानी की जड़ें,
नहीं है अब उन्हें समाज के
खोखले कायदों की चिंता
अब शामिल हो रही हैं वो
अपनी असली मुक्ति की लड़ाई में
व्यवस्था परिवर्तन की लड़ाई में।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च) पर एक कामरेड की कविता

नारी जिनके रूप अनेक
कभी किसी की मां, बहन, बेटी
तो कभी किसी की चाची, बुआ, मौसी
और कभी किसी की पत्नी।

सिर पर आधा आसमान उठाए

पूरी आबादी की आधी है वह
तो फिर क्यों शोषित-उत्पीड़ित
दुखी और सतायी हुई है वह?

पूर्व में इनकी ऐसी हालत न थी
वह सामाजिक उत्पादन में भाग लेती थी
कंधे से कंधा मिलाकर
पुरुषों के साथ चला करती थी
हां, कुछ समय के लिए वह स्वयं को
उत्पादन कार्य से दूर रखा करती थी
पर इस अवधि में भी वह मानव जाति के
अस्तित्व को बनाये रखने का महत्वपूर्ण काम करती थी

इतना महान योगदान
पूर्व में था इनका बड़ा सम्मान
तो फिर आज क्यों दहेज प्रथा के नाम पर,
तो कभी झूठी इज्जत-प्रतिष्ठा के नाम पर,
वह जलायी जाती है, प्रताड़ित की जाती है?

मार्क्सवाद का दर्शन हमें बतलाता है
निजी संपत्ति और इस पर आधारित समाज व्यवस्था ही
महिला उत्पीड़न को बल देता है।

तो फिर क्यों न हम नवजनवादी क्रांति की राह थामें?
जो तमाम किस्म के महिला उत्पीड़न को कब्र देता है
एक समाजवादी वतन के निर्माण के मार्ग को प्रशस्त करता है
और समस्त महिलाओं के लिए स्वाधीनता, जनवाद,
समानाधिकार और नारी मुक्ति को सुनिश्चित करता है।।

एक पीएलजीए महिला कामरेड की कविता

इस व्यवस्था का हम क्यों विरोध करते हैं?
क्यों तोड़ना चाहते हैं इस व्यवस्था को?
आज सुन लो मेरे माताओं व बहनों
कैसी है तेरी जिन्दगी आज?

गरीब महिला या बच्ची को देखो
बलात्कार की क्रूरता इस व्यवस्था में देखो
शादी के बाद होने वाले उत्पीड़न को देखो
शादी में दहेज के दानव को देखो
महिलाओं की आत्महत्या को देखो
डायन के नाम पर अंधविश्वास को देखो
जिन्दा जलाए गए उन महिलाओं को देखो।

बढ़ रही है भ्रूण हत्या की कहानी
बढ़ रही है बलात्कार की कहानी
कब तक सहोगे यातनाएं व दर्दों को
कब तक सहोगे इस व्यवस्था को
कब तक रहोगे पितृसत्ता के अधीन
कब तक बनोगे जुल्म-अत्याचार का शिकार।

तोड़ दो इस हत्यारी-बलात्कारी व्यवस्था को
तोड़ दो इस गुलामी की जंजीरों को
आओ, हम सभी बनाएंगे एक शोषणमुक्त समाज।

कॉलेज में पढ़नेवाली एक साथी की जोश से भरी कविता

लाल झण्डे की फतह

हर बार दुश्मन सोचते हैं
चारदीवारी में कैद करके
दबा दी जाएगी आवाज
वो समझते हैं कि
जेल की सलाखों में सड़ाकर
क्रांति कुचल दी जाएगी,
वो समझते हैं फांसी के फंदे से
विचारों का गला घोंट दिया जाएगा।
मगर वह नहीं समझते
ऐसा ना कभी हुआ है, ना कभी होगा
जब इतिहास को पन्ने में उतारने के
साधन न थे, तब भी नहीं और आज भी नहीं
1931 हो या 1967 या उस समय से आज तक
मुक्ति की आवाज बुलंद थी
बुंलदी की राह पर बढ़ती रही है
बढ़ती रहेगी।

हां! इस देश में ही नहीं, उस देश में ही नहीं
पूरी दुनिया में वह तब तक चलता रहेगा
जब तक अपनी जीत का झंडा न गाड़ ले।
जब तक अपनी जीत का परचम न फहरा ले।
दे तो दी थी एक वक्त फांसी
क्रांति की लहकती मशाल को
पर क्या वह विचार फैलने से रूक गए?
एक भगत सिंह के विचार फैल गए पूरे भारत में
कुचले तो थे एक वक्त
एक क्षेत्र की उठती लहर को
मगर क्या नक्सलबाड़ी की लाल मिट्टी मिट गई?
नक्सल ने लालिमा फैला दी पूरे देश में
लाल झण्डा लहराता हुआ आगे बढ़ता ही गया।
रोकना तो चाहा सलवा जुडुम के द्वारा
लाल फैलाव को
मगर क्या वह फैलाव थम गया?
आज भी हमसे लड़ने के लिए
लाखों सैनिकों की जरूरत पड़ रही है उन्हें
पसीने पसीने हो जाते हैं वो,
छूट जाते हैं उनके छक्के।
नहीं रूकी है कहीं भी,
कभी भी क्रांति की चाह
बढ़ती गयी है समय के साथ
क्रांति लाने वाले दिवानों की भीड़।
आज भी कुचले जा रहे हैं,
कहीं गोली मारी जा रही है
धरती के वीर पुत्र-पुत्रियों को,
कहीं साजिश रची जा रही है,
घुसपैठ कराई जा रही है,
पार्टी को तोड़ने की
कहीं रात में सोए लोगों को घेर कर मारने,
धोखे से कैद करने की
कहीं हथियारों से लैस लाखों दरिन्दों के साथ
युद्ध की हो रही है शुरूआत।
मगर सुनो!
धरती की मिट्टी चाहे पूरी लाल ही क्यों न कर दो
उसमें से फिर पनप आएंगे चाह क्रांति की
शहीद-ए-आजम ने कहा है
मरता है शरीर, विचार कभी मरते नहीं।
हम आगे बढ़ेंगे, लड़ेंगे,
मरेंगे, मारेंगे, गिरेंगे, गिराएंगे
हमारा हमारी जीत से उत्साह बढ़ता है,
हमारी विफलता हमें जीत के गूढ़ सिखाती है
हमारे अपनों की शहादत,
अगर हमें रूलाती है, तो हमारी दृढ़ता भी बढ़ाती है,
अपनों के एक-एक खून का बदला लेना है शोषकों से
ये विचार वीरता की ओर ले जाती है,
अपनों की वीरता को दोहराना है अपने भी जीवन में
ऐसे पक्के इरादे पनपाती है।
इसलिए हर हालत में हम आगे बढ़ते हैं और बढ़ेंगे
जब तक कर न दे उन्हें नेस्तनाबूद
कर न दे अपने झंडे को टहक लाल
फहरा न ले हर तरफ लाल झंडा एक दिन।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस को 8 मार्च से 31 मार्च तक पूरे जोश-खरोश के साथ मनावें!

-सम्पादकमंडल, लाल चिनगारी

प्रेस विज्ञप्तियां व पर्चे

15 अगस्त, 2016 को जारी इआरबी की प्रेस विज्ञप्ति

अपनी आजादी के लिए आंदोलन कर रहे कश्मीरियों का कत्लेआम कर रहे भारतीय शासक वर्गों की दरिंदगी की निंदा करो!

सरकारी सशस्त्र बलों द्वारा लगातार जारी हत्याओं के खिलाफ तथा कश्मीरी जनता के न्यायपूर्ण आंदोलन का समर्थन करें!!

कश्मीर में सरकार द्वारा लोगों की हत्याओं का सिलसिला बेलगाम जारी है। सरकारी सशस्त्र बलों द्वारा लगातार जारी मनमानी हत्याओं, अत्याचारों, बिना रुके जारी कर्फ्यू आदि की अवहेलना करते हुए पूरी कश्मीर की घाटी में विरोध प्रदर्शनों का सिलसिला जारी है। भारत के इतिहास में कश्मीर में एक महीने से अधिक से जारी कर्फ्यू अब तक के सबसे लंबा कर्फ्यू बन चुका है। 'आजादी' का नारा समूची घाटी में गूंज रहा है। कश्मीर में बुरहान वानी की फर्जी मुठभेड़ में हत्या के बाद शुरु हुए कश्मीरी जनता के इस न्यायपूर्ण संघर्ष को कुचलने के लिए अर्द्धसैनिक, सैनिक व पुलिस बलों द्वारा की जा रही गोलीबारियों में अभी तक साठ से ज्यादा लोगों की जानें गई हैं। (इनमें अत्यधिक बीस साल से कम उम्र के किशोर व नौजवान हैं।) सैकड़ों लोग पैलेट गन के हमले से घायल हुए हैं। इसमें बड़े पैमाने पर बच्चे और महिलायें शामिल हैं जिनकी आंखें चली गयी है। हम निहत्थे व न्यायपूर्ण तरीके से प्रदर्शन कर रहे कश्मीरियों पर भारत के विस्तारवादी लूटेरे शासक वर्ग, जो अपने को दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र बताते हैं, बेशर्मी के साथ सशस्त्र बलों को उकसाकर बेहद क्रूरता से दमन कर रहे हैं - की तीखी निंदा करते हैं। देश की सुरक्षा के नाम पर ब्राह्मणवादी हिन्दु फासीवादी भाजपा सरकार ने जहां इस बर्बर हमले को जारी रखने का संकल्प दुहराया है वहीं अन्य शासक वर्गीय पार्टियों ने देश की सुरक्षा के साथ समझौता नहीं करने की बात कह इस बर्बर दमन में लगातार सहयोग किया है। इस हमले में ब्राह्मणवादी हिन्दु फासीवादी भाजपा की सहयोगी महबूबा भी शामिल है जो कश्मीरी जनता के साथ न्याय करने के नाम पर सत्ता में आयी है। लाठीचार्ज, आंसू गैस छोड़ने के साथ-साथ हर प्रदर्शन पर पैलेट गनों का इस्तेमाल एक आम घटना हो गयी है। इसी पृष्ठभूमि में कश्मीरी जनता, खासकर नौजवान हाथ में आए पत्थरों से ही इसका प्रतिरोध कर रहे हैं। इस अमानवीय दमनचक्र के विरोध में और अपनी आत्मरक्षा के लिए किया जा रहा यह प्रतिरोध पूरी तरह न्यायपूर्ण और लोकतांत्रिक है।

कश्मीरी जनता ने खुद को कभी भी भारत का हिस्सा नहीं माना। 1947 में अंग्रेजी शासकों से भारत और पाकिस्तान को मिली झूठी आजादी के पहले तक कश्मीर राजा हरि सिंह के शासन में एक स्वतंत्र देश के रूप में था। लेकिन कुटिलता में माहिर ब्रितानी साम्राज्यवादियों के पिट्ठू भारतीय व पाकिस्तानी लूटेरे शासक वर्गों ने अपने हितों के मद्देनजर कश्मीर को अपने देशों में जबरन मिला लिया जो कि कश्मीरियों की इच्छाओं और आकांक्षाओं के पूरी तरह खिलाफ था। एक हिस्से पर भारतीय शासक वर्गों ने कब्जा किया तो बाकी हिस्से को पाकिस्तान ने हड़प लिया। इस तरह बेहद निंदनीय तरीके से इन्होंने कश्मीर को दो टुकड़ों में बांट दिया। उस समय कश्मीरियों के विरोध को ठण्डा करने के लिए नेहरू सरकार ने लिखित रूप से कश्मीरी जनता व संयुक्त राष्ट्र संघ से यह वादा किया था कि कश्मीर में रायशुमारी (जनमत संग्रह) कराई जाएगी और जनता अगर आजादी चाहती है तो दे दी जाएगी। नेहरू ने इस वादे को कई बार दोहराया भी था। लेकिन कुछ ही समय बाद कश्मीर के प्रधानमंत्री शेख अब्दुल्ला को गिरफ्तार कर उन्हें लंबे समय तक जेलों में बंद रखा और उन्होंने सैन्य जूतों तले कश्मीर को रौंदना शुरू किया। नेहरू से लेकर आज के मोदी-राजनाथ-अमित शाह तक दिल्ली में गद्दी संभालने वाली हर शासक पार्टी ने कश्मीरियों के साथ वादाखिलाफी ही की। जब भी आजादी के लिए आवाज उठी, भारतीय विस्तारवादी सरकारों ने कश्मीरियों पर दमन का ही प्रयोग किया। आंखों के सामने घट रहे इतिहास को और अपने ही किए हुए वादों को छुपाते हुए भारतीय शासक सुनियोजित तरीके से यह प्रचार करते आ रहे हैं कि 'कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है।' तबसे कश्मीरियों के दिलों में सुलगती आई आजादी की अदम्य इच्छा ने 1990 के दशक में मिलिटेंट हथियारबंद आंदोलन का रूप ले लिया। कई मिलिटेंट संगठनों ने हथियारबंद संघर्ष चलाया। उन संगठनों के राजनीतिक लक्ष्यों में कुछ फर्क होने के बावजूद उन्हें जनता का समर्थन हासिल हुआ था क्योंकि उन्होंने कश्मीरियों की राष्ट्रीय मुक्ति की आकांक्षाओं को अभिव्यक्त किया। लेकिन उस संघर्ष को कुचलने के लिए भारत के फासीवादी शासक वर्गों ने 7 लाख से ज्यादा सैनिक और

अर्द्धसैनिक बलों को तैनात कर समूची कश्मीर की घाटी का सैन्यीकरण किया और अभी तक 80 हजार से ज्यादा कश्मीरियों की जानें ली। हजारों लोगों को सरकार ने लापता कर दिया। यह कहना गलत नहीं होगा कि दुनिया की किसी भी राष्ट्रीयता के संघर्ष पर किसी भी सरकार ने इतने ज्यादा समय तक, इतनी तीव्रता से, इतनी भारी संख्या में सशस्त्र बलों को उतारकर, इतने क्रूर तरीके से दमन नहीं किया। जब मिलिटेंट आंदोलन तीखे रूप से चल रहा था, तभी भारतीय शासक वर्गों ने कई साजिशों और षड़यंत्रों को रचकर 'फूट डालो और राज करो' वाली नीति से कश्मीरी हिंदुओं और मुसलमानों के बीच झगड़ा पैदा किया। कश्मीरी जनता के जायज आंदोलन के खिलाफ कश्मीरी पंडितों को खड़ा करने की साजिशें लगातार जारी हैं। इसमें विशेषकर विस्तारवादी देशीय अंधराष्ट्रवादी ब्राह्मणवादी हिन्दु फासीवादी संघ गिरोह की भूमिका बेहद नीचतापूर्ण है। 'मिलिटेन्सी' के रूप में प्रचलित कश्मीरियों के उस संघर्ष में कुछ पाकिस्तान-अनुकूल ताकतों और इस्लामिक ताकतों के शामिल होने के बहाने भारतीय शासकों का यह प्रचार कि कश्मीरियों का राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम पूरी तरह पाकिस्तान द्वारा प्रेरित आंदोलन है तथा उनके आंदोलन का लक्ष्य भारत से अलग होकर पाकिस्तान में शामिल हो जाना है, सरासर झूठ है। कश्मीरी जनता की आकांक्षा शुरू से ही अपनी राष्ट्रीयता की आजादी रही है। यही वजह है कि कश्मीर में मिलिटेन्सी को खत्म करने के दावे भले ही भारतीय शासक करते रहें, दरअसल यह संघर्ष रुका ही नहीं। अलग-अलग मौकों पर जिस किसी भी मुद्दे को लेकर यह आंदोलन उफान पर आया हो, 'आजादी' का नारा ही उसमें प्रमुखता से उठाया जाना इसका सबसे बड़ा सबूत है। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) दृढ़तापूर्वक घोषणा करती है कि अपनी राष्ट्रीयता की आजादी के लिए तथा आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए कश्मीरी जनता द्वारा जारी आंदोलन पूरी तरह न्यायपूर्ण है और कश्मीर पर न तो भारत को न ही पाकिस्तान को कोई हक है।

आजादी-पसंद कश्मीरी लोगों,

अपनी आजादी के लिए तथा आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए भारतीय विस्तारवादी शासक वर्गों के खिलाफ जारी आपके संघर्ष का हमारी पार्टी समर्थन करती है और तहेदिल से भाईचारा प्रकट करती है। गोलीबारियों, लाठीचार्ज, कर्फ्यू, लगातार जारी तलाशी मुहिमों और अंतहीन अपमानों का मुकाबला करते हुए दृढ़ता के साथ जारी आपके संघर्ष का हमारी पार्टी भारत की समूची क्रांतिकारी, जनवादी व संघर्षरत जनता की ओर से क्रांतिकारी अभिनंदन करती है। अंधाधुंध गोलीबारियां करते हुए दर्जनों की संख्या में युवक-युवतियों का कत्लेआम करने के बावजूद भी शहीदों के शवों को कंधों पर उठाकर जनाजों में हजारों की संख्या में भाग लेते हुए 'आजादी' का नारा बुलंद करने का आपका जज़्बा और कुर्बानी का जोश इतिहास में हमेशा के लिए दर्ज रहेंगे। भारतीय विस्तारवादियों के भाड़े के सशस्त्र बलों की गोलीबारियों में अपनी जानें गंवाने वाले शहीदों के परिजनों, दोस्तों और समूचे कश्मीरी कौम के प्रति हमारी पार्टी गहरी संवेदना प्रकट करती है। आज जो भारतीय शासक वर्ग आपके संघर्ष पर विघटनकारी और देशद्रोहपूर्ण आंदोलन का ठप्पा लगाकर आपको अलग-थलग करने के नापाक मंसूबे से मनमानी हिंसा का प्रयोग कर रहे हैं, वे ही आज भारत की समूची शोषित जनता, भारतीय उपमहाद्वीप के उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं और व्यापक जन समुदायों के घोर दुश्मन हैं। इसलिए, आइए, अपने साझे दुश्मनों के खिलाफ हम सब एकजुट होकर लड़ें। इस लड़ाई को और तेज करें।

भारत के इंसाफ-पसंद लोगों,

कश्मीरी जनता के जायज संघर्ष के खिलाफ भारतीय लूटेरे शासक वर्ग, खासकर ब्राह्मणवादी हिन्दु फासीवदी आतंकी गिरोह सुनियोजित तरीके से जो भड़काऊ दुष्प्रचार कर रहे हैं, उससे प्रभावित न हों। हमारी पार्टी आप सभी से अपील करती है कि आप सच्चाई को समझते हुए न्याय के पक्ष में मजबूती से खड़े हों।

इस मौके पर हमारी पार्टी की ठोस मांगें इस प्रकार हैं -

1) कश्मीर में भारत के सरकारी सशस्त्र बलों द्वारा जारी हत्याओं को फौरन रोको।

2) सैन्य बलों को जनता को मनमाने ढंग से मार डालने का अधिकार देने वाले फासीवादी कानून - 'सशस्त्र बलों का विशेष अधिकार कानून' (एएफएसपीए) को फौरन रद्द करो।

3) कश्मीर से अर्द्धसैनिक व सैनिक बलों को फौरन वापस लो।

4) कश्मीर में रायशुमारी (जनमत संग्रह) करवाकर कश्मीरी जनता को अपने भविष्य का फैसला खुद ही करने का अधिकार दो।

5) तमाम राजनीतिक बंदियों को फौरन रिहा करो।

''गम्भीरता से पढ़ो और अध्ययन करो तथा मार्क्सवाद पर अच्छी पकड़ कायम करो।''

-कामरेड माओ

15 अगस्त, 2016 को जारी बीजे सैक की प्रेस विज्ञप्ति

दमन के आतंक में मैदान छोड़कर भाग खड़े होने वाले गद्दार विकास को बेनकाब करें!
पैसे के जरिए गुलाम बनाकर क्रांतिकारियों को गद्दार बनाने की साजिश का पर्दाफाश करें!

जैसा कि ज्ञात है, पिछले 15 जुलाई को हमारी पार्टी का सैक सदस्य विकास उर्फ विनय आखिरकार दुश्मन के शरण में चले जाने की खबर आयी। हालांकि अखबारों ने पहले से ही विकास के आत्मसमर्पण करने के बारे में खबरें प्रकाशित करनी शुरु कर दी थी। अखबारों ने ही इस बावत भी खबरें प्रकाशित की कि आत्मसमर्पण से कई दिनों पहले से ही वह पुलिस के साथ में था और उसकी पुख्ता सूचना पर ही केन्द्रीय बलों ने बूढ़ा पहाड़ के 'ऑपरेशन प्रचंड' को अंजाम दिया। अपने घरेलू मामलों को सुलझाने की बात कहकर वह जून के अंतिम सप्ताह में ही पार्टी के साथियों से अलग हुआ था। इस तरह जनता के लिए काम करने वाला एक आदमी अब शासक वर्गों के द्वारा जनता पर की जाने वाली साजिशों का एक हिस्सा बन गया।

विनय पूर्व के सीपीआई (एमएल) पार्टी यूनिटी के संपर्क में 95-96 में आया था। कुछ ही दिनों के बाद गुमला में पुलिस के साथ मुठभेड़ में भागते हुए गिरफ्तार किया गया था। जेल से वापस आने के कुछ ही दिन बाद उत्तरी छत्तीसगढ़ में काम करते हुए पुनः गिरफ्तार हुआ। इसके बाद 2010 में पुनः जेल से वापस आने के बाद कोयल-शंख जोन के इलाके में काम कर रहा था। 2012 में वह स्पेशल एरिया कमिटी का एक हिस्सा बना। विकास के राजनीतिक जीवन का अधिकतर समय जेल में ही गुजरा। शुरु में वह मूल रुप से जन संघर्षों का ही हिस्सा रहा था। अधिकतर समय जेल में रहने की वजह से वह 2009 में शुरु किए गए युद्ध अभियान 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' को भी ठीक से नहीं समझता था। इसलिए इस दमन अभियान का सामना करने के लिए वह तैयार नहीं था और इस दमन के आतंक से आतंकित हो गया था। 2015 में कई बार सरकारी बलों के हमलों के बाद मुकाबला करने और साथियों को प्रतिरोध करने के लिए प्रोत्साहित करने के बजाय वह साथियों को भी छोड़कर अकेले बदहवास भाग खड़ा हुआ था। इसी बीच जेजेएमपी और केन्द्रीय बलों के उसके उपर हमले ने उसके डर को और बढ़ा दिया था। इस तरह सरकारी बलों द्वारा उसके उपर बनाये जा रहे मनोवैज्ञानिक दबाव का सामना करने के बजाय वह उसके चाल में आ गया और इसी आतंक में अंततः जनता के संघर्षों को कुचलकर जनता के जल-जंगल-जमीन को बेरोकटोक मुनाफाखोरों के हाथों में बेच देने की साजिशों में शामिल होने के लिए दमनकारी बलों का जरखरीद गुलाम बन गया। वह यह भी भूल गया कि जमीर बेचने की जो कीमत उसे रघुवर सरकार दे रही है, असल में उस कीमत को पाने लायक भी उसी जनता ने उसे बनाया है, जिसको उजाड़ने की साजिश में वह शामिल हो रहा है।

रघुवर सरकार ने क्रांतिकारियों के जमीर को खरीदकर उन्हें गुलाम बनाने के लिए 'ऑपरेशन नई दिशा' के नाम से एक अभियान चलाया है। इसका मुख्य मकसद है माओवादी आंदोलन के नेताओं और कार्यकर्ताओं को जरखरीद गुलाम बनाना, उन्हीं के जरिए नेतृत्व और पार्टी पर हमले कराना और उन्हें अपनी दलाली के लिए तैयार करना। दुनिया में अब तक की क्रांतियों के दौरान शासक वर्ग द्वारा जनता के आंदोलन को तोड़ने के लिए यह एक मजबूत हथियार रहा है। इसके जरिए शासक वर्ग क्रांति में लगे लोगों को यह समझाने की कोशिश करता है कि अपने लिए तुम सुविधायें ले लो और जनता को उसकी हालत पर छोड़ दो। इसका मतलब यह है कि वह सवाल उठाने वाले लोगों को खरीदकर जनता से अलग करता है ताकि जनता के उपर शोषण बरकरार रखा जा सके। रघुवर दास की यह नीति भी असल में जनता के शोषण-उत्पीड़न के खिलाफ सवाल उठाने से रोकने के लिए एक गुलाम बनाने का ही पैकेज है। कम्युनिस्ट क्रांतिकारी हमेशा अपना सर्वस्व न्योछावर कर जनता के बेहतर भविष्य के लिए अंतिम दम तक हमेशा निःस्वार्थ भाव से काम करते हैं। इन मूल्यों में गिरावट आने के साथ ही उसके लिए जनता के बजाय अपना परिवार और अपना भविष्य प्रधान हो जाता है। देश का शासक वर्ग हमेशा ही आम जनता के बेहतर भविष्य के बजाय अपने निजी हितों को प्रोत्साहित करता है। आत्मसमर्पण नीति के नाम पर वह यही कर रहा है। वह यह बताने की कोशिश कर रहा है कि पीएलजीए में शामिल साथियों का परिवार बहुत बुरी हालत में है। इसलिए छापामार सेना में शामिल साथियों को संघर्ष छोड़कर अपने परिवार के हित पर ध्यान देना चाहिए। दरअसल यह प्रचार शासक वर्गों के लिए अपने विशेषाधिकार को बचाए रखने और आम जनता के शोषण-दमन को बरकरार रखने की साजिशों का ही एक हिस्सा है। बुनियादी तौर पर शोषण और दमन का खात्मा आम जनता की मुक्ति में ही निहित है न कि येन केन प्रकारेण खुद अपनी बेहतरी को हासिल करने में।

कुख्यात ब्राह्मणवादी और लंपट फासीवादी डीजीपी डी. के. पांडेय से गले मिलकर विनय ने न केवल क्रांतिकारी

उसूलों का ही सौदा किया है बल्कि आदिवासियों के उपर इन ब्राह्मणवादी फासीवादी गिरोहों द्वारा जारी हमलों को भी उचित ठहराने की कोशिश की है। उसने खुद को फासीवादी सरकार के हाथों बेचकर जल-जंगल-जमीन को बचाने की लड़ाई को भी बेच दिया है। आज जब सीएनटी और स्थानीयता कानून में बदलाव के खिलाफ आवाज उठाने का वक्त था तब उसने खुद को लूटेरों के इन दलालों के हाथों बेच दिया और इस तरह खुद को एक जन विरोधी-आदिवासी विरोधी एजेंट में बदल लिया। रघुवर सरकार के गोद में जाने के बाद विकास हमारी पार्टी पर यह आरोप लगा रहा है कि पार्टी में अब राजनीति के बजाय पैसा वसूलने वाले लोग हावी हैं। हरेक गद्दार शासक वर्गों के गोद में जाने के बाद सरकारी बलों की भाषा में ही बात करता है। विकास के इस बात में कुछ भी नया नहीं है। आज भाजपा और संघी गिरोह संयुक्त रुप से अपने फासीवादी एजेंडे को लागू करने के लिए हर कीमत पर माओवादी आंदोलन को खत्म करना चाहता है। इसके लिए वह हथियार से लेकर भारी पैमाने पर पैसा भी खर्च कर रहा है।

विकास के इन फासीवादियों के गोद में चले जाने से माओवादी आंदोलन को रत्ती भर भी नुकसान नहीं हुआ है। इसका प्रमाण बूढ़ा पहाड़ पर सरकारी बलों का अभियान ही है। तमाम सूचनाओं और कई बटालियन बलों की ताकत के बावजूद विकास की निशानदेही पर रघुवर-मोदी-संघी गिरोह पीएलजीए का कुछ भी नहीं बिगाड़ पायी बल्कि एक बहुत छोटी टुकड़ी ने इनको पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया। रघुवर के सिपहसलारों ने यह प्रचारित करने की कोशिश की कि विकास हमारी पार्टी का आदिवासी चेहरा है। यह कहकर असल में रघुवर सरकार आदिवासियों का मजाक उड़ा रही है। हमारी पार्टी का आदिवासी चेहरा असल में वह व्यापक जनता है जिसके जल-जंगल-जमीन को निगल जाने पर रघुवर और डीके पांडेय का ब्राह्मणवादी-फासीवादी गिरोह अमादा है और जिसकी खिलाफत की वजह से हमारी पार्टी के उपर भीषण हमला चलाया जा रहा है। विकास की गद्दारी हमारी पार्टी के संघर्ष के संकल्प को कमजोर करने के बजाय और मजबूत ही करेगी। हमारी पार्टी का आदिवासी चेहरा वे सैकड़ों नवयुवक-नवयुवती हैं जो अपनी मातृभूमि और जल-जंगल-जमीन को बचाने की लड़ाई में रोज जीवन और मौत के संघर्षों में शामिल होते हुए शासक वर्ग के हरेक चाल को विफल कर रहे हैं। हम व्यापक आम जनता से अपील करते हैं कि गद्दार विकास के सरकार के चाल में फंस जाने और मौत के आतंक में दुश्मन से गले मिल जाने का पर्दाफाश करें! इसके साथ ही जल-जंगल-जमीन को बचाने के लिए जारी आंदोलन को कमजोर करने के लिए क्रांतिकारियों को जरखरीद गुलाम में बदल देने के लिए लायी गयी 'ऑपरेशन नयी दिशा' की खिलाफत करें!

---

29 अगस्त, 2016 को जारी बीजे सैक की प्रेस विज्ञप्ति

झारखंडी अस्मिता पर हमले और जल-जंगल-जमीन को कॉरपोरेट लूटेरों और मुनाफाखोरों के हाथों बेचने के खिलाफ 1-7 सितंबर को प्रतिरोध सप्ताह मनायें!
सीएनटी-एसपीटी एक्ट और स्थानीय नीति में बदलाव के खिलाफ
10 सितंबर को झारखंड बंद सफल करें!!

झारखंड में भाजपा सरकार ने इस कार्यकाल के दो वर्षों में ही अपना असली रंग दिखाना शुरु कर दिया है। विकास के नाम पर एक तरफ केन्द्र में मोदी-अमित शाह की जोड़ी देश के हर क्षेत्रों को जहां बाजार के हाथों में सौंप देने पर आमादा है तो दूसरी तरफ रघुवर सरकार ने पूरे झारखंड को आदिवासियों से छीनकर बड़े कॉरपोरेट मुनाफाखोरों के हवाले करने के लिए दिन-रात एक कर दिया है। पूंजी निवेश के नाम पर रघुवर दास की सरकार पूरे देश में घूमकर यह बता रही है कि आइये! हमारे यहां आदिवासियों के जल-जंगल-जमीन पर बेरोक-टोक अपना धंधा शुरु कीजिए। अब आदिवासियों की जमीन पर आपके कब्जे से आपको रोकने वाला कोई माओवादी यहां नहीं बचा है। वह यह आश्वस्त कर रहा है कि अगर कोई रोकेगा तब उसके लिए रघुवर के पास हजारों केन्द्रीय बल और उनके मार्गदर्शन के लिए कुख्यात ब्राह्मणवादी, लंपट और आदिवासी विरोधी डीजीपी डीके पांडेय उन्हें सबक सिखाने के लिए मौजूद है। और अगर इन सबसे भी बात नहीं बनेगी तब इनके पास टीपीसी, जेजेएमपी और पीएलएफआई है ही। इन सबके नाकाम होने पर कुख्यात खनन कंपनियों द्वारा दुनिया के अन्य देशों में आजमाया गया उपाय भी अंतिम विकल्प के रुप में मौजूद है। यह सबकुछ रघुवर सरकार झारखंड के विकास के नाम पर कर रही है। रघुवर सरकार ने यह बताने की कोशिश

की है कि झारखंड और आदिवासियों के विकास के मार्ग में सीएनटी-एसपीटी एक्ट एक बाधा के रुप में है। इसलिए इस कानून का बदलना जरुरी है। झारखंड सरकार इस मामले में इतनी बेसब्र थी कि इसे बिना व्यापक रुप से चर्चा किए ही राष्ट्रपति के पास अनुमोदन के लिए भेज दिया।

असल में सीएनटी-एसपीटी लंबे समय से भाजपा-संघ परिवार की आंखों का कांटा बनी हुई थी। ये लोग लंबे समय से मौके की तलाश में थे। केन्द्र और राज्य दोनों जगहों पर सरकार बनाने के बाद इस ब्राह्मणवादी-फासीवादी गिरोह ने अपने तमाम फासीवादी एजेंडों को लागू करना शुरु कर दिया। इसमें पूरे देश को बाजार के हवाले करने से लेकर दलित-आदिवासी और अल्पसंख्यकों पर हमले शामिल हैं। झारखंड में सीएनटी-एसपीटी और स्थानीय नीति के कानून में बदलाव भी ब्राह्मणवादी-फासीवादी भाजपा और संघ परिवार के व्यापक आदिवासी विरोधी एजेंडे का ही एक हिस्सा है। यह वास्तव में केन्द्र की ब्राह्मणवादी-फासीवादी भाजपा सरकार के भूमि अधिग्रहण कानून का ही विस्तार है जिसमें या तो पैसे पर नहीं तो फिर केन्द्रीय बलों के द्वारा बंदूक की नोंक पर विकास के नाम पर जमीन ले ली जाएगी। सीएनटी-एसपीटी कानून में जो संशोधन किए गए हैं उससे इन सुरक्षात्मक कानूनों सीएनटी और एसपीटी का कोई मतलब ही नहीं रह जाएगा। इन संशोधनों के बाद असल में ये कानून आदिवासियों की जमीन को बचाने के बजाय बाजार की ताकतों, कॉरपोरेट लूटेरे और खनन कंपनियों के द्वारा जमीन हड़पने का एक औजार बन जाएगा। हम जानते हैं कि दुनिया में मुनाफा कमाने वाले क्षेत्रों में लगातार कमी आने के बाद से एशिया और अफ्रीका के देशों में बड़े पैमाने पर जमीन में पैसा निवेश हुआ है। जमीन ही एकमात्र ऐसा क्षेत्र है जिसमें कभी घाटा नहीं होता। इन दोनों महादेशों में कॉरपोरेट मुनाफाखोरों ने बड़े पैमाने पर जमीन में निवेश किया है। इसके अलावा जमीन के सौदागर रघुवर सरकार से पूछना चाहिए कि यह निवेश किन क्षेत्रों में आ रहा है। हम सभी इस सच्चाई से अवगत हैं कि यह सारा निवेश हमारे जमीन के नीचे दबे कोयले-लोहे-अल्यूमीनियम को ही निकालने में आ रहा है। ऐसे में रघुबर सरकार का विकास का नाटक महज एक छलावा है जो आदिवासियों की जमीन को कॉरपोरेट मुनाफाखोरों के हाथों में सौंपने के लिए रचा जा रहा है।

सीएनटी-एसपीटी और स्थानीय नीति के कानून में भाजपा सरकार द्वारा बदलाव की यह कोशिश वास्तव में झारखंड राज्य के गठन की बुनियादी समझ पर ही हमला है। यह बदलाव वास्तव में फासीवादियों और लूटेरी खनन कंपनियों के गठजोड़ में आदिवासी अस्मिता पर हमला है और उनके घर में उनको ही नौकर बना देने की एक साजिश है। विधानसभा में बैठी कुछ आदिवासी नामधारी पार्टियां इसमें कुछ संशोधन चाहती हैं। ये पार्टियां वास्तव में कांग्रेस या फिर भाजपा का ही एक विस्तार बन गयी हैं जो आदिवासियों की रहनुमाई के नाम पर वास्तव में उनको धोखा दे रही हैं। बुनियादी सवाल भाजपा के बदलाव को संशोधन के साथ स्वीकार करने का नहीं बल्कि बुनियादी सवाल सीएनटी-एसपीटी में बदलाव की किसी भी कोशिश के विरोध करने और जल-जंगल-जमीन पर आदिवासियों के बुनियादी हक को बरकरार रखने का है।

हमारी पार्टी रघुवर सरकार को यह चेतावनी देना चाहती है कि दमन के जरिए हमारी पार्टी को कुचलकर आदिवासियों के जल-जंगल-जमीन को बेचने की उसकी मंशा कभी पूरी नहीं होगी। हम जानते हैं कि रघुबर-डीके पांडेय गिरोह के आका इन खनन कंपनियों ने लैटिन अमरीका और दक्षिण अफ्रीकी देशों में क्या किया है। हम यह भी जानते हैं कि रघुवर के दोस्त रमन सिंह ने बस्तर में आदिवासियों की जमीन हड़पने के लिए खनन कंपनियों के साथ मिलकर किस तरह सलवा जुडुम खड़ा किया। हमें यह भी मालूम है कि रघुवर के भाइयों बीडी राम-अर्जुन मुंडा ने किस तरह झारखंड में हमारी पार्टी और जनता के संघर्ष को तोड़ने और कॉरपोरेट कंपनियों तथा सरकारी लूट को बरकरार रखने के लिए टीपीसी-जेजेएमपी-पीएलएफआई को खड़ा किया। लेकिन रघुवर गिरोह यह नहीं समझ पाया कि किस तरह बिरसा मुंडा, तिलका मांझी, सिद्धु-कान्हु से लेकर नीलांबर-पीतांबर ने जल-जंगल-जमीन को बचाने की लड़ाई अंतिम दम तक लड़ी। झारखंड के आदिवासियों ने हरेक बाहरी हमलावरों को धूल चटाया है। रघुवर-मोदी गिरोह यह नहीं समझ पाया कि दमन नहीं बल्कि प्रतिरोध ही शास्वत है।

हमारी पार्टी को नष्ट करने का जो आश्वासन रघुवर सरकार खनन कंपनियों और कॉरपोरेट मुनाफाखोरों को दे रही है वह वास्तव में एक सपना ही रहने वाला है। रघुवर सरकार यह भूल रही है कि हमारी पार्टी की जड़ें आदिवासियों के इस जल-जंगल-जमीन पर मालिकाने हक की लड़ाई में ही है और हमारी पार्टी इसपर लूटेरी कंपनियों को कब्जा दिलाने की किसी भी कोशिश के खिलाफ अंत तक लड़ेगी। हमारी पार्टी

व्यापक आदिवासी जनता को भी यह आश्वस्त करती है कि हमारी पार्टी उनके जल-जंगल-जमीन के जन्मसिद्ध अधिकार पर किसी भी हमले का अंतिम दम तक प्रतिकार करेगी। हमारी पार्टी इन संशोधनों के खिलाफ 1-7 सितंबर के बीच प्रतिरोध सप्ताह मनाने की अपील करती है। इस दौरान गांव-गांव में जागरुकता और प्रचार अभियान चलायें! इसके बाद 10 सितंबर को इन संशोधनों के खिलाफ झारखंड बंद को व्यापक रुप से सफल बनायें। हमारी पार्टी आम जनता, बुद्धिजीवियों, जनवादपसंद लोगों और तमाम आदिवासी संगठनों से अपील करती है कि सीएनटी-एसपीटी और स्थानीय नीति में बदलाव की किसी भी कोशिश का व्यापक प्रतिकार करें और ब्राह्मणवादी हिन्दु फासीवादी भाजपा सरकार के इस एजेंडे के खिलाफ व्यापक एकजुटता कायम कर इसके खिलाफ संघर्ष तेज करें! अगर जनता के तमाम प्रतिरोधों के बावजूद इन संशोधनों को लागू किया जाता है तब हमारी पार्टी तमाम आदिवासी संगठनों, जनता, जनवाद पसंद संगठनों और बुद्धिजीवियों से झारखंड में आर्थिक नाकेबंदी की तैयारी करने का आह्वान करती है।

---

10 फरवरी, 2017 को जारी जेआरसी की प्रेस विज्ञप्ति

डिम्बा पाहन, राम मोहन मुण्डा, ममता आदि के आत्मसमर्पण के खिलाफ में

भाकपा (माओवादी) के झारखण्ड रीजनल कमेटी का सदस्य डिम्बा पाहन उर्फ धीरज पुलिस के पास आत्मसमर्पण कर पार्टी विरोधी व क्रांति विरोधी बयान की झारखण्ड रीजनल कमेटी तीव्र निन्दा व भर्त्सना करते हुए उसके इस कदम को जनविरोधी, क्रांतिविरोधी व प्रतिक्रांतिकारी कदम करार देती है।

झारखण्ड रीजनल कमेटी का सदस्य डिम्बा पाहन उर्फ धीरज दिनांक 7/01/2017 को झारखण्ड के डीजीपी डीके पाण्डेय के समक्ष आत्मसमर्पण करते हुए जो बयान दिया है वह बयान ऐसे तो पुलिस द्वारा बनाया गया बयान ही है, उस बयान को पुलिस डिम्बा के मुंह से कहवाया है। बयान चाहे कोई भी बनाया हो, जब उस बयान को डिम्बा खुद दिया है तो उसी का ही बयान समझा जाएगा। उसने जो पार्टी के खिलाफ आरोप लगाया है वह सरासर झूठ और फरेब के सिवा और कुछ नहीं है।

उसने बयान में कहा है कि ''पार्टी से जनता की दूरी बढ़ रही है, पार्टी गलत प्वाइंट (दिशा) पर जा रही है, मैं समझ रहा हूं, लेकिन पार्टी सच्चाई वालों को ही दबाता है. ....।''

सरासर उसका यह बयान झूठा है, क्योंकि अगर पार्टी से जनता की दूरी बढ़ती तो पार्टी का अस्तित्व ही खत्म हो जाता। आखिर वह इतना दिनों तक था तो किसके भरोसे और किसके सहारे था, पार्टी से जनता की दूरी नहीं बढ़ रही है, बल्कि पार्टी के अन्दर व्यक्तिगत स्वार्थ, भ्रष्टाचार और गैर-सर्वहारा रूझान से ग्रस्त डिम्बा पाहन जैसा अध:पतित चन्द नेता व कार्यकर्त्ता जनता से खुद अपनी दूरी बढ़ाती है और पार्टी की दूरी भी बढ़ती है या बढ़ा रही है। पार्टी ऐसे व्यक्तिगत स्वार्थ, भ्रष्टाचार, पतनशील मूल्य आदि गैर-सर्वहारा रूझान के खिलाफ शुद्धिकरण आन्दोलन तथा पार्टी को बोल्शेवीकरण करने के लिए बोल्शेवीकरण का अभियान वर्ष 2014-15 से चला रही है। जिसके कारण पार्टी के अन्दर भ्रष्टाचारियों, स्वार्थी तत्वों, नैतिक रूप से पतित नेताओं और कार्यकर्त्ताओं के खिलाफ सवाल उठाये जा रहे हैं, तो कुछ लोग पार्टी के अन्दर रह कर अपनी गलती स्वीकार कर सुधारने का प्रयास कर रहे हैं और कुन्दन पाहन, डिम्बा पाहन, राम मोहन मुण्डा उर्फ प्रगति जो पार्टी के अन्दर कोवर्ट के रूप में रहकर पार्टी को भारी नुकसान पहुंचाया, दिनेश यादव (सैक सदस्य), बड़ा विकास (सैक सदस्य), संतोष भेक्ता, दीपक शाहू जैसे भ्रष्ट और अध :पतित लोग पार्टी से भाग कर पार्टी और जनता से बचने के लिए पुलिस का संरक्षण लेने के लिए आत्मसमर्पण कर रहे हैं। डिम्बा पाहन भी वही किया है। ये भ्रष्ट और अध:पतित और गद्दार लोग अपनी गलती छुपाने के लिए पुलिस के इशारे पर उल्टे पार्टी पर आरोप लगा कर पार्टी विरोधी,

जन-विरोधी, क्रांति विरोधी बयान दे रहे हैं।

ऐसे भ्रष्ट, अध:पतित, गद्दार लोग जो जनता के साथ, क्रांति के साथ और पार्टी के साथ गद्दारी करके या जनता के साथ विश्वासघात कर या धोखा देकर जनता को युद्ध के मैदान में उतार कर, खुद युद्ध के मैदान से भाग कर दुश्मन के खेमा में शामिल होकर, दुश्मन द्वारा रखे गये इनाम की राशि लेकर ऐश-मौज की जिन्दगी जीने की सोच से आत्मसमर्पण कर रहे हैं, अवश्य ही क्रांतिकारी जनता डिम्बा सहित तमाम आत्मसमर्पणकारियों को कभी माफ नहीं करेगी उसका हिसाब लेगी।

झारखंड रीजनल कमेटी राम मोहन मुण्डा उर्फ प्रगति, ममता और डिम्बा पाहन को जन-विरोधी, क्रांति विरोधी घोषित करती है और कृष मुण्डा, सोनिया और हाड़ी मुण्डा द्वारा आत्मसमर्पण को क्रांति विरोधी, पार्टी विारेधी कदम करार देते हुए उसकी तीव्र निन्दा व भर्त्सना करती है तथा उनलोगों की पार्टी सदस्यता रद्द करते हुए पार्टी से बहिष्कृत करने की घोषणा करती है।

14 फरवरी, 2017 को जारी जेआरसी की प्रेस विज्ञप्ति

रघुवर दास सरकार द्वारा आयोजित 'झारखंड मोमेंटम : ग्लोबल इनभेस्टर्स समिट' के खिलाफ में

विकास के नाम पर झारखण्ड की खनिज संपदा को लूटाने हेतु आयोजित 'झारखंड मोमेंटम : ग्लोबल इनभेस्टर्स समिट' की झारखण्ड रीजनल कमिटी तीव्र निन्दा व भर्त्सना करते हुए झारखण्ड के आदिवासी-मूलवासी सहित तमाम खटकमाऊ जनता और झारखण्ड प्रेमियों से इसका विरोध करने व इसे नाकाम करने का आह्वान करती है।

सबों को मालूम है कि भाजपा नेतृत्वाधीन झारखण्ड के रघुवर दास सरकार द्वारा 16-17 फरवरी को रांची में विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों का वैश्विक सम्मेलन 'झारखंड मोमेंटम: ग्लोबल इनभेस्टर्स समिट' का आयोजन किया गया है। झारखण्ड में विदेशी पूंजी निवेश हेतु आयोजित इस वैश्विक सम्मेलन में हजारों की संख्या में बहुराष्ट्रीय कंपनियां इसमें भाग ले रही हैं। झारखण्ड सरकार इन कंपनियों के साथ एक हजार से भी अधिक एमओयू करने वाली है।

ज्ञातव्य हो कि जब से झारखण्ड में भाजपा नेतृत्वाधीन जन विरोधी, पूंजीपति वर्ग व कॉरपोरेट घराने की हितैषी रघुवर दास की सरकार सत्ता में आई है तब से एक के बाद एक उसका जन विरोधी क्रिया-कलाप जारी है। उसने सबसे पहले झारखण्ड की स्थानीयता नीति तय की, जिसमें बाहरी लोगों को प्राथमिकता दी गई है और आदिवासी-मूलवासियों को हाशिए पर धकेल दी गई है। उसके बाद उसने झारखण्ड में जो देश की 36 प्रतिशत खनिज संपदा है उसे लूटने में पूंजीपति वर्ग को किसी प्रकार की बाधा न हो इसके लिए सीएनटी-एसपीटी एक्ट में बदलाव लाने के लिए सीएनटी-एसपीटी एक्ट संशोधन अध्यादेश विधानसभा में पारित किये बिना केवल कैबिनेट से मंजूरी करवाकर राष्ट्रपति के पास भेज दी। जिसका भाजपा छोड़कर, ऐसा कि पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुण्डा भी इसके विरोध में उतरे और भाजपा के झारखण्ड अध्यक्ष ताला मराण्डी तो अपने पद से इस्तीफा दे दिया। बाकी सभी विपक्षी पार्टियां, सरकार व गठबन्धन में शामिल आजसू और खासकर आदिवासी-मूलवासी जनता व्यापक रूप में पूरे आक्रोश के साथ विरोध में सड़कों पर उतरे जिसका सिलसिला अब भी जारी है।

आदिवासी-मूलवासियों द्वारा रघुवर सरकार की इस घृणित जन विरोधी नीतियों का विरोध थमते न थमते अब झारखण्ड की संपदा को लूटने के लिए उसने हजारों विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों को झारखण्ड में पूंजी निवेश हेतु न्यौता दी है और उनके सम्मान में वैश्विक सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

रघुवर सरकार द्वारा आयोजित विदेशी पूंजीपतियों का वैश्विक सम्मेलन झारखण्ड के विकास का परिचायक नहीं, विनाश का परिचायक है। विकास के नाम पर झारखण्ड की संपदा को लूटने की यह साजिश व धोखेबाजी नई नहीं है, बल्कि ब्रिटिश जमाने से चल रही है और झारखण्ड अलग राज्य बनने के बाद भी बदस्तूर जारी है। विकास के नाम पर ही बड़े-बड़े कल-कारखाने, खदाने खोले गये, बड़े-बड़े डैम व बांध बनाये गये। जिसका

परिणाम सामने है। यहां के आदिवासी-मूलवासियों का क्या हश्र हुआ सबको मालूम है। लाखों आदिवासी-मूलवासी जमीन से बेदखल होकर उजड़ गये। सरकारी आंकड़े के अनुसार झारखण्ड अलग राज्य बनने के पूर्व ही 60 लाख आदिवासी-मूलवासी विस्थापित हो चुके हैं और झारखण्ड बनने के बाद जो 107-8 एमओयू हुए हैं उसे लागू होने पर 10 लाख लोगों का विस्थापन होने का अनुमान है। फिलहाल रघुवर सरकार की विदेशी पूंजीपतियों के साथ एक हजार एमओयू करने की योजना है। अगर यह एमओयू लागू होता है तो यह अनुमान लगाना सहज है कि अगर 100 एमओयू से 10 लाख लोग विस्थापित होते हैं तो 1000 एमओयू होने से 1 करोड़ लोग विस्थापित होंगे। अबतक 60 लाख से अधिक विस्थापित हो चुके आदिवासी-मूलवासियों के लिए न तो पुनर्वास की व्यवस्था की गई और न ही उनको मुआवजा मिला, सीधे तौर पर वे उजड़ गये।

सबों को मालूम है कि अभी तक झारखण्ड में विस्थापितों के लिए पुनर्वास की सटीक नीति नहीं बन पायी। आखिर क्यों? वजह क्या है? इसका सही जवाब किसी के पास नहीं है। वास्तविकता यही है कि आदिवासी-मूलवासियों के प्रति सरकार अपनी जवाबदेही नहीं निभाती और आदिवासी-मूलवासियों के सीधा-सादा व भोला-भाला स्वभाव का गलत फायदा उठाती रही है। रघुवर सरकार की भी यही मंशा है। विदेशी पूंजीपतियों से होनेवाले एमओयू लागू होने पर आदिवासी-मूलवासियों का अस्तित्व ही खत्म हो जाएगा। इससे स्पष्ट है कि यह झारखण्ड से आदिवासी-मूलवासियों के अस्तित्व को मिटाने की साजिश के सिवा दूसरा कुछ भी नहीं है।

अत: भाकपा (माओवादी) की झारखण्ड रीजनल कमिटी झारखण्ड के आदिवासी-मूलवासियों सहित किसान-मजदूर, छात्र-नौजवान, महिलाएं, प्रगतिशील बुद्धिजीवी वर्ग- वकील, डॉक्टर, इंजीनियर, पत्रकार, कलाकार, छोटे दुकानदार सहित तमाम मेहनतकश अवाम से आह्वान करती है कि जन विरोधी व पूंजीपति, कॉरपोरेट घरानों के हितैषी प्रतिक्रियावादी रघुवर दास सरकार द्वारा विकास के नाम पर झारखण्ड की सारी संपदा को विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के हवाले कर पुन: झारखण्डी जनता को साम्राज्यवादी गुलामी के जंजीरों से जकड़ने के इस नापाक इरादे के खिलाफ एकजुट हो जाएं। अपनी अस्मिता व अस्तित्व की लड़ाई के लिए तैयार हो जाएं। अपना आर्थिक-राजनीतिक अधिकार तथा लूट-शोषण और जुल्म से सच्ची मुक्ति व सच्ची इज्जत-आजादी हासिल करने एवं सचमुच में झारखण्डी आदिवासी-मूलवासियों का शोषणमुक्त अपना राज्य कायम करने के लिए वीर सिद्धू-कान्हू और वीर बिरसा मुण्डा का आह्वान ''आबुआ: दिशोम रे आबुआ: राज'' को साकार करने हेतु पुन: हूल व उलगुलान करने के सिवा दूसरा कोई रास्ता नहीं है। यही समय की मांग और वक्त की पुकार है। भाकपा (माओवादी) हर जोर-जुल्म के खिलाफ आपके साथ है। आप अगर हमें साथ देते हैं तो रघुवर सरकार के इस प्रतिक्रियावादी व प्रतिक्रांतिकारी कदम व उसका बुरे मनसूबे को कभी सफल नहीं होने देंगे, उसे नाकाम कर देंगे। हम न केवल साम्राज्यवाद-सामंतवाद और दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों का दलाल व उसका जूठन चाटने वाले रघुवर दास जैसे नेता व मंत्रियों के नापाक व बुरे इरादे को नाकाम कर देंगे, बल्कि शोषक-शासक वर्ग की हितैषी इस प्रतिक्रियावादी सरकार के विकल्प में झारखण्डी जनता की जनवादी सरकार का निर्माण कर सकेंगे। तभी आदिवासी-मूलवासियों का सच्चा विकास अपने हाथ में होगा और अपने भाग्य का फैसला खुद करेंगे।

बीजे सैक द्वारा सितम्बर 2016 में जारी पर्चा

झारखंड के अंदरुनी इलाकों में सीमा पर इस्तेमाल होने वाले विध्वंसक हथियारों के इस्तेमाल की खिलाफत करें!

अभियान के नाम पर आम जनता को आतंकित और मार-पीट करने की नीति को बेनकाब करें!!

विगत 26 अगस्त से लेकर 4 सितंबर तक केन्द्रीय बलों नें जयगीर पहाड़ को केन्द्रित कर भारी अभियान चलाया। इस दौरान पहाड़ को घेरकर उसके चारों ओर कैंप स्थापित किए गए। इन कैंपों को केन्द्रित कर बड़े पैमाने पर सर्च अभियान चलाया गया। इस दौरान 2 सितंबर को पीएलजीए की एक टुकड़ी पर हमला भी किया गया। 4 सितंबर को जयगीर पहाड़ पर करीब 4-5 किलोमीटर तक मार करने वाले गोलों से भारी गोलाबारी के जरिए इस अभियान का समापन किया गया। इसके कुछ ही दिन पहले 15 जुलाई को गढ़वा के बूढ़ा पहाड़ पर अभियान के दौरान ऐसे ही सैकड़ों गोले इस्तेमाल

किए गए थे। बूढ़ा पहाड़ पर भारी संख्या में सरकारी बलों द्वारा चलाये जा रहे दमन अभियान से पीएलजीए के बलों को कोई नुकसान नहीं हुआ, 'तब खिसियानी बिल्ली खंभा नोंचे' की तर्ज पर सरकारी बलों ने बूढ़ा गांव की आम जनता पर भारी अत्याचार किया। इन सरकारी बलों ने अभियान के दौरान कई ग्रामीणों को न केवल अपने साथ रखा बल्कि अलग-अलग मौकों पर निर्दयता की सारी हदें पार करते हुए उन्हें आतंकित करने के लिए चाकू से काटा, लाठी से पिटाई की और कई बार पत्थर से कूचने का भी काम किया। इतना ही नहीं आम महिलाओं और बूढ़ों के साथ भी मारपीट की घृणित हरकत इन सरकारी बलों ने की। एक बीमार युवक की तो इतनी पिटाई की गयी कि उसे कई दिनों तक अस्पताल में रहना पड़ा। दरअसल यह करते हुए सरकारी बल यह भूल जाते हैं कि उनकी ये तमाम हरकतें जनता के बीच आतंक फैलाने के बजाए उनके खिलाफ नफरत को ही और ज्यादा बढ़ाते हैं।

असल में यह हमला हमारी पार्टी द्वारा पूर्व नियोजित कुछ सांगठनिक कार्यक्रम को बाधित करने के लक्ष्य से किया गया था लेकिन इस भारी अभियान के बावजूद हमारी पार्टी ने न केवल अपना कार्यक्रम संपन्न किया बल्कि केन्द्रीय बलों के अभियान को भी विफल किया। सच तो यह है कि सरकारी बलों के अभियान का वास्तविक निशाना सीएनटी-एसपीटी में संशोधन और स्थानीय कानून में बदलाव के खिलाफ हमारी पार्टी द्वारा जारी अभियान को रोकना था। जैसा कि ज्ञात है कि हमारी पार्टी ने सीएनटी-एसपीटी और स्थानीय कानून में बदलाव के खिलाफ 1-7 सितंबर तक प्रतिरोध सप्ताह मनाने का आह्वान किया था। इस दौरान गांव-गांव में बड़े पैमाने पर प्रतिरोध और प्रचार अभियान चलाने की घोषणा की थी। सरकारी बलों का मुख्य निशाना इस प्रतिरोध सप्ताह को रोकना था ताकि सीएनटी-एसपीटी और स्थानीय कानून में बदलाव के खिलाफ आंदोलन में आम जनता को गोलबंद करने से रोका जा सके। इसके अलावा बुनियादी सवाल यह है कि क्या झारखंड के अंदरुनी इलाकों में लगभग चार-पांच किलोमीटर तक मार कर इलाके का विध्वंस करने वाले गोलों का इस्तेमाल करना जायज है। अमूमन ऐसे गोले सीमा पर दूसरे देशों के साथ युद्ध में इस्तेमाल किए जाते हैं। तब क्या सरकार ने यह मान लिया है कि ये सारे इलाके अब देश से बाहर के इलाके हो गए हैं। खासकर लातेहार और गढ़वा में सीमा पर इस्तेमाल होने वाले ऐसे गोले बड़े पैमाने पर 2012 से ही इस्तेमाल किए जा रहे हैं। यह गोला रॉकेट लांचर से भी दूर तक मार कर एक बड़े इलाके को ध्वंस करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। 2012 से अब तक अकेले गढ़वा-लातेहार में ही ऐसे हजारों गोले इस्तेमाल किए जा चुके हैं। सरकार और सरकारी बलों को भी मालूम है कि इतने बड़े पैमाने पर इन गोलों के इस्तेमाल से हमारा कोई नुकसान नहीं हुआ है। इसके बावजूद वे लगातार इस युद्ध सामग्री का इस्तेमाल कर रहे हैं। सच तो यह है कि वे इसके जरिए आम जनता के अंदर आतंक पैदा करते हैं और जंगल में उन्हें जाने से रोकते हैं। हम सभी जानते हैं कि आम आदिवासी जनता की जिंदगी पूरी तरह से जंगल पर ही निर्भर है। वे अपनी जिंदगी की तमाम जरुरतों के लिए जंगल पर ही निर्भर हैं। ऐसे में 10-15 दिनों तक घेरेबंदी और गोलाबारी के जरिए उनको जंगल में जाने से रोककर उनकी जिंदगी को और मुश्किल बनाया जा रहा है। इस तरह उनकी जिंदगी को मुश्किल बनाकर उन्हें जंगल छोड़कर भागने के लिए मजबूर किया जा रहा है। उनके अंदर सरकारी बल लगातार आतंक पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं ताकि वे जल-जंगल-जमीन के सवाल से अलग हो जायें।

हथियार और तकनीक के मद में चूर यह सरकार और इसके बल अपने हथियारों के आतंक से आम जनता के न्याय और मुक्ति की आकांक्षा को कुचलना चाहते हैं। ये लोग आदिवासियों को उनके घर से बेदखल कर उनकी जमीन पर कॉरपोरेट लूटेरों को कब्जा दिलाना चाहते हैं। यहां बुनियादी सवाल यह है कि हजारों की संख्या में तमाम आधुनिक तकनीक से लैस, इजरायल और अमेरिका के सहयोग से प्रशिक्षित ये सरकारी बल अपनी ही देश की जनता पर सीमा पर इस्तेमाल किए जाने वाले विध्वंसक हथियारों का इस्तेमाल क्यों कर रहे हैं? छतीसगढ़ के बस्तर में तो पूरी तरह हवाई हमले की तैयारी हो रही है और इसका पूर्वाभ्यास भी किया जा चुका है। लातेहार में तो कदम-कदम पर सीआरपीएफ के कैंप स्थापित किए गए हैं। यह वास्तव में इन सरकारी बलों की कायरता को ही दर्शाता है कि जब आम जनता इनके हथियारों के आगे झुकने से इन्कार कर रही है, तब ये वास्तव में इन इलाकों में विध्वंस के जरिए आतंक कायम करना चाहते हैं। यह पूरी तरह खनन और कॉरपोरेट कंपनियों के हित में उन्हीं के इशारे पर चलाया जा रहा है।

उत्तराखंड के जंगलों में आग तो अखबारों की सुर्खियां बनती है और सरकार इसे ऐसे दिखाती है, मानों वह जंगलों को बचाने में कितना अधिक सचेत है। लेकिन झारखंड के जंगलों में बड़े पैमाने पर आग पर भी किसी का ध्यान नहीं जाता। यहां तो वास्तव में इन सरकारी बलों द्वारा ही जंगलों में आग लगाया जाता है ताकि इन्हें अपना हथियारबंद अभियान चलाने में कोई दिक्कत नहीं हो। इतना ही नहीं जब जंगलों के फायर गार्ड आग बुझाने जाते हैं तब ये सरकारी बल उन्हें मारपीट कर भगा देते हैं। इस तरह जंगलों को उजाड़ने से

शेष पृष्ठ संख्या 7 पर

पीएलजीए की महत्वपूर्ण कार्रवाइयों की रिपोर्ट

डी जोन की रिपोर्ट

एसपीओ सांड़ बोदरा का सफाया

पोड़ाहाट सबजोन अंतर्गत आराः सेरेङ एरिया के ग्राम- सोयमारी, प्रखण्ड- बंदगांव, थाना- टेबो, जिला- पश्चिमी सिंहभूम का रहने वाला सांड़ बोदरा, ग्रामीण जनता के रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2008 से चोरी-डकैती व जोंकोपाई-जारजाता के कई महिलाओं को बेईज्जत व बलात्कार कर रहा था। इसके आरोप में कई गांवों की जनता ने मिलकर इसको जान से मारने का निर्णय लिया, लेकिन इसने उनलोगों को पहले ही देख लिया और जंगल की ओर भाग गया। भाग जाने के कारण उस समय इसकी जान बच गयी लेकिन ग्रामीण जनता ने सांड़ बोदरा के घर की सारी संपत्ति जब्त कर लिया और घर को जला दिया। फिर से सांड़ बोदरा वर्ष 2014 में अपने घर सोयमारी आया और गांव वालों से बिना अनुमति लिए ही रहने लगा। सांड़ बोदरा के कुकर्म के बारे में पहले हमारे पार्टी को जानकारी नहीं थी, इसलिए उसे वर्ष 2014 में पार्टी में शामिल किया गया और 2014 के ही जोनल बैठक में आराः सेरेङ एरिया कमेटी में चयन किया गया। लेकिन कुछ ही दिनों बाद इसने पार्टी से दूरी बना ली और टेबो-लोड़हाई पुलिस का मुखबिर व एसपीओ के रूप में काम करने लगा। साथ ही पार्टी से जुड़े जनता व केकेसी सदस्यों को पार्टी छोड़ने, नहीं तो घर-द्वार की कुर्की करवाने की धमकी भी देने लगा।

इन सारी बातों से जनता बहुत ही आक्रोशित थी। अंततः इसे जनता और पार्टी ने पकड़कर जन अदालत लगायी तथा 2 जुलाई, 2016 को इसका सफाया किया गया।

एसपीओ दोन सिंह जमुदा व लोबो लोहार का सफाया

पोड़ाहाट सबजोन अंतर्गत ग्राम- लोंजो-कुदाबुरु, प्रखंड- सोनुवां, जिला- पश्चिमी सिंहभूम के रहनेवाले दोन सिंह जमुदा एवं लोबो लोहार वर्ष 2014 से ही सोनुवां पुलिस का मुखबिर व एसपीओ के रूप में काम करता था। हमारी पार्टी की ओर से दोनों को 22 मार्च, 2016 को समझाया गया, लेकिन दोनों ने पार्टी के बात को दरकिनार करते हुए 22 मार्च को ही सोनुवां पुलिस को अपने साथ कुदाबुरु लाया। पुलिस 17 मोटरसाइकिल से लगभग 30-32 की संख्या में आई और ग्रामीण जनता को पार्टी के साथियों के बारे में बताने व जेल में बंद करने की धमकी देने लगा। साथ ही पार्टी के एक साथी के घर में तोड़-फोड़ भी किया।

अंततः ग्रामीणों के राय के मुताबिक दोन सिंह जमुदा व लोबो लोहार का सफाया 28 अगस्त, 2016 को किया गया।

एसपीओ बिरसा सिंह मुंडा को सजा

पोड़ाहाट सबजोन अंतर्गत आराः सेरेङ एरिया के ग्राम- मदुड़ा, प्रखंड- बंदगांव, जिला- पश्चिमी सिंहभूम का रहने वाला बिरसा सिंह मुंडा वर्ष 2011 से ही रानियां व बंदगांव पुलिस के मुखबिर व एसपीओ का काम करता था। वर्ष 2011 में ही इसने पार्टी द्वारा डंप किये गये युद्ध सामग्री को रानियां पुलिस द्वारा जब्त करवाया था व एक टेक्निकल कामरेड को भी गिरफ्तार करवाया था। इसने 2014 से पीएलएफआई का भी सक्रिय होकर काम करना शुरु किया और कई गांवों के पार्टी समर्थक जनता को पीएलएफआई के द्वारा मरवाया-पीटवाया भी, यहां तक कि ग्राम जरकण्डी के कृतो घेरो व अन्य दो महिला एवं एक पुरुष कामरेड को तो जान से मरवा दिया।

अंततः हमारे पीएलजीए ने 1 अप्रैल, 2016 को पीडिंग बाजार से गिरफ्तार करके पीडिंग बड़ा केसल व कुमसुम गांव के जनता को बिरसा सिंह मुंडा के गलत करतूत को बताते हुए राजनीतिक भंडाफोड़ किया गया और जैसी गलती वैसी सजा देकर जनता के जिम्मे छोड़ दिया गया।

सशस्त्र खुफिया गुण्डा गिरोह पीएलएफआई का भंडाफोड़

पोड़ाहाट सबजोन अंतर्गत ग्राम- आंड़ीपीड़ी, प्रखंड- बंदगांव, जिला- पश्चिमी सिंहभूम में 28 मार्च, 2016 को पीएलएफआई के सशस्त्र खुफिया गुण्डा गिरोह के अड्डेबाजी करने की रिपोर्ट जनता द्वारा मिलने पर तुरंत ही पीएलजीए की तरफ से योजना बनाकर हमला करने का निर्णय लिया गया। एक दिशा में घात लगाकर एम्बुश में बैठा गया और दूसरे दिशा से ऑफेन्स ग्रुप द्वारा हमला करने का था, लेकिन रिपोर्ट के अनुसार वे लोग गांव में न होकर पहाड़ की ओर था। इस कारण से पीएलजीए द्वारा जो योजना बनायी गयी थी, उस योजनाबद्ध तरीके से एवं ऑफेन्स ग्रुप में तालमेल के अभाव के कारण पूरी योजना सफल नहीं हो पायी। पीएलएफआई के उपर पीएलजीए द्वारा दूर से ही फायरिंग करते हुए उसे भगाया गया और 3-4 बैग व 2-3 चटाई जब्त किया गया। उसी दिन मुठभेड़ स्थान से पीएलएफआई का सक्रिय सदस्य मड़ू और उसका बेटा जुरा को पकड़कर जनता के बीच ले जाकर

उनदोनों के करतूत को दर्शाते हुए राजनीतिक भंडाफोड़ किया गया व दोनों को चेतावनी देकर छोड़ दिया गया।

पुलिस व उनके सशस्त्र खुफिया गुण्डा गिरोह पीएलएफआई को मुंहतोड़ जवाब

पोड़ाहाट सबजोन अंतर्गत ग्राम- चकोम टोनङ, प्रखंड- बंदगांव, जिला- पश्चिमी सिंहभूम में 30 मार्च, 2016 को हेसाडीह पुलिस व उनके सशस्त्र खुफिया गुण्डा गिरोह पीएलएफआई के साथ दिन के 11 बजे के लगभग पीएलजीए के साथ करीब 20-25 मिनट तक मुठभेड़ हुई। इस मुठभेड़ में पुलिस व उनके सशस्त्र खुफिया गुण्डा गिरोह पीएलएफआई के साथ डटकर मुकाबला करते हुए पीएलजीए ने दुश्मन को पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया और हमारे पीएलजीए के साथी सुरक्षित वहां से निकल गए। इस मुठभेड़ में दो पुलिस बुरी तरह से घायल हुए।

एसपीओ व अपराधियों से बॉण्ड भरवाया

(1) पोड़ाहाट सबजोन अंतर्गत ग्राम- कांसरा, प्रखंड- बंदगांव, थाना- कड़ाइकेला, जिला- पश्चिमी सिंहभूम का रहनेवाला ठाकुर गागराई जनता के रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2014 से ही मनमोहन गागराई (ग्राम करजुली) के नेतृत्व में कड़ाइकेला पुलिस का मुखबिर व एसपीओ का काम करता था। इस आरोप में ही जनता के राय के अनुसार ठाकुर गागराई को पकड़कर 14 नवंबर, 2016 को जन अदालत में पेश किया गया। जन अदालत में इसकी गलती को जनता के बीच दर्शाते हुए राजनीतिक भंडाफोड़ किया गया और इससे 'आइन्दा ऐसी गलती नहीं करूंगा और अगर आज के बाद एसपीओ का काम करूंगा तो मौत की सजा दी जाए' बॉण्ड लिखवाकर छोड़ दिया गया।

(2) पोड़ाहाट सबजोन अंतर्गत ग्राम- सिरियाव, प्रखंड- सोनुवां, जिला- पश्चिमी सिंहभूम के रहनेवाले चमटा गागराई, फाटुवा, मंगरा मुण्डा, तुयु मुण्डा व सोमा मुंडू ने 15 मई, 2016 को पार्टी के नाम से जान से मारने की धमकी देकर केड़ाबीर की एक 15 वर्षीय लड़की से छेड़छाड़ किया व उसके घरवालों को दबाव देकर उठा ले जाने का प्रयास भी किया, लेकिन ग्रामीणों ने खिलाफत करते हुए इनलोगों को भगा दिया। भागते हुए इन लोगों ने पूरे गांव के ग्रामीणों को लाइन में खड़ा करके गोली मारने की धमकी भी दी। इससे जनता काफी डर गई और 8 जून, 2016 को ग्रामीणों ने मिलकर पार्टी के पास रिपोर्ट की।

जनता से रिपोर्ट पाकर उनके राय के अनुसार 9 जून, 2016 को इनलोगों को पकड़ा गया और 5-6 गांवों की जनता के सामने जन अदालत लगायी गयी। जन अदालत में 6 मुजरिम के गलती को दर्शाते हुए जनता के बीच राजनीतिक भंडाफोड़ करते हुए ऐसी गलती न करने का बॉण्ड भरवाकर छोड़ दिया गया।

अपराधियों ने 9 बंदूक के साथ पीएलजीए के पास किया सरेंडर

15 मई, 2016 को लादेन ग्रुप- नाईक, छोडो, मसीह गागराई, पितु सोय, दरगा (ग्राम कुदाबुरु), लगड़ा, नाटी हेम्ब्रम, चामा सोय (ग्राम माशीनबेड़ा) व ग्राम रघुरामडेरा का मुटु, शंकर समेत 12 अपराधियों ने पार्टी के नाम पर सोनुवां प्रखंड अंतर्गत पानसुवां सोमर बाजार में 4 व्यापारियों को बन्दूक दिखाकर 7 लाख रूपये लूट लिया। ग्राम मुण्डरी में बीड़ी पत्ता डिपो से 7 हजार, ग्राम रोगोद से 3 हजार, ग्राम रोवाउली, होडिंगलोर, लमण्डर से 7 हजार, ग्राम नचलदाअः, सोयमारी आदि से भी 7 हजार रूपये करके मांग रहा था, लेकिन यहां रूपये देने से इन्कार कर दिया गया।

इस प्रकार की गलती को देखते हुए आराः सेरेङ एरिया के क्रांतिकारी जनता काफी आक्रोशित हुए और हमारे पार्टी को रिपोर्ट दिए। जनता की रिपोर्ट के अनुसार 9 जून, 2016 को 12 मुजरिमों में से दो मुजरिम को पकड़ा गया और उसे जन अदालत में पेश किया गया, जहां दोनों ने अपने जुर्म को कबूला। जन अदालत ने दोनों को शारीरिक दंड देकर छोड़ दिया। अन्य 10 फरार मुजरिमों के परिवार को उनलोगों को सरेंडर करवाने के लिए पार्टी ने पत्र भेजा, तत्पश्चात् अन्य 10 मुजरिमों ने भी 12 जून, 2016 को जन अदालत में 9 बंदूक के साथ पार्टी और जनता के सामने सरेंडर किया। जन अदालत में पार्टी की ओर से इन तमाम अपराधियों के गलत करतूत को दर्शाते हुए राजनीतिक भण्डाफोड़ किया गया और 'फिर ऐसी गलती करने पर मौत की सजा देने' पर जन अदालत की राय के अनुसार बॉण्ड लिखवाकर छोड़ दिया गया।

पार्टी के निर्देश को धता बताने वाला रोड कंस्ट्रक्शन रामकृष्णा पाल एण्ड सन्स के उपर कार्रवाई

विदित हो कि आज शोषक-शासक वर्ग लूट और दमन को तेज करने हेतु विकास के नाम पर रोड का चौड़ीकरण और मजबूतीकरण का काम तेजी से चलाया जा रहा है। इसी उद्देश्य से सारंडा क्षेत्र में पड़ने वाला सलाई से गुवा तक के रोड को चौड़ीकरण व मजबूत करने का काम रामकृष्णा पाल

कंस्ट्रक्शन एण्ड सन्स के ठेकेदारों द्वारा करवाया जा रहा था। यह रोड जनता के जरूरत के मुताबिक किस तरह का होना चाहिए तथा यहां की सरकार को टैक्स अदा करने संबंधी विषय पर बातचीत फाइनल होने पर ही काम चालू करने की हिदायत दक्षिणी जोनल कमेटी की तरफ से ठेकेदार को दी गई थी। लेकिन ठेकेदार पार्टी के साथ बातचीत न कर चतुराई से अपना काम निकालने के लिए टैक्स के बतौर कुछ रूपये, जो आय के मुताबिक बहुत ही कम थे, बिचौलिए के जरिए भेज दिया और तेजी के साथ रोड का काम करवाकर निकल भागने के प्रयास में था। बातचीत किये बिना काम जारी रखने पर जोनल कमेटी ने पुनः ठेकेदार को काम बंद कर बातचीत फाइनल करने की सूचना भेजी। इसके बावजूद काम बंद नहीं करने पर कमेटी द्वारा उसपर हस्तक्षेप करते हुए काम बंद करवाया गया। तब ठेकेदार खुद न आकर फिर बिचौलिया का काम करने वाला बामियां मांझी को भेजा, जिसने पार्टी के नाम पर कई लाख रूपये भी हड़पा है, उसको कब्जा में रखकर ठेकेदार को बुलाने के बावजूद भी जब नहीं आया तो अंत में 5 जनवरी, 2017 को रात्रि 8 बजे पीएलजीए के साथियों ने बोमियां मांझी को लेकर गया और रोड के काम में लगे जेसीबी, रोड रोलर आदि मशीनों में उसी से आग लगवाकर सब जलाकर राख कर दिया।

एसपीओ सुभाष सोरेन का सफाया

सुभाष सोरेन गांवः रांगामांटी, थानाः सरायकेला, जिलाः सरायकेला खरसावां (झारखंड) का निवासी था। वह लगभग वर्ष 2009-10 से जनविरोधी काम करते आ रहा था तथा पार्टी के नाम से लेवी (रुपया) कलेक्शन करना उसका पेशा बन गया था। इतना ही नहीं कई एक गांवों के बेटी-बहनों की इज्जत भी लूटता था। ये सब कुकर्म वह पुलिस-प्रशासन से जुड़कर करता था। पहले तो वह हमारे पीएलजीए के दस्ता इलाका में घूमता है कि नहीं, इसकी रिपोर्ट उठाकर पुलिस को देता था। उसके अनुसार दुश्मन एलआरपी चलाता था और एसपीओ सुभाष का ग्रुप अपनी लूटपाट को आसानी से अंजाम देता था। इस प्रकार लगभग 15-20 घर को भी लूटा था, इस तरह के घटना से तंग आकर जनता ने साहस जुटाकर सुभाष सोरेन को एक गांव में घेर कर पकड़ा एवं हमारे पीएलजीए के हवाले कर दिया। उसके बाद जन अदालत लगाकर 8 दिसम्बर 2016 को उसका सफाया किया गया।

एसपीओ सुभाष सोरेन को मारने के बाद इलाका की जनता ने राहत की सांस ली। डर के माहौल से जनता मुक्त हो गई और पहले जैसा पुलिस का घूमना-फिरना भी बंद हो गया। इस घटना से देखा गया कि इलाका के गरीब जनता अपना एकजुटता का परिचय दिखाते हुए एसपीओ सुभाष सोरेन को धर दबोचा एवं सफाया किया, इतना ही नहीं इसका पूरा चोर ग्रुप यानी 10-12 आदमी मिलकर इस तरह के घटना को अंजाम दे रहा था, तितर-बितर हो गया एवं इलाका से भाग गया। यही ग्रुप सुरा डैम में जाकर भाकपा (माओवादी) का नाम लेकर मुन्सी को मारपीट कर उसका मोबाइल लूटा था एवं डैम से 40 लाख रु. लेवी मांगा था, पार्टी को बदनाम करने के लिए। इतना ही नहीं खरसावां के एक व्यापारी से 80 हजार रुपया और एक व्यापारी से 50 हजार रूपया बुण्डु-चांडिल सबजोन सचिव के नाम से लिया था। रात को हथियार के साथ अपना दस्ता बनाकर घूमता था एवं जनता के साथ मारपीट, गाली- गलौज करता था।

मुरहु में गाड़ी को जलायी गयी

राजेश अग्रवाल कंस्ट्रक्शन रांची (झारखंड) का है। मुरहु थानान्तर्गत गांव केरा जनुमपिड़ी के समीप एक पुलिया बन रहा था और वहां पुलिस भी थी, अड़की एक्शन प्लान के रोड को जोड़ने के खयाल से उसे बनाया जा रहा था। वह रोड तथा पुलिया बनकर पूरा हो जाने पर अड़की एक्शन प्लान के नाम पर हजारों-हजार हमारे आदिवासी जनता को विस्थापित कर वहां पर कल-कारखाना बनाने का सरकार की योजना है। जनता को जितनी मजदूरी देना चाहिए थी, उसमें भी कटौती कर रहा था एवं 8 घंटा के जगह 10-11 घंटा काम करवाया जाता था एवं काम करने के समय मजदूरों के साथ गाली-गलौज भी किया जाता था। हमारे पीएलजीए दस्ता ने दो बार जाकर मुन्सी को समझाया, फिर भी वैसा ही कर रहा था। तब हमारे संगठन के ग्रामीण जनता को लेकर हमारे पीएलजीए की एक टुकड़ी उस पुल के लगे सभी सामान एवं गाड़ी को आग के हवाले कर दिया यानी जला दिया। जलायी गयी सामान की सूची इस प्रकार है- दो ट्रैक्टर, एक हीरो होण्डा मोटर साईकिल, 4 मिक्चर मशीन, तीन जेनरेटर, 2 पानी मशीन, एवं एक ग्रेंडर मशीन। 26 अक्टूबर, 2016 को यह कार्रवाई की गई थी। इस कार्रवाई का अगल-बगल क्षेत्र में जनता के बीच काफी अच्छा प्रभाव पड़ा। साथ ही साथ अगल-बगल में जो भी काम-काज चल रहा है, उसमें जनता को गाली-गलौज करना एवं 8 घंटा की जगह 10-11 घंटा काम करवाया जाता था, वह कुछ हद तक कम हुआ है और इस तरह की कार्रवाई से दुश्मन कुछ सहम गया है एवं कुछ हद तक इलाका में एलआरपी भी पहले की अपेक्षा कम हुई है।

ओझा एण्ड ब्रदर्स कंस्ट्रक्शन के वाहन को जलाया गया

दिरलांग से लेकर हेसाकोचा गांव होते हुए टुरु तक 14 किलोमीटर तक का रोड बन रहा है। रोड लगभग 7 करोड़ की लागत से बन रहा है। लेकिन यह रोड चाण्डिल प्रखण्ड के अंतर्गत चौका थाना क्षेत्र के पहाड़ी इलाका जहां बिहड़

जंगल के अन्दर हेसाकोचा, रांका, तामिसोया, मुटुदा गांव तक रोड बनाना सरकार की योजना है और उस क्षेत्र में सिर्फ और सिर्फ पिछड़ी हुई गरीब मेहनतकश जनता बसे हुए हैं और झारखंड सरकार की योजना के तहत उस क्षेत्र में भी रोड-रास्ता अच्छा से बनाकर कल-कारखाने बैठाने के लिए वहां की आदिवासी जनता को विस्थापित कर वहां से भगाने की एक सोची-समझी साजिश है। उदहरण के लिए चौका से कांड़ा तक लगभग 10-12 कल-कारखाने खोल चुका है, उससे वहां की जनता हाल बे-हाल हो चुकी है, न ही अच्छा से 30 मिनट तक बाहर बैठ सकते हैं, न ही बाहर में कपड़ा सूखा सकते हैं। कल-कारखानों के कचरा भर जाने के कारण किसान जनता के खेतों में अच्छा से सालभर खाने का फसल तक नहीं उपजते। उस क्षेत्र में हमारे पीएलजीए दस्ता जब पहुंचा, तब तंग-तबाह ग्रामीण जनता भेंटकर शिकायत दर्ज की एवं साथ ही साथ कारवाई करने की भी मांग की। तब हमारे पीएलजीए एवं ग्रामीण जनता ने साथ मिलकर उस रोड में लगे सभी गाड़ियों को आग लगाकर जला दिया। जलायी गयी गाड़ियों की सूची इस प्रकार है: एक रोलर, एक ट्रैक्टर, एक पानी का टंकर, एक मिक्चर मशीन। हमारे पीएलजीए एवं जनता ने साहस के साथ कार्रवाई को अंजाम दिया, जबकि उस दिन घटनास्थल से लगभग 2 किलोमीटर दूरी में सीआरपीएफ की एक कंपनी फोर्स एलआरपी के लिए घुसी हुई थी। इतना ही नहीं हमारे पीएलजीए दस्ता को एम्बुश में फंसाने की मंशा से तीन-चार टुकड़ी में तीनों रोड-रास्ता में एम्बुश बैठा। तब हमारे पीएलजीए दस्ता बड़ी चतुराई से उनके जाल से बाहर निकल गया और दुश्मन रात भर एम्बुश में ही बैठा रहा। इस कार्रवाई से मालिक को बहुत भारी नुकसान हुआ, जिसके चलते काम पूरा बंद हो गया।

सुरा डैम बनाने के विरोध में हमारे पीएलजीए की कार्रवाई

ग्राम हुड़ांगदा, थाना खरसावां अंतर्गत सुरा डैम कुलकर्णी कंस्ट्रक्शन द्वारा निर्माण किया जा रहा था। यह हुड़ांगदा एवं नारायण बेड़ा गांव के बीच में है, इससे लगभग 8-10 गांव डूब रहा है एवं कुल जनसंख्या लगभग 10-12 हजार वहां से विस्थपित हो रही है। इतना ही नहीं उससे भी ज्यादा गांव डुबने की सम्भावना है। जो गांव विस्थापित हो रहे हैं, उस गांव के सभी ग्रामीण जनता डैम को बनने से तीन बार रोकने की कोशिश की। लेकिन जब जनता रोकती है तब काम बंद कर देता है फिर पुन: दो-चार दिन बाद चालू कर देता है। जनता ने जब काफी विरोध किया, तब कुलकर्णी कंस्ट्रक्शन पुलिस-प्रशासन के सहारे काम करवाने लगा यानी जिला हेडक्वार्टर से डैम के काम की देख-रेख के लिए 1 प्लाटून फोर्स हर रोज मोटर साइकिल से आकर ड्यूटी करने लगा। सुबह 8 बजे डैम आता, शाम 4 बजे खरसावां लौट जाता था। कुछ दिन तो ऐसे ही चलते रहा। इसके बाद हुड़ांगदा गांव में ही फोरेस्ट विभाग का एक पुराना घर था, उसी में पुलिस का कैम्प करने के लिए उस घर की मरम्मती करवाया था। 5-6 दिन के अंदर कैम्प लगाता लेकिन वहां की जनता तो पहले से ही विरोध कर रही थी। तब हमारे पीएलजीए की एक टुकड़ी और जनता मिलकर वहां पर बननेवाला पुलिस कैम्प के घर को माईन से विस्फोट कर उड़ा दिया। डैम के काम में लगे जितना भी वाहन उस गांव में रखे हुए थे, सभी गाड़ी को एक-एक करके आग के हवाले कर दिया गया।

इस कार्रवाई से विस्थापित हो रहे उन सभी गांवों की जनता में खुशी की लहर दौड़ गई। डैम बनने का सारा काम एकदम ठप्प हो गया, जिससे हमारे संगठन का उस क्षेत्र में अच्छा प्रभाव पड़ा।

एसपीओ पौलुस भेंगरा का सफाया

एसपीओ पौलुस भेंगरा गांव डोडरो दा, पोस्ट कुचाई, जिला सरायकेला का रहने वाला था। वह एसपीओ का काम 2009-10 से ही करते आ रहा था। इतना ही नहीं, बल्कि अपने रिश्तेदारों को भी लोभ-लालच दिखाकर पुलिस-प्रशासन के पास ले जाकर एसपीओ में शामिल करने का काम उसका एक पेशा बन गया था। इसलिए हर रोज उसको दलभंगा एवं कुचाई कैम्प में घुसकर बातचीत करते प्राय: देखा जा रहा था। इतना ही नहीं अगल-बगल गांव में किसी तरह की कुछ घटना-घटने पर भी जाकर पुलिस को सूचना देता था और कभी-कभी तो संगठन इलाके के अंदन मेहमान बनकर घुस जाता था एवं पूरे इलाके की रिपोर्ट यानी माओवादी पार्टी के दस्ते एवं मीटिंग या फिर कौन-कौन आदमी संगठन को मदद करता है, उसकी रिपोर्ट के आधार पर दुश्मन चारों तरफ घेर कर अभियान चलाता था, 4-5 दिन जंगल के अंदर में रूक जाता था। इतना ही नहीं, अगल-बगल के गांव की जनता को भी डरा-धमकाकर एसपीओ बनने को मजबूर करता था। अगर उसकी बात कोई नहीं मानता या ना नुकुर करने पर उसको पुलिस से मार-पीट करवाता। इस तरह के जन विरोधी काम करने के एवज में पुलिस उसको प्रत्येक महीने 10 हजार देता था और उसको पुलिस-प्रशासन हमारे पीएलजीए दस्ते की सूचना देकर इनकाउण्टर करवाना, नेतृत्व को मरवाने नहीं तो सरेंडर करवाने का जिम्मा देकर रखा था। उसी जिम्मा के तहत उसने 5/5/2013 को यतनी बेड़ा कैम्प में पुलिस को लेकर गया था और हमारे पीएलजीए पर हमला करवाया था। इस हमले में हमारा एक साथी शहीद हुआ था`))एवं दुश्मन एक एसएलआर व गोली समेत कुछ सामान भी ले गया था।

उसके इस संगीन अपराध के लिए सजा-ए-मौत देने के लिए हमारे पीएलजीए के दस्ता ने दलभंगा बाजार के दिन 20 नवंबर, 2016 को शाम चार बजे बाजार से लौटते समय चारों तरफ से घेरकर उसको गोली मारकर मौत के घाट उतारकर अपने शहीद साथी का बदला लिया।

इस कार्रवाई के बाद अगल-बगल के गांव में जिसने भी एसपीओ ज्वाइन किया था, सभी ने छोड़ दिया और जनता भी खुलकर पार्टी का काम करने के लिए आगे आई।

एसपीओ योगेश मिश्रा का सफाया

एसपीओ योगेश मिश्रा थाना खरसावां, जिला सरायकेला खरसावां का रहने वाला था। यह पेशे से एक डॉक्टर था और इसका अस्पताल खरसावां में है। एसपीओ योगेश मिश्रा वर्ष 2009-10 से ही पुलिस-प्रशासन से जुड़कर एसपीओ का काम कर रहा था तथा उसी समय से हमारी पार्टी को नुकसान पहुंचाने के लिए संगठन से भी जुड़ गया। इस बीच में उसने संगठन के इलाके में कई बार अपने अस्पताल का कैम्प भी लगाया। लेकिन जब भी इसने कैम्प लगाया, पुलिस इलाके में घुसी। इतना ही नहीं, जब संगठन के इलाके की जनता इलाज के लिए इसके अस्पताल में जाती तो उससे भी पार्टी के बारे में पूछताछ करता। इससे पार्टी को शक हुआ कि कहीं न कहीं दाल में कुछ काला तो जरूर ही है।

पार्टी ने जब इसके बारे में सूचना एकत्रित की, तो पता चला कि यह पार्टी के बारे में सीधे सरायकेला एसपी इन्द्रजीत मेहता को रिपोर्ट करता है, साथ ही इलाके के तमाम कैम्प व थाने में भी रिपोर्ट देता है। इतना ही नहीं, इसके रिपोर्ट के आधार पर पुलिस एलआरपी करती थी और जनता के साथ मार-पीट भी इसके इशारे पर किया जाता था। साथ ही ये पुलिस को एलआरपी चलाने के लिए अपनी गाड़ी भी देता था और इसके अस्पताल में रोज पुलिस-प्रशासन बैठकर शराब पीता था और आदिवासी लड़कियों को भोगने के लिए पुलिस-प्रशासन को सप्लाई भी करता था। इसके इन कामों के एवज में इसे मोटी रकम मिलती थी। इसने हमारे कई कामरेड को इलाज के बहाने पुलिस को सौंप दिया था। इसने 10 लड़कों को खरसावां में एसपीओ बनाकर रखा था ताकि पार्टी के गतिविधि की तमाम सूचना इसके पास पहुंचती रहे।

14 नवंबर, 2016 को यह एक महिला के साथ संगठन के इलाके में आया था। इसकी सूचना मिलते ही पीएलजीए व जनता ने मिलकर रास्ते में इसके बोलेरो को रोककर इसे उतारा और बोलेरो को आग के हवाले कर दिया गया। इसके बाद इससे पूछताछ करके इसका सफाया कर दिया गया।

इस कार्रवाई से सारे एसपीओ सहम गए और पुलिस-प्रशासन भी सहम गया है। इलाके की जनता इस कार्रवाई के बाद काफी खुश है।

यू जोन की रिपोर्ट
एसपीओ बिरबल मुर्मू का सफाया

गिरिडीह जिला के पीरटांड़ थानान्तर्गत डेगापहाड़ी गांव के बिरबल मुर्मू काफी दिनों से पीरटांड़ पुलिस के लिये काम कर रहा था। पिछले वर्ष यानी 2016 में ही इसके पिता डुमका मुर्मू का सफाया पीएलजीए ने किया था। उसके बाद भी यह नहीं संभला और पार्टी के खिलाफ में इधर-उधर बोलते रहा। पार्टी ने इसे काफी समझाने का प्रयास किया, लेकिन ये समझने के बजाय पीरटांड़ थाना प्रभारी से ताल-मेल रखते हुए पार्टी गतिविधियों की सूचना उन तक पहुंचाते रहा। इसके काम से खुश होकर पुलिस द्वारा होमगार्ड के लिए इसके नाम की सिफारिश की गई थी और 3-4 दिन में होमगार्ड में भर्ती भी होने वाला था।

अंतत: पार्टी ने इसे पकड़कर 4-5 गांवों की जनता के सामने जन अदालत लगाकर इसके कुकर्मों के बारे में जनता को बताया और फिर जन अदालत के आदेश के अनुसार ही 10 फरवरी, 2017 को इसका सफाया किया गया।

कोयल-शंख जोन की रिपोर्ट
गद्दार व कोवर्ट समीर का सफाया

गुमला जिलान्तर्गत पालकोट थाना क्षेत्र में गद्दार व कोवर्ट समीर का सफाया 20 सितम्बर, 2016 को किया गया।

समीर पहले एक महत्वपूर्ण साथी के गार्ड के बतौर काम करता था। लेकिन कुछ दिन से बीजे सैक सदस्य अमर शहीद कामरेड आशीष के साथ सिमडेगा क्षेत्र में था। कामरेड आशीष अपने साथियों के साथ गुमला सबजोन जाएगा, इस बावत पत्र लेकर समीर को ही गुमला सबजोन के साथियों के पास भेजा गया था। समीर ने गुमला सबजोन के साथियों को कामरेड आशीष का पत्र जरूर दिया, लेकिन जवाब कामरेड आशीष के पास न पहुंचाकर पुलिस को पहुंचा दिया। परिणामस्वरूप 11 सितम्बर, 2016 को पुलिस ने अपने मुखबिर, जिसे कोवर्ट बनाकर हमारे पीएलजीए में रखा था यानी कि समीर को, से पुख्ता समाचार पाकर ही कामरेड आशीष की हत्या की। पार्टी ने देर से ही सही इस कोवर्ट की पहचान कर ली, लेकिन तब तक हमें महत्वपूर्ण साथी कामरेड आशीष को खोना पड़ा।

19 सितम्बर को एक मेला से इस गद्दार व कोवर्ट को पकड़ा गया और पूछताछ किया गया। पूछताछ में इसने स्वीकार किया कि कई महत्वपूर्ण साथियों को पकड़वाने का जिम्मा दुश्मन पुलिस ने इसे दिया था, जिसके बदले में संबंधित साथियों पर घोषित इनाम की राशि देने का लोभ दुश्मन ने इसे दिया था। अंतत: 20 सितम्बर, 2016 को इसके जुर्म को देखते हुए इसका सफाया किया गया।

भारतीय क्रांति के शिक्षक और हमारी पार्टी के संस्थापक नेता द्वय

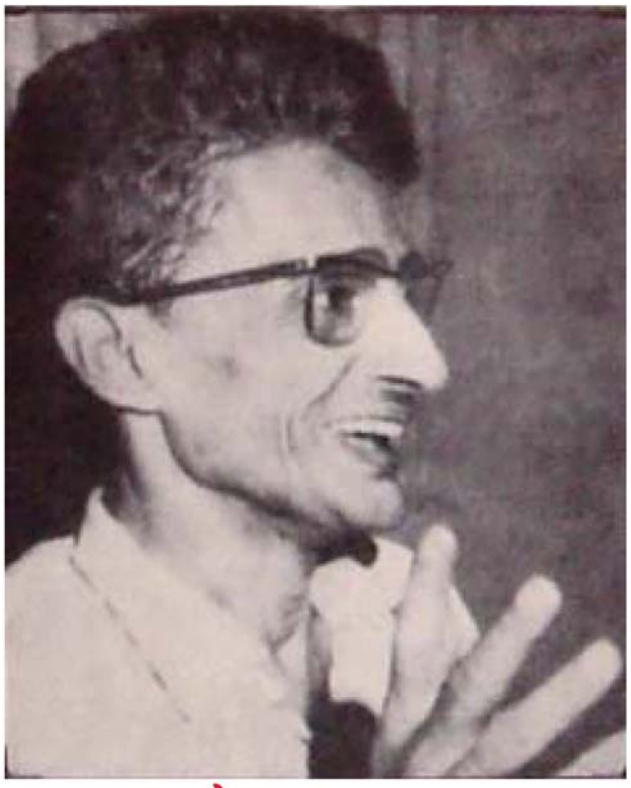

कामरेड चारु मजुमदार

शहादत : 28 जुलाई, 1972

कामरेड कन्हाई चटर्जी

शहादत : 18 जुलाई, 1982

महान नक्सलबाड़ी सशस्त्र विद्रोह की पचासवीं वर्षगांठ को 23 से 29 मई 2017 तक पूरे जोश-खरोश के साथ मनावें!

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)